आरती साहिब सतगुरू जी की

जय सतगुरू देवा – दाता जय सतगुरू देवा
सब कुछ तुम पर अर्पण – २, करूं हर पल सेवा

१ जो ध्यावे सुख पावे, दुख मिटे तन का साहिबा –
वचन सुनत तम नासे – २, सब संशय मन का साहिबा –
२ मात पिता तुम मेरे, शरण पड़ी तुमरे साहिबा –
तुम बिन और ना दूजा – २, आस करूं मैं जिसकी साहिबा –
३ गुरू चरणामृत निर्मल, सब दोषक हारी साहिबा –
सब्द सुनत भ्रम नासे – २, सब बंधन टारे साहिबा –
४ तन मन धन सब अर्पण, गुरू चरणन कीजे साहिबा –
सतगुरू देव परम पद – २, मौक्ष गति लीजे साहिबा –
५ काम क्रौध मद्य लौभ, तृष्णा अति भारी साहिबा –
सुरत सब्द को देकर, सार सब्द को देकर, संत सब संहारें साहिबा –
६ ध्यानी योगी ज्ञानी, सब हरि गुण गावें साहिबा –
सब का सार बता कर – २, संत मार्ग लावें साहिबा –
७ मन माया निज घेरा, जीव बहे सारे साहिबा –
सुरत सब्द को देकर, सुरति जहाज चढ़ा कर, संत पल में तारें साहिबा –
८ संत बिन दान ना होवे, साहिब ब्ख़ान करें साहिबा –
संत बिन ज्ञान ना होवे, संत बिन मौक्ष ना होवे, यत्न बहुत कीने साहिबा –
६ दीन बन्धु दुख हर्ता, तुम रक्षक मेरे साहिबा –
विषय विकार मिटाओ – २, तुम दर्शक मेरे साहिबा –
१० सुरत कमल के दाता, तुम रक्षक मेरे साहिबा –
मौक्ष पद दिलाओ – २ , तुम कर्ता मेरे साहिबा –

जय सतगुरू देवा – दाता जय सतगुरू देवा
सब कुछ तुम पर अर्पण – २, करूं हर पल सेवा

—0—

साहिब सत्तनाम

भजन संग्रह

संस्करण – ३

साहिब सत्तपुरूष जी की महिमां का गुणगान

सत्तपुरूष एक वृक्ष हैं, निरंझन उन के डाल।
तीन देव शाखें भईं, पात्त फूल संसार।।

भजन संग्रह संस्करण ३

क्रमः	संस्करण सारांश	पृष्ठ
१	अमृत सार	१
२	भूमिका	२
३	कर्ता पुरख़	३
४	वे नाम कहत हैं	४
५	अनमोल रत्न	५
६	चौथे राम	६
७	प्रस्तावना	७
८	संदेश	८
९	सहज सत्त मार्ग	९
१०	आत्म बंधन	१०

क्रमः	भजन	भाग	पृष्ठ
१	सतलोक का ज्ञान	१	११
२	सतलोक का ज्ञान	२	१२
३	सतलोक का ज्ञान	३	१३
४	सतलोक का ज्ञान	४	१४
५	सतलोक का ज्ञान	५	१५
६	ना लो सपने कहीं	१	१६
७	ना लो सपने कहीं	२	१७
८	ना लो सपने कहीं	३	१८
९	ना लो सपने कहीं	४	१९
१०	ना लो सपने कहीं	५	२०
११	ना लो सपने कहीं	६	२१
१२	ना लो सपने कहीं	७	२२

क्रमः	भजन		भाग	पृष्ठ
१३	ना लो सपने कहीं		८	२३
१४	जग सोया कंई ज़मानों से		१	२४
१५	जग सोया कंई ज़मानों से		२	२५
१६	जग भूला निजघर प्यारे को		१	२६
१७	जग भूला सुरति सुहागन को		१	२७
१८	ऊंची चढ़ चढ़ पंथ	(संत मीरां जी को समर्पित)	१	२८
१९	जब से तुम बिछड़े	(संत मीरां जी को समर्पित)	२	२९
२०	जब से तुम बिछड़े	(संत मीरां जी को समर्पित)	३	३०
२१	दया करो मोरे सतगुरू	(संत मीरां जी को समर्पित)	४	३१
२२	झूठी माया सब जग अंधा		१	३२
२३	मेरी आत्मां मग्न भई		२	३३
२४	सार दात सुरति ज्ञान सूं		३	३४
२५	बिन पूर्ण सतगुरू सार नाम		४	३५
२६	वे नाम से दात को पाकर		१	३६
२७	मन गया मान गया		१	३७
२८	आते हैं और खो जाते हैं		१	३८
२९	आते हैं और खो जाते हैं		२	३९
३०	आते हैं और खो जाते हैं		३	४०
३१	आते हैं और खो जाते हैं		४	४१
३२	आते हैं और खो जाते हैं		५	४२
३३	आते हैं और खो जाते हैं		६	४३
३४	आते हैं और खो जाते हैं		७	४४
३५	आते हैं और खो जाते हैं		८	४५
३६	आते हैं और खो जाते हैं		९	४६
३७	आते हैं और खो जाते हैं		१०	४७
३८	आते हैं और खो जाते हैं		११	४८
३९	आते हैं और खो जाते हैं		१२	४९
४०	आते हैं और खो जाते हैं		१३	५०

क्रमः	भजन	भाग	पृष्ठ
४१	आते हैं और खो जाते हैं	१४	५१
४२	आते हैं और खो जाते हैं	१५	५२
४३	आते हैं और खो जाते हैं	१६	५३
४४	वे हूं ने आत्म शमां जला कर	१	५४
४५	वे हूं ने मोह माया का मान जला कर	२	५५
४६	वे हूं ने विदेह नाम को पाकर	३	५७
४७	वे हूं ने विदेह नाम को पाकर	४	५८
४८	वे हूं ने विदेह नाम को पाकर	५	५९
४९	वे हूं ने सहज अमृत दात को पाकर	६	६१
५०	वे हूं ने सहज अमृत दात को पाकर	७	६२
५१	वे हूं ने निज को सहज बना कर	८	६३
५२	वे हूं ने साहिब दर्सन पाकर	९	६४
५३	वे हूं ने मन माया त्याग कर	१०	६६
५४	वे हूं ने साहिबन दर्श पाकर	११	६७
५५	वे हूं ने अपनी सुरति जगा कर	१२	६८
५६	वे हूं ने अपनी सुरति जगा कर	१३	७०
५७	वे हूं ने सत सुरति को पाकर	१४	७१
५८	वे हूं ने सत सुरति को पाकर	१५	७२
५९	वे हूं ने सत सुरति को पाकर	१६	७३
६०	वे हूं ने निज की मै मिटा कर	१७	७५
६१	वे हूं ने पारस सुरति पाकर	१८	७६
६२	वे हूं ने मान सरोवर नहा कर	१९	७७
६३	वे हूं ने साहिबन दर्श पाकर	२०	७९
६४	वे हूं ने साहिबन दर्श पाकर	२१	८०
६५	वे हूं ने साहिबन दात को पाकर	२२	८२
६६	वे हूं ने सुरति चुनरिया ओढ़ कर	२३	८३
६७	वे हूं ने मन माया त्याग कर	२४	८४
६८	वे हूं ने सतलोक को पाकर	२५	८६

क्रमः	भजन	भाग	पृष्ठ
६६	वे हूं ने मन को स्थिर	२६	८७
७०	सतपुरूष ने सात सुरति सूं	१	८६
७१	वे नाम ने सुरति निरति ईक कर	१	६०
७२	सार सब्द बिन नांहि निस्तारा	१	६२
७३	गीता का भेद	१	६३
७४	गीता का भेद	२	६४
७५	पायो जी मैने	१	६६
७६	पायो जी मैनें	२	६७
७७	बड़े साहिब जी संत प्यारे	१	६८
७८	बड़े साहिब जी संत प्यारे	२	६६
७६	अपना वतन	१	१००
८०	अपना वतन	२	१०१
८१	साहिब जी महिमां	१	१०२
८२	साहिब जी महिमा	२	१०४
८३	सहज भक्ति त्रिस्वा	१	१०६
८४	सहज भक्ति त्रिस्वा	२	१०७
८५	सहज भक्ति त्रिस्वा	३	१०८
८६	सहज भक्ति त्रिस्वा	४	१०६
८७	सहज भक्ति त्रिस्वा	५	११०
८८	सहज भक्ति त्रिस्वा	६	१११
८६	सहज भक्ति त्रिस्वा	७	११२
६०	सहज भक्ति त्रिस्वा	८	११३
६१	सहज भक्ति त्रिस्वा	६	११४
६२	सहज भक्ति त्रिस्वा	१०	११५
६३	सहज भक्ति त्रिस्वा	११	११६
६४	सहज भक्ति त्रिस्वा	१२	११७
६५	साहिब जी महिमां	१	११८
६६	साहिब जी महिमां	२	१२१
६७	निरलम्भ राम जी महिमां	१	१२३

६८	निरलम्भ राम जी महिमां	२	१२४

साधकों के भजन रूपी श्रद्धा सुमन

भजन साधिका अर्चना जी के

क्रमः	भजन	पृष्ठ
१	पायो जी मैने	११५
२	ईबादत करने दे	११५
३	मेरे साहिबा नहीं हैं दूर	११६
४	तुझ बिन मुझको	११७
५	मोहे साहिब मिलन	११७
६	सांसों की माला	११८
७	ओ मेरे साहिबा	११६
८	मेरे साहिबा मेरे विधाता	११६
६	मेरे तो साहिब सतगुरू	१२०
१०	साहिब जी मैं मेघा	१२१
११	साहिब मेरे तुझ संग	१२२
१२	मैं नादान मैं अन्जान	१२२
१३	ये झूठा संसार	१२३
१४	साहिब तेरे प्रेम से	१२४
१५	साहिब जी तुम जो	१२६
१६	हम तो हंसा सतलोक के	१२७
१७	मेरे साहिब पधारे हैं	१२८
१८	तुझे क्या सुनाऊँ	१२६
१६	सोई पड़ी थी	१३१
२०	तेरा तुझको सौंप के	१३२
२१	मेरे साहिबा ओ मेरे साहिबा	१३३
२२	मेरे गुरू प्यारे	१३४
२३	साहिब मेरे मैं पाऊँ	१३५
२४	साहिब जी बड़ती प्रीत	१३६
२५	साहिब जी तेरे पथ पे	१३७
२६	ख़ाक में मिल जाओगे	१३८

२७	साहिब जी ईन्सान तो	१४०

साधकों के भजन रूपी श्रद्धा सुमन

भजन साधक अश्वनी जी के

क्रमः	भजन	पृष्ठ
२८	इतनी मेहर करना मेरे साहिबा	१४१
२६	तूं पानी में मल मल नहावे	१४२
३०	मैनें अपनी मै को तज कर	१४३
३१	जग भूला निज रूप को	१४४
३२	हे मायाधारी आत्म रे	१४५
३३	जग जीवो प्यारो	१४७
३४	सतगुरू सुरति रंग	१४८
३५	प्रेमी बन कर प्रेम में	१५०
३६	ओ बंदेया तुकि समझ	१५१
३७	महांकाल के पंझे से	१५३
३८	जग मिथ्या ईक झूठा सपना	१५४
३६	सब्द सुरति सूं ध्या ले प्यारे	१५५

अमृत सार

हे जगत की प्यारी जीव आत्माओं,

आप तन और मन नहीं हो, आप सब तो मूलतः साहिब सत्तपुरूष जी के अंश हंसा ही हो । हे हंसो, हम एक ही मूल से आए हैं और उसी मूल में जा समाना ही (मौक्ष) मानव जीवन का मात्र एक लक्षय है । यह महान ग्रंथ सब हंसों के लिए, सब हंसों के द्वारा सुरति सूं लिखा गया और सब हंसों को सुरति से ही समर्पित किया गया है। मूलतः यह ग्रन्थ किसी एक संप्रदाए, मत्त व धर्म का ना हो के सभी जीव आत्माओं के कल्याण हेतु समर्पित है ।आज के इस आधुनिक युग में मानव समाज ने अत्यधिक भौतिक उन्नति तो कर ली, कहने को वह उन्नतशील मानव समाज ही का हिस्सा हो गया । परन्तु आज के समाज में मानव ने अपना संपूर्ण पतन ही कर डाला। भौतिकता की चकाचौंध में, 'मैं' के अहम में स्वार्थी बना मानव सब को संशय भरी दृष्टि् से देखता है। मां बाप और बच्चों के नातों में संशय, भाई बन्धु व मित्र सम्बधियों के नातों में संशय, यहां तक कि अपने जीवन साथी के साथ दिखावे का प्रेम, पर भीतर संशय ही संशय। इस संशय से भरी ज़िन्दगी में प्रेम प्रीत की भावना ही लुप्त हो गई।

यही स्वार्थ व संशय से भरा मानव समाज पूर्ण सत्तगुरू की शरण में आकर भी संशय और अहम को नहीं छोड़ता। अक्सर स्वार्थ सिद्धी करने में ही लगा रहता है तभी तो वह बारम्बार जन्म लेता है पर मौक्ष को नहीं पाता । कोई बिरला ही स्वार्थ रहित होकर संपूर्ण सत्तगुरू की शरण में आकर अपने मूल (मोक्ष) को पाता है। मानव की इस दुख भरी जन्म मरन की अवस्था से ना उभरने के कारण संपूर्ण संत्त समाज चिंतित व व्यथित और उनके उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहता है। जगतमें संशय और स्वार्थ ना छोड़ना ही मानव के कष्टकारी आवागमण का कारण बनता है।

—0—

भूमिका

वे नाम कह रहे हैं, जो दात मैं जग जीवों को दे रहा हूं, इसे सार सब्द के नाम से जाना जाता है । संतों ने इस दात को सार सब्द, अक्का सब्द, विदेह नाम व मूल नाम से भी सम्बोधित किया है । सत्तपुरूष जी ने दास के तीन बार निजधाम जाने के बाद पहला सार सब्द सुरति से उत्पन्न व प्रदान किया । जो मेरे सतगुरू के दिए हुए सब्द से सर्वथा भिन्न है । दास की पहली निजधाम यात्रा के समय स्वंय सतपुरूष जी व चार महां संतों, साहिब कबीर जी, बाबा नानक जी, साहिब रवि दास जी और संत मीरां बाई जी ने मुझ आत्मिक शरीर 'हंसा' को अत्यंत ऊर्जा प्रदान की ।

निजधाम पहुंचने पर पहला संदेश जो सतपुरूष जी ने दिया कि किसी को भी जग में बुरा मत कहना । इस बीच में लगातार साहिब सतपुरूष जी से सुरति सूं गोष्ट्ठियां होती रहीं जिनमें वो सतपुरूष सत्ता का ज्ञान और जीव आत्मांओं को जगाने हेतु दास को प्रेरित करते रहे । दूसरे दिन प्रातः लगभग तीन बजे से कुछ पहले का समय था, सतपुरूष जी दास की कुटिया में प्रकट हुए और सुरति में ही पूछा कि क्या आप बुल्ले का कथन, ''रब दा कि पाना, ऐदरूं पुटना ते इधर लाना'' को समझते हो । मैनें बड़े श्रद्धा भाव युक्त हो के सुरति में कहा, बाहर की दौड़ छोड़ के अंदर की ओर जाना ही अपने प्रीयतम को पाना है। वह आनंदित मुद्रा में मन्द मन्द मुस्कान लिए हुए सतज्ञान समझाने उपरान्त अदृष्य हो गये।

तीसरे दिन तीन बजने को कुछ समय बाकी था, अभी बस मैं उठने ही वाला था, तभी सतपुरूष जी कुटिया में प्रकट हुए, एक अदभुत प्रकाशमयी आभायुक्त रोशनी से सारी कुटिया ज्योतिमय हो गई । सतपुरूष जी आलोकिक प्रकाशमयी आभायुक्त सुरति सूं सार सब्द उच्चारण करते हुए अदृष्य हो गये, यह सारी घटना दास के लेटे लेटे जाग्रत अवस्था में ही घटी। उनके दर्शन उपरांत उसी पल में उठ बैठा, सुरति से इस सार सब्द को ग्रहण किया। यह अदभुत और अनोखी अवर्णित घटना इस से पहले कभी नहीं घटी । ज्यादातर संतों के पास उनके सतगुरू का दिया हुआ ही सब्द होता है, सतपुरूष जी से सर्व प्रथम सार सब्द साहिब कबीर जी को ही मिला था। इस दास को ही केवल दो बार सार सब्द सीधे सतपुरूष जी से मिला ।

यह ग्रंथ सतपुरूष जी की देन है, उसी को ही कलमबद्ध किया गया है। सतपुरूष जी के द्वारा बार बार प्रेरित करने पर तथा उन्हीं के आदेश से दास जग जीवों को जगाने और सतपुरूष सत्ता की महिमां का बखान कर रहा है। ये ग्‌ददी भी शुरू करने का आदेश और प्रेरणा सतपुरूष जी ने ही प्रदान की ।

कर्ता पुरख

'' ना मैं कर्त्ता – ना कोई कर्त्ता
जो किया साहिब किया – सोहि कारणहार
हम तो केवल दास हैं – साहिब ही तारनहार
जो कुछ करें – उनकी मोज है
जो भी होता – सब अच्छा होत है
साहिब ही करन – करावनहार
हम तो केवल दासा – उनके सेवादार
वो ही तारनहार – करावे भव से पार
वे नाम भी तो – उन्हीं का नाम है
उन्हीं से कर लो प्यार – उन्हीं से कर लो प्यार''

—0—

वे नाम कहत है :–

1 लिखावनहार कोई और है,
वे नाम है दास–दीन।
सतपुरूष सूं अमृत जब बरसे,
लेखनी बने हदीम ।।

2 करन करावनहार सतपुरूष हैं,
दास सतपुरूष आगे अधीन ।
वे नाम को सब कुछ सौंप कर,
परमहंस की महिमां दीन ।।

3 हम सब हंसा अमरपुर वृक्ष सूं आए,
निरंझन जिनके ढाल ।
सब हंसा पात फूल उस वृक्ष के,
खुशबू देना भूल निज काम ।।

4 वे नाम आया सतलोक सूं,
हर एक को दे पुकार ।
आओ चलें सतलोक को,
वे नाम देत पुकार ।।

–0–

अनमोल रतन

जा को सार सब्द दात मिल जाई।
काागा पलट हंसा बन जाई ।।

वे नाम ने सतपुरूष सूं दात है पाई,
जाके बल आत्म हंसा बन जाई।
ये मूल नाम सार सब्द कहाई,
लिखा ना जाई पड़ा ना जाई।
अक्का नाम वह दात कहलाई,
जाके बल हंसा निजघर जाई।
ता से पूर्ण मोक्ष हंसा पा जाई,
जन्म मरन की कैद मिट जाई।
बहुरि हंसा गर्भ वासा ना पाई,
सब हंसा संग रास रचाई।
अमर लोक बिन धरती पानी वासा पाई,
हर पल साहिब के दर्शन पाई।
यत्न सूं कोई ये दात ना पाई,
बिन सतगुरू कोई नांहि पाई ।

जा को सार सब्द दात मिल जाई।
कागा पलट हंसा बन जाई ।।

—0—

चोथे राम (सतपुरूष जी)

1 प्यारो सतपुरूष, चोथे राम दा की पाना ।
सार नाम मन सूं पुटना, सुरति में लाना।।

2 सार नाम सूं बड़, तारे लाखों जीव।
आत्म सूं हंसा करे, ले चले भव सागर तीर।
सतगुरू पास दात है आती, तारे तीन लोक सूं जीव।
आवागमन चक्र छूटे, पल में पावे पीव।।

3 सार नाम (सब्द) स्वाति बूंद सूं, जानों अति महान।
सीप स्वाति बूंद को, मोती करती।
सार नाम सूं सतपुरूष, करें आप समान।
छिन पल में संग ले चले, निजघर निजधाम।।

4 साहिब (चौथे राम) व्यापक, हर वस्तु समाना।
बिन प्रेम, ना मिले प्रमाणा।
जब ही प्रेम, सुरति में जागे।
हर स्थान हर जीव में, इक वह ही लागे।।

—0—

–प्रस्तावना–

✍ आध्यात्म की दुनियां, जब से सृष्टि् बनी है तभी से जिज्ञासु–जन इस दुनियां को जानने को उत्सुक हैं, वह दुनियां जिसे हम आध्यात्म या रूहानियत, जो सृष्टि्– रचियता को जानने की जिज्ञासा, उस रचियता को मानने या ना मानने वाले दोनों के कोतूहल का विषय रही । इतनी ढेर सारी मान्यतांए, धर्म रहनुमाओं, अवतारों, पैग़म्बरों जिनका वर्णन अलग–अलग धर्म–ग्रन्थों,शास्त्रों,उपनिषदों में असंख्य गिनती में विद्य्मान है, यह सारे आराध्य एक सीमा तक (निराकार–भगवान) की त्रिलोकि तक सीमित हैं । मगर हमारे संत सतगुरू 'श्री वे नाम जी' व अनेक संतों ने जिनमें संत कबीर साहिब जी, संत रविदास जी, संत दादू दयाल जी, संत पल्टु साहिब जी, संत दरिया साहिब जी, संत तुलसीदास हाथरस जी, संत ब्रह्मांनंद जी, संत मीरांबाई जी, बाबा नानक जी और वर्तमान के संत मधु साहिब जी आदि संतों ने उस परमपिता परमेश्वर को जिसे साहिब नाम से सम्बोधित किया, को इस निराकार की सीमा से उपर बताया है, जैसे कि सभी धर्मों के ग्रन्थ व पुस्तकें एकमत हैं कि ईश्वर एक है (गाड इज़ वन) और संतों अनुसार वो मालिक, ईश्वर, निराकार की सत्ता से अलग, मौक्ष–दाता, साहिब, परमपुरूष या सत्तपुरूष नाम से सम्बोधित किए गये । निराकार की भक्ति करने तक स्वर्ग (कुछ काल तक मुक्ति) और फिर जीवन, जबकि साहिब भक्ति से पूर्ण मुक्ति अर्थात मौक्ष (गर्भ से सदा सदा के लिए छुटकारा) मिलता है। सहज सतमार्ग में सतगुरू की महिमां अपरम्पार है, साधक सतगुरू कृपा द्वारा ही मन माया को तज कर परमहंस की अवस्था को प्राप्त होता है। इसी कारण साहिब 'श्री वे नाम परमहंस जी' ने निज अनुभव द्वारा कलमबद्ध किये गये सभी भजनों और ग्रंथों को अपने सतगुरू 'श्री मधु जी' के चरणों में समर्पित किया है।

संत सतगुरू 'श्री वे नाम जी' उन्हीं साहिब सतपुरूष जी की महिमां का गुणगान व प्रचार करते हैं। सतगुरू जी ने आध्यात्मिक व रूहानी सफ़रनामों के अनुभवों को भजनों के रूप में अपने 'साहिब सत्तपुरूष महिमां' के प्रथम एवम द्वित्य भजन संस्करणों में कलम बद्ध तो किया ही था, परन्तु इसके बाद के अनेकों अनुभवों और साहिब सत्तपुरूष सत्ता की महिमां और दात का वर्णन जिससे कि रूहानियत के प्रति जागरूक व इच्छुक जिज्ञासु जन इसका भरपूर लाभ उठा कर मौक्ष को प्राप्त हो सकें, इसका पूरा सारांश उन्होंने अपने इस ''साहिब सत्तपुरूष महिमां'' के तृत्य भजन संस्करण में भी 'साहिब सतपुरूष जी' की सुरति द्वारा बड़ा अदभुद वर्णन किया है, ताकि सम्पूर्ण मानव समाज इन भजनों को पढ़ के साहिब महिमां को समझे, जाने और जन्म मरण के बंधन से मुक्त होके पूर्ण मौक्ष को प्राप्त हो सके।

—0—

संदेश

हम सब एक परम पुरूष, साहिब के लोक से आये।
हंसा रूप हमारा, सत्तलोक के वासी ।।
काल जाल के वश में पड़ कर, भूल गये अविनाषी।
यह है काल जाल का फंदा, काटे कोई परमहंस प्यारा।
सार सब्द की सुरति देकर, सब को करे न्यारा।
सुरति से हो आत्म चेतन, तभी कटे ये बंधन सारा।
बंधन छूटे निजघर जाये, बन जाये हंस प्यारा।
परमहंस की शरणी आकर, पावे परमपुरूष प्यारा।
यही है परम मुक्ति पद, सार नाम रस सारा।
पर कोई कोई ये पावे, सतगुरू का प्यारा।
तूं तो निजधाम सतलोक, बेग़मपुर का वासी था।
मूल सुरति रूप तेरा, हंसा रूप निराला।
काल जाल में आकर फंस गया, और फिरे बेहाल ।
तीन पाँच पच्चिस का पिंझरा, जहां पर पड़ा वश काल।
चल हंसा सत्तलोक, छोड़ ये संसारा।
मिल पूर्ण सतगुरू सूं पाओ, हंसा रूप न्यारा।
जहां जाये फिर ना आये, मुक्त देस हमारा।
वो ही निजघर मुक्ति देस, बेग़म पुर प्यारा।
ग्याहरवें द्वार अष्ट्म चक्र से, जब हों प्राण निकासा।
सतगुरू संग परमपुरूष के लोक, पल में जा समाता।
बहुरि ना भवसागर आता, सुरति में जा समाता।
फिर वह मोती भौग लगाता, गर्भ कबहु ना आता।
हंस बन हंसों के संग संग, परमानंद पा जाता।
हम सब एक परम पुरूष, साहिब के लोक से आये।
हंसा रूप हमारा, सत्तलोक के हम वासी सारे ।।

संदेश वाहक

परमहंस सतगुरू श्री वे हूं जी
सहज सतमार्ग

१ सहज सहज सब कहत हैं, सहज ना जाने कोए।
सहज से आत्म आई है, सहज कहावे सोए।
सहज सतगुरू जिन सहज से, सहज बीज पाया होए।
मूल सब्द से सहज बनो, सहज से मिलना होए।
सहज स्वांस है, सहज में बहता सोए।
सहज को पकड़ो, सहज बन जाओ।
सहज में सहज कहावे, साहिबन सोए।।

२ सगुण में अटके ज्ञानी, निर्गुण में भटके ध्यानी।
मध्य में सुन ली अनहद वाणी।
यह सब सतगुरू देत हैं, अमृत सब्द सुरति वाणी।।

३ सहज का बीज साहिब कबीर महान, स्वांसा सुरति 'वे नाम'।
दोनों मिल महां बीज हैं, साहिबन नाम मूल नाम।।

४ सतगुरू मिला तो सब मिला, खुल गया कुल्फ़ कवाड़ा।
पूर्ण सतगुरू कृपा सूं, पायो साहिबन प्यारा।।

५ जात धर्म से उपर है, सर्वोपरि सतगुरू नाम।
साहिबन का कैसा नाम, वे नाम ही साहिबन जान।।

६ सतगुरू बड़े साहिब से, प्यारे मत सोच विचार।
साहिब सिमरे सो वार है, सतगुरू सिमरे सो पार।।

—0—

आत्म बंधन (कुल्फ़ कवाड़ा)

१ औंकार का कुल्फ़ कवाड़ा, जीवों को लगता बड़ा प्यारा।
यह भेद पूर्ण संत जानत हैं, होते जो साहिबन प्यारे।
सुरति आत्म बंध पड़ी हृदय में, लाखों जन्म से प्यारो।
आत्म परमात्म नहीं प्यारो, यह तो सतपुरूष का अंश प्यारा।
सार सब्द है कुँझी कुल्फ़ की, पूर्ण संत इसका रखवारा।
लाखों जन्म का बंधन टूटे, जब खुले कुल्फ़ कवाड़ा।
मन औंकार काल निरंझन एको, जिस दियो कुल्फ़ कवाड़ा।
सत्तपुरूष का अंश है आत्म, जाने पूर्ण सतगुरू प्यारा।
जब कोई पाता दात पारस सुरति की, खुलता कुल्फ़ कवाड़ा।
यह कार्य पूर्ण सतगुरू करता, होता जो साहिबन प्यारा।
साधक को झुकना जब आता, पल में खुल जाता कुल्फ़ कवाड़ा।
सुरति निरति मूल सब्द से, आत्म से बने हंसा प्यारी।
आत्म के सब बंधन टूटे, साधक गुरू संग पावे निजघर प्यारा।
अब टूटा औंकार का कुल्फ़ कवाड़ा, जब मिला सतगुरू प्यारा।
ये भेद 'वे नाम जी' देते हैं, जिन पायो साहिबन प्यारा।।

२ आत्म अंश साहिबन की, ताला औंकार का जाने संत प्यारा।
ताला औंकार रूपी मन का, घट में बंध आत्म सुरति प्यारो।
सार सब्द कुँझी ताले की, खोले कोई पूर्ण संत प्यारा।
सुरति छूटे सब्द ईक करे निरति से, ऐसा सब्द हमारा।
आत्म से सब्द करे हंसा, 'वे नाम सब्द' साहिबन प्यारा।

—0—

भजन – १ (भाग १)

सतलोक का ज्ञान सभी जन को – बतला दिया साहिब प्यारे ने – २
जो जाग गया सो पाएगा – सतगुरू ही पार लगाएगा – २

१ वे नाम का यही बस कहना है – सतगुरू सुरति में रहना है –
हर पल तुम इतना ध्यान करो – सार नाम में सुरति आन धरो – २
वह इसी सब्द में रहती है – तेरे सोए भाग जगाते हैं – २ सतलोक
२ सेवा स्मिरन पर ध्यान धरो – फल की ईच्छा बिन काम करो – २
सुरति में भक्ति भूलो ना – मन तृष्णा पर मत ध्यान धरो – २
ये भेद दिया कृष्ण प्यारे ने – गीता ज्ञान सुनावन हारे ने – २ सतलोक
३ तीन लोक में मन ही राज करे – चौथे लोक में साहिबन वास करे – २
ये मृत्यु लोक ईक धोखा है – दुख दर्द काल क्लेशा है – २
श्री कृष्ण भी भेद ये देते हैं – पूर्ण मोक्ष का संकेत भी दे देते हैं – २ सतलोक
४ बिन परख के मत विशवास करो – अमर सब्द पर सुरति आन धरो – २
अब आस परख विशवास भरे – फिर ही सतगुरू की परख मिले – २
ये भेद दिया बंसरी वाले ने – गीता ज्ञान देवन हारे ने – २ सतलोक
५ तुम सतगुरू भक्ति सुबह शाम करो – सार नाम में सुरति प्राण धरो – २
सतगुरू दर्शन से चेतन आत्म हो – सुख दुख में मत तुम भेद करो – २
ये भेद दिया वे नाम प्यारे ने – सतलोक के जाननहारे ने – २ सतलोक
६ अमरपुर हंसों का प्यारा है – काल जाल सूं लेना छुटकारा है – २
वहां साहिब सुरति का राज चले – यहां मन का जाल पसारा है – २
ये भेद वे नाम जी देते हैं – सतलोक राह पर लेते हैं – २ सतलोक
७ कोई भेद परख बिन मिलता ना – निज की केवल पहचान करो – २
जो दिखता है वो होता ना – जो होता है निज ज्ञान तेरा – २
सतगुरू में साहिबन वासा है – सार सब्द सूं ही प्रमाण मिले – २ सतलोक

सतलोक का ज्ञान सभी जन को – बतला दिया साहिब प्यारे ने – २
जो जाग गया सो पाएगा – सतगुरू ही पार लगाएगा – २

–0–

भजन – २ (भाग २)

सतलोक का ज्ञान सभी जन को – बतला दिया साहिब प्यारे ने – २
जो जाग गया सो पाएगा – सतगुरू ही पार लगाएगा – २

१ रोग तो भौग का कारन है – कारण सूं ही प्रमाण मिले – २
आशा तृष्णा में जीने से – दुख दर्द बाण समान मिले – २
ये भेद दिया वे नाम प्यारे ने – गीता के जानन हारे ने – २ सतलोक
२ कांटों पर जब भी हाथ पड़े – उसी सूं हाथों को दर्द मिले – २
अब कांटों की पहचान हुई – निज भूल की भी पहचान मिली – २
ये भेद दिया वे नाम प्यारे ने – सतलोक के जानन हारे ने – २ सतलोक
३ आत्म ज्ञान बिन काल जाल ना छूट सके – सच्चे सतगुरू की पहचान करो –
सुरति निरति के मिलने से – आत्म हंसा का भेद मिले – २
ये भेद दिया वे नाम प्यारे ने – सतलोक के जानन हारे ने – २ सतलोक
४ हित अनहित पशु पक्षी भी जानत हैं – आत्म उनके सब काम करे – २
किसी जीव को कमतर मत जानो – उसमें भी आत्म वास करे – २
ये भेद दिया वे हूं प्यारे ने – सतलोक के जानन हारे ने – २ सतलोक
५ ईड़ा तेरा बांया स्वर प्यारे – और पिंगला दायां स्वर तेरा – २
जब दोनों बंद हो जाते हैं – सुशमिन पल में खुल जाती है – २
ये भेद दिया गधे भाई प्यारे ने – सतलोक के जानन हारे ने – २ सतलोक
६ बाहिर का पट बंद होते ही – अंदर का पट खुल जाता है – २
मन का संग अब छूट गया – आत्म हंसा बन जाती है – २
ये भेद वे हूं जी देते हैं – निज संग निज घर ले लेते हैं – २ सतलोक
७ आत्म अनुभव अनमोल रत्न – अब मन भी दास बन जाता है – २
आत्म में आंखें जाग गईं – मूल सुरति आत्म अंग बने – २
ये भेद वे नाम जी देते हैं – निज संग निज घर ले लेते हैं – २ सतलोक

सतलोक का ज्ञान सभी जन को – बतला दिया साहिब प्यारे ने – २
जो जाग गया सो पाएगा – सतगुरू ही पार लगाएगा – २

–0–

भजन – ३ (भाग ३)

सतलोक का ज्ञान सभी जन को – बतला दिया साहिब प्यारे ने – २
जो जाग गया सो पाएगा – सतगुरू ही पार लगाएगा – २

१ नव जात शिशु सम हो जाओ – निज को पूर्ण तुम पा जाओ – २
इस सार सब्द पर सुरति हो – सतगुरू ही कर्ता जान रहो – २
ये सुरति पार लगाती है – हंसा कर घर ले जाती है – २ सतलोक
२ अब चित्त ने दासा पन धारा – आत्म को हंसा रूप मिला – २
अब कोई बाधा आत्म संग नहीं – सुरति प्राण सरस्वति रूप मिला – २
ये भेद वे नाम जी देते हैं – निज संग निज घर ले लेते हैं – २ सतलोक
३ इस पल में जीना आ गया – समय काल का सारा भेद गया – २
उल्टा जाप सुरति संग चल पड़ा – निज की पहचान का भेद मिला – २
ये भेद दिया सतगुरू प्यारे ने – सतलोक के जानन हारे ने – २ सतलोक
४ उल्टि सुरति जब हो गई – इस तन का संग अब छूट गया – २
अब जीवित मरना हो गया – आत्म को सतगुरू संग मिला – २
ये भेद दिया वे नाम प्यारे ने – सतलोक के जानन हारे ने – २ सतलोक
५ सुरत कमल में वासा हो गया – तन छूटा हंसा रूप मिला – २
सतगुरू चरण गए साहिबन संग मिला – मौक्ष पद का भेद तत्काल मिला – २
ये भेद वे नाम जी देते हैं – सतपुरूष सूं मेल कराते हैं – २ सतलोक
६ सौलहं सूर्य की जौत मिल जाती है – महा सुन्न सूं पार कराती है – २
अब हंसा निज को सतलोक में पाता है – सब हंसों से मेल हो जाता है – २
ये भेद वे नाम जी देते हैं – निज संग निज घर ले लेते हैं– २ सतलोक
७ कोई बिन सतगुरू पा ना सके – कौटिन क्युं ना ध्यान धरे – २
गुरू रूप में वो तो रहते हैं – तुझको वो आन जगाते हैं – २
ये भेद वे नाम जी देते हैं – सतगुरू ही पार लगाते हैं – २ सतलोक

सतलोक का ज्ञान सभी जन को – बतला दिया साहिब प्यारे ने – २
जो जाग गया सो पाएगा – सतगुरू ही पार लगाएगा – २

–0–

भजन – ४ (भाग ४)

सतलोक ज्ञान सभी जग को, बतला दिया साहिबन प्यारे ने – २
जो जागेगा सो पाएगा, निज संग निजघर ले जाएगा – २

१ प्रेम पथ अति कठिन है भाई, बिन सतगुरू बने ना बात – २
जब अमृत सब्द की दात मिले, मन टूटे पल छिन आन – २
ये भेद वे हूं जी देते हैं, निज संग निजघर ले लेते हैं – २
जो जाग गया सो पाएगा, सतगुरू संग निजघर जाएगा – २
२ अस्थिर ये तीनों लोक काल के, बने मिटे कईं बार – २
काम क्रौध लोभ सूं मन है, कैसे ना उतरे ना पार – २
ये भेद वे नाम जी देते हैं निजघर निज संग ले लेते हैं – २
३ अमृत सब्द में साहिबन वासा है, अनुभव सूं उपझे विशवास – २
कोई प्यारा सतगुरू पाता है, उसके खुल जावें भाग – २
ये भेद वे नाम जी देते हैं –– सतलोक ज्ञान ––
४ सागर तट पर हर पल एकर तूं, सर्दी गर्मी सूं पार – २
सार सब्द सूं दुख सुख भेद ना दिखता, अमृत सब्द जान महान – २
ये भेद वे हूं जी देते हैं, सार सब्द का देते ज्ञान – २
सतलोक ज्ञान –– जो जाग गया ––
५ सार नाम पकड़ो सुरति सूं, फूटे गगरी मोह काम क्रौध – २
पारस सब्द दात पास तेरे, जब तीन लोक सूं पार – २
हंसा रूप सार नाम करे, ले चले अमर संग साथ – २
सतलोक ज्ञान –– जो जाग गया ––
६ मन चीन्हे राखे एको ठाई, जीवन मरन हो जाई – २
नाम पाए प्रीति लग जाए, आवागमण छुट जाए – २
ये भेद वे हूं जी देते हैं, निज संग निजघर ले लेते हैं – २

सतलोक ज्ञान सभी जग को, बतला दिया साहिबन प्यारे ने – २
जो जागेगा सो पाएगा, निज संग निजघर ले जाएगा – २

–0–

भजन – ५ (भाग ५)

सतलोक ज्ञान सभी जग को, बतला दिया साहिबन प्यारे ने – २
जो जागेगा सो पाएगा, निज संग निजघर ले जाएगा – २

१ कोई कोई आत्म सब्द विचारे, पूर्ण सतगुरू करें जहाज – २
सार सब्द सुरति में डले, छूटे कर्म काण्ड झंझाल – २
हंसा बन सुख सागर पहुंचे, सतगुरू संग निजधाम – २
ये भेद दिया सतगुरू प्यारे ने, गीता के जानन हारे ने – २
सतलोक ज्ञान –– जो जाग गया ––

२ ब्रह्मा विष्णु महेशवर देवा, पड़े कर्म के भेस – २
युगन युगन आई साहिब जगायो, दिया सार सब्द उपदेश – २
ये भेद दिया वे हूं जी प्यारे ने, निजधाम के जानन हारे ने – २
सतलोक ज्ञान –– जो जाग गया ––

३ शिव देवी देव और नारद जी, पड़े कर्म जाल क्लेश – २
भरम छोड़े बिन सब्द ना लागे, फिर कैसे प्रेम रस भागे – २
ये भेद दिया वे नाम जी प्यारे ने , निजघर निज संग ले जाएगा – २
सतलोक ज्ञान –– जो जागे गा ––

४ मन चीन्हे राखे एको ठाई, जीवन मरन हो जाई – २
नाम पाए प्रीति लग जाए, आवागमण छुट जाए – २
ये भेद वे हूं जी देते हैं, निज संग निजघर ले लेते हैं – २
सतलोक ज्ञान –– जो जागे गा ––

५ मन जाने बिन पार हो कैसे, गुरू चरणन ध्यान लग जाए – २
मन चट्टान तुम एक सम जानो, डटानेटर करे सब काम कर जाई – २
ये भेद वे हूं जी देते हैं, निज संग निजघर ले लेते हैं – २
सतलोक ज्ञान –– जो जागे गा ––

सतलोक ज्ञान सभी जग को, बतला दिया साहिबन प्यारे ने – २
जो जागेगा सो पाएगा, निज संग निजघर ले जाएगा – २

–0–

भजन – ६ (भाग १)

ना लो सपने–२ कहीं सपनों से प्रेम की ज्योत जगती है –२
पर अमृत दात पाने से, निज की पहचान होती है –– ना लो सपने ––

१ अकड़ छूटे तो संग उसका, मान छूटे तो प्रकटेगा
विचारों का जाल संग तेरे, आशाओं के पहाड़ संग तेरे
ये कचरा मान का तेरे, प्रेम प्यास ना संग तेरे – ना लो सपने –
२ अग्नि धुआं तब देती, जब जल के कण हैं लकड़ी में
जल रहित जो लकड़ी हो, धुआं उठता ना लकड़ी में
तुम में होमें का धुआं है, पड़ी आत्म मन झकड़न में – ना लो सपने –
३ तुम खाली नहीं होते, साहिबन संग में मिलते ना
विरह का बाण नहीं छेदता, धीरता सुरति को मिलती ना
साहिब अंदर बाहर हैं तेरे, खाली पन तुझमें मिलता ना – ना लो सपने –
४ सोना विजाती से सोना है, विजाती जले तो निखरे तां
मूल नाम सूं जले कचरा, आत्म शुद्धि हो निखरे तां
सार सुरति ही दीपक है, कचरा जले तो शुद्धि है – ना लो सपने –
५ मोह प्रेम नहीं होता, यही तो कारण है बंधन का
पकड़ मोह की जब छोड़ो, रिश्ते नातों का बंधन ना
इसे प्रेम मत जानों, प्रेम तो सार भक्ति का – ना लो सपने –
६ प्रेम को पाप मत कहना, इसे हम साथ लाऐ हैं
प्रेम भक्ति का मर्म है, विरह विराग सूं आता है
प्रेम भक्ति झरोखा है, संतन संग सूं खुलता है – ना लो सपने –
७ मोह है कारण बंधन का, जिसने हर प्राणी बांधा है
मोह की पकड़ तुम छोड़ो, मूल नाम सूं छूटेगा
मोह है तो प्रेम ना हो, मोह छोड़े तो प्रेम प्रकटेगा – ना लो सपने –

ना लो सपने–2 कहीं सपनों से प्रेम की ज्योत जगती है –२
पर अमृत दात पाने से, निज की पहचान होती है –– ना लो सपने

–0–

भजन – ७ (भाग २)

ना लो सपने–2 कहीं सपनों से प्रेम की ज्योत जगती है –२
पर अमृत दात पाने से, निज की पहचान होती है –– ना लो सपने

१ जिसे तुम पुकार देते हो, उसी के बीच बैठे हो
जो मोह बंधन तोड़ नहीं सकता, उसे ना देख पाते हो
जब बंधन टूट जाते हैं, उसे पास सूं भी पास पाते हो – ना लो सपने –
२ जब सतगुरू सुरति गति चंद्रमा, साधक नैन चकौरी हों
आठों पहर निरखते रहें, सतगुरू चरणन सुरति सूं
उसे बिन पकड़ के जानो, ध्याओ संत ही को सुरति में – ना लो सपने –
३ वैराग सूं प्रेम जगता है, प्रेम झुकना सिखाता है
झुकना ही तेरी पूजा, संत प्रथा में ले लेती है
सुन्न एंकात सूं सुरति, छे तन पार कराती है – ना लो सपने –
४ सतगुरू सूं बात बनती है, सब्द संग सूं प्यास जगती है
आत्म हंसा बनती है, सतगुरू का संग पाती है
विषय विकार छूट जाते हैं, निज की पहचान होती है – ना लो सपने –
५ अब तीनों एक ही जानो, सुरति सूं बात होती है
जग छूटा तरंगों का, बंधन टूटा मन माया का
अब मोह के घर क्यों रहना, कौस भर गांव अपना है – ना लो सपने –
6 सदा निजधाम की ऋतु, बसंत हर पल रहती है
पतझड़ देखा नहीं हमने, फिर इसकी बात क्या कहना
जो अंदर है वही जीवन, सत की धारा में बहता है – ना लो सपने –

ना लो सपने–2 कहीं सपनों से प्रेम की ज्योत जगती है –२
पर अमृत दात पाने से, निज की पहचान होती है –– ना लो सपने

–0–

भजन – ८ (भाग ३)

ना लो सपने–२ कहीं सपनों से प्रेम की ज्योत जगती है –२
पर अमृत दात पाने से, निज की पहचान होती है – ना लो सपने

१ तुम निज दीप बन देखो, अमर जोत बन जाती है
तुम प्रेम की जोत बनते हो, सागर शांत होता है
प्रेम ही चेतन सुरति है, सुरति सूं पार हो जाते हो – ना लो सपने –
२ तूफां शांत होते हैं, हर ओर सुन्न छा जाता
सतगुरू चारों ओर होते हैं, सुरति में वास करते हैं
सुरत कमल में वास होता है, साहिबन के संग रहते हो – ना लो सपने –
३ काल जाल कटता है, विहंगम चाल मिलती है
अब तुम जीत गये बाजी, मन माया सूं संग छुट जाता है
खोया सब पा लिया जाता, जन्म मरन बंधन छुट जाते हैं – ना लो सपने –
४ सतगुरू सूं बात बनती है, सत्संग में प्यास जगती है
विषय विकार छूट जाते हैं, विरह की आग जलती है
अब दोनों एक होते हैं, प्रेम की जोत जगती है – ना लो सपने –
५ जग छूटा तरंगों का, बंधन टूटा मन माया का
अब माटी के घर क्युं रहना, कौस पर गांव अपना है
वहां परमहंसों का वासा है, समय काल सूं ना कोई नाता है – ना लो सपने
६ तुम निज के दीप बन देखो, पल में अमर जोत बन जाती है
मोह सूं खेल बिगड़ा है, प्रेम में कचरा ही कचरा है
मोह ही मान तेरा है, निज की पहचान कैसे हो – ना लो सपने –

ना लो सपने–२ कहीं सपनों से प्रेम की ज्योत जगती है –२
पर अमृत दात पाने से, निज की पहचान होती है –– ना लो सपने

–0–

भजन – ६ (भाग ४)

ना लो सपने–२ कहीं सपनों से मुक्ति राह मिलती है
कहीं आंसूं बहाने से, दुखों का नाश होता है – ना लो सपने

१ सतगुरू सतपुरूष रूप होते हैं, सुरति सूं संग होते हैं
तुम जागे नहीं होते, तभी ना देख पाते हो
मान मोह है इस तन में, सच की पहचान कैसे हो – ना लो सपने –
२ निज को बंधन में निज डाला, रोने से ना बात बनती है
कर्म काण्डों मे रस तेरा, निज की ना पहचान होती है
प्रेम कहीं नहीं दिखता तुझमे, विरह वैराग कैसे उत्पन्न हो – ना लो सपने –
३ मन मान से काल जाल नहीं कटता, फिर काल सूं छुटकार कैसे हो
मांसाहारी मानवा भी हैं जग में, राक्षस बन पार कैसे हो
उनकी संगत से दुख उपझे, निजघर की पहचान कैसे हो – ना लो सपने –
४ तुम जग में जो भी करते हो, उसी में मांग होती है
मांग का पदार्थ सूं नाता है, जो संसार देती है
कभी सोचा नहीं तूने, मांग से ऋणि हो जाते हो – ना लो सपने –
५ पाप पुण्य दोनों ही बेड़ी हैं, ईक लोहा ईक कंचन केरी हो
देह का पाना ही कारण दंड का, सब कर्मों का बंधन है
ज्ञानी भी इसे भुगतें, अज्ञानी भी इसे भुगतें – ना लो सपने –
६ जगत खर अक्षर माया जाल है सारा, जहां मन ही राजा है
इक आत्म जोत निःअक्षर है, जिसे निःअक्षर में समाना है
बिन सतगुरू बात नहीं बनती, सार नाम सूं मोक्ष को पाना है – ना लो सपने
७ मान पूर्ण बाजीगर ही तुम जानो, आत्म को बंदर समान नचाता है
निज को निज ने बांधा है, नशा देकर नचाता है
रक्षक सूं करि दूरी, भक्षक सूं जोड़ा नाता है – ना लो सपने –

ना लो सपने–२ कहीं सपनों से मुक्ति राह मिलती है
कहीं आंसूं बहाने से, दुखों का नाश होता है – ना लो सपने

–0–

भजन – १० (भाग ५)

ना लो सपने–२ कहीं सपनों से मुक्ति राह मिलती है
कहीं आंसूं बहाने से, दुखों का नाश होता है – ना लो सपने

१ निःअक्षर सब्द सूं दूरी है, खर अक्षर सूं जोड़ा नाता है
अमृत दात सूं कर नाता, खर अक्षर की पहचान होती है
मन का मान जाता है, निज का कमल खिल जाता है – ना लो सपने –
२ काम छूटे तो नाम आये, मृत्यु सूं पार हो जाना है
सार सब्द सूं भक्ति रंग लाती है, सुरति सूं दीप जलता है
स्त्री जब गर्भ धार लेती है, खबर चारों ओर जाती है – ना लो सपने –
३ झुकेगा वही इस जग में, जिस में कुछ जान होती है
अकड़ पहचान मुर्दों की, वही तो मान होती है
संतों की पहचान न्यारी है, प्रेम बरसात होती है – ना लो सपने –
४ संतों की वाणी उल्टि है, जो सहनशीलता भर देती है
अल्प बुद्धि वो प्राणी है, वही बरसात करता है
चूहे को कत्तर मिलते ही, बजाज बन जाता है – ना लो सपने –
५ खाली जो भी प्राणी है, घेरा घाव करता है
झुकना आता नहीं उसको, घावों की बरसात करता है
ज्ञान सूं परिपूर्ण जो होते, ज्ञान बरसात करते हैं – ना लो सपने –
६ संतों का धर्म ग्रंथ नहीं होता, हर प्राणी सूं नाता होता है
वह फूटा कुम्भ जल जल ही में, सुरति सूं महां सागर में ही रहते हैं
बूंद सागर संग ईक होकर भी, हंसा रूप रहती है – ना ला सपने –
७ सुरति उपर को चलती है, मन मान आगे को चलते हैं
दोनों का मेल ना होता है, भिन्न राहों पे चलते हैं
ध्यान उपर को उठता है, राह आगे को चलती है – ना लो सपने –

ना लो सपने–२ कहीं सपनों से मुक्ति राह मिलती है
कहीं आंसूं बहाने से, दुखों का नाश होता है – ना लो सपने

–0–

भजन – ११ (भाग ६)

ना लो सपने–२ कहीं सपनों से मुक्ति राह मिलती है
कहीं आंसू बहाने से, दुखों का नाश होता है – ना लो सपने

१ काल समय भी आगे को चलते हैं, उपर को दोनों खो जाते हैं
मृत्यु भी आगे चलती है, आत्म उपर को चलती है
तूं ऊपर की ओर सीख ले चलना, ऊपर को दोनों खो जाते हैं – ना लो सपने
२ सुरति ऊपर को चलती है, मन मान प्राणों संग चलता है
दोनों का मेल नहीं हो पाता, ज्ञान विज्ञान नहीं साथ होता है
ध्यान ऊपर को चलता है, आशा–तृष्णा मन साथ देती हैं – ना लो सपने –
३ जात गुण जब साथ तेरे हैं, मुक्ति कौसों दूर तुझसे
इन सूं नाता तोड़ सतगुरू मानो, निज का घर नहीं दूर तुझसे
भाव बिन प्रीत ना जागती, प्रेम ना जागे तो निज सूं कौसों दूर – ना लो सपने –
४ कामी क्रौधी लालची, करें जग की आस
सार सब्द की दात बिन, कभी ना टूटे आस
भगत लीन सतगुरू चरणन में, छूटे जग की आस – ना लो सपने –
५ प्रेम लोभ दा पाट हैं जग में, कभी मेल ना होये
प्रेम चारों ओर बहत है, लोभ सूं मोह प्रकट होये
प्रेम भक्ति तभी बने, जब सुरति जागी होय – ना लो सपने –
६ प्रेम मोह के पट तुम जानो, ईक ऊपर ईक आगे को चलता
आगे को माया जाल है जग में, ऊपर को मोक्ष द्वारा है
आशा–तृष्णा आगे को चलती है, प्रेम ऊपर से बरसता है – ना लो सपने –
७ प्रेम भक्ति का सागर है, ऊपर से ऊपर को बहता है
सांसा भी ऊपर से आती है, अल्प बुद्धि नहीं जाति पाती है
निजघर ऊपर को है तेरा, समय काल की एक ना चलती है – ना लो सपने –

ना लो सपने–२ कहीं सपनों से मुक्ति राह मिलती है
कहीं आंसू बहाने से, दुखों का नाश होता है – ना लो सपने

–0–

भजन – १२ (भाग ७)

ना लो सपने–२ कहीं सपनों से सच्ची दात मिलती है – २
पर आंसू बहाने से – विरह की अगनी जलती है – ना लो सपने –

१ मन आगे को चलता है, सुरति ऊपर बहती है
दोनों का मेल नहीं होता, मन मान घेर लेता है
आत्म पूर्ण शक्ति है, मान के नशे में निज भूली है – ना लो सपने –
२ मान अभिमान जमाता है, आत्म को भरमाता है
आत्म बिन सुरति नहीं जगती, नशे सूं पार नहीं होता है
बिन सतगुरू कोई ना जाने, नशे में सब जग डूबा है – ना लो सपने –
३ निःअक्षर सब्द से है दूरी, क्षर अक्षर से जोड़ा नाता है
अमृत दात से जब नाता, क्षर अक्षर की पहचान होती है
मन का मान जाता है, सच्च का दीप जल जाता है – ना लो सपने –
४ काम क्रोध छूटे तो प्रेम ऊपझे, मृत्यु से पार हो जाना है
सत्य भक्ति रंग लाती है, सत्य सब्द से निजघर को जाना है
स्त्री जब गर्भ धार लेती है, खबर अंग संग फेल जाती है – ना लो सपने
५ झुकेगा वे ही इस जग में, जिस अंदर कुछ जान होती है
अकड़ पहचान मुर्दे की, यही तो मान होता है
संतों की पहचान न्यारी है, खबर बिन पांओं जाती है – ना लो सपने –
६ संतों की वाणी अमृत है, जो सहनशीलता उत्पन्न करती है
अल्प बुद्धि जो प्राणी हैं, वही बरसात करते हैं
चूहे को कत्तर मिलते ही, बजाज कहलाता है – ना लो सपने –
७ सार नाम सूं खाली जो प्राणी हैं, घेरा घाव करते हैं
झुकना आता नहीं जिनको, घाओं की बरसात करते हैं
अमृत दात से परिपूर्ण जो होते, अमृत बरसात करते हैं – ना लो सपने

ना लो सपने–२ कहीं सपनों से सच्ची दात मिलती है – २
पर आंसू बहाने से – विरह की अगनी जलती है –– ना लो सपने –

–0–

भजन – १३ (भाग ८)

ना लो सपने–२ कहीं सपनों से सच्ची दात मिलती है – २
पर आंसू बहाने से – विरह की अगनी जलती है – ना लो सपने –

१ संतों का धर्म गोत्र नहीं होता, हर एक सूं नाता होता है
वह फूटा कुंभ लज जल ही में, सुरति सूं महां सागर में ही रहते हैं
आत्म साहिब रूप में समाती है, बूंद महां सागर हो जाती है
बूंद सागर एक होकर भी, हंसा रूप में रहती है – ना लो सपने –
२ मूल सुरति बिन मान नहीं छूटे, मान छूटे बिन झुकना कैसे हो
मनुष्य तन अनमोल है तुम जानो, सहज मिले ना दूजी बार
निज अंदर प्रतिपल झाडू दे देखो, साहिब बिन दूजा नहीं और – ना लो सपने
३ जो मिला सो ज्ञानी मिला, साधक कोई विरला एक
क्षर अक्षर के ज्ञानी थे, सुरति प्रेम में कोई एक
मन सूं प्रीत हर एक की, सुरति में कोई ध्यानी एक – ना लो सपने –
४ माया मोह को सहज है तजना, ह्रदय कपट क्रौध नहीं
मान बड़ाई ईर्षा संग लोभ, मोह अहंकार नांहि
कीच कीच के धोकर भी, दाग उतरे एक भी नहीं – ना लो सपने –
५ मन जाता है जाने दे, सुरति सूं बात बनती है
सुरति हर ओर चलती है, मन का सब कार्य करती है
मन आगे को चलता है, कचरा भी साथ रहता है – ना लो सपने –
६ जिस सुरति में सार सब्द नहीं बहता, मन का ही राज चलता है
मनुष्य पल पल में मरता है, मृत्यु का बाण खाता है
सुरति जब सार सब्द सूं जाग जाती है,मन की एक ना चलती है–ना लो सपने
७ सुरति में अमृत नाम नहीं जिनके, वे जग में आते जाते हैं
वे पल पल मृत्यु से डरते हैं, काल का ग्रास बनते हैं
श्वांस श्वांस में सब्द तुम भर दो, मन आत्म से पल में छूटेगा – ना लो सपने

ना लो सपने–२ कहीं सपनों से सच्ची दात मिलती है – २
पर आंसू बहाने से – विरह की अगनी जलती है –– ना लो सपने –

–0–

भजन – १४ (भाग १)

जग सोया कंई जमानों से, अमृत दात को पाया ना –
यही दुखों का कारण है – २

१ मान माया आशा तृष्णा कारण है, जिन मनुष्य पल पल भरमाया है
हर पल मांग पे मांग इसकी, चित्त खाली का खाली पाया है
बिन पैन्दे के चित्त इसका, भर भर के भर ना पाया है। यही दुखों –
२ छे तन का मालिक है तूं, बस दो को ही जान रहा, चार सोए जमाने से
मोह माया का बंधन है, जिन पल पल भरमाया है, इस कारण जग सोया है। यही दुखों –
३ तेरे अंदर विष अमृत इक संग प्यारे, आत्म अमृत मन इन्द्रियां विष तेरे अंग प्यारे
छल कपट तन तेरा है, तन मन आत्म के अंग नहीं प्यारे। यही दुखों –
४ बिन प्रेम विरह प्रकटे नांहि, विरह वैराग प्रेम का साया है
बिन विरह जग भक्ति नांहि, तन चौथी काया है
प्रेम आत्म की ज्योति है, मन माया छूटे तो बात बनती है। यही दुखों –
५ काल के साधु के पास कुछ ना, थोथे पुराने शब्दों की पिटारी है
ये शब्द सच्चे बाण नहीं, मुक्ति दात सूं खाली हैं
निजधाम के सतगुरू बिना, सच्ची दात सूं नर खाली है। यही दुखों –
६ आत्म ने तन को निज रूप माना, यही कारण परेशानी है
आत्म अमर सहज चेतन प्यारे, मन सूं कुछ लेना देना ना
तीन लोक में मरने जमने बन कुछ पाया ना, तभी डर प्यारे मरने का। यही दुखों –
७ तूं तो आत्म अविनाशी है, परम आतम सूं संग पुराना
आत्म सतपुरूष का अंश प्यारे, सत्ता उनकी इस में समाई
तूं तो निजधाम का वासी है, निःअक्षर सब्द बिन आत्म। यही दुखों –

जग सोया कंई कंई जमानों से, अमृत दात को पाया ना – 2
यही दुखों का कारण है – 2

–0–

भजन – १५ (भाग २)

जग सोया कंई ज़मानों से, अमृत दात को पाया ना – २
यही दुखों का कारण है – २

१ तूं आत्म सहजता अमूलता, आनंद से परिपूर्ण है
पूर्ण सतगुरू दात बिन प्यारे, मन पल पल भरमाता है
टूटा सच्चे साहिब सब्द सूं नाता है, सच्ची भक्ति संग छूटा है। जग सोया –
२ अक्का नाम आत्म की सीढ़ी है, इससे मन माया सब छूट जाती है
विष बह गया इस तन से, जग गई प्रेम की ज्योति है
सतगुरू जी की कृपा सूं, पाई अमर दात प्यारी। जग सोया –
३ सर्गुण निर्गुण काल पुरूष अराधना है, सतपुरूष की भक्ति नहीं
सतलोक सतपुरूष की, खोज कठिन सहल नहीं
बालपन और जवानी ही में, बुढ़ापे में कठिन सहल नहीं। जग सोया –
४ गुरू किया देह का तूने, सतगुरू चीन्हां नहीं
तीन लोक से भिन्न प्यारे, अमर लोक निजघर जाना नहीं
भवसागर जाल में फंस कर, निज को पहचाना नहीं। जग सोया –
५ हर पल तड़प उठे प्यारो, सतगुरू दर्शन की
सुरति चरणन में डालो, हाथ दान देने को
रिश्ते नाते सब टूट गये, प्रेम बाण चलाने को। जग सोया –
६ तंत्र मंत्र सब झूठ तुम जानो, इनको जीवन मे तुम लाओ ना
सतनाम को जाने बिना, कागा हंसा होए ना
जब लग नाता जाति का, तब लग भक्ति जागे ना। जग सोया –
७ सच्चा सतगुरू जे पालो, चरणों में मन माया तज डालो
सांसों में मूल सब्द डालो, सुरति निरति इक कर डालो
सब सांसा सुरति एक भयी, सुरति विचारों से खाली कर डालो। जग सोया –

जग सोया कंई कंई जमानों से, अमृत दात को पाया ना – २
यही दुखों का कारण है – २

–0–

भजन – १६ (भाग १)

जग भूला निजघर प्यारे को, सार नाम को पाया ना – २
यही दुखों का कारण है

१ साधक सतगुरू और सार नाम, सुरति सूं इक हो जावें
त्रिवेणी धारा बने, आगे गंगा इक हो जावे
वे नाम शरणी आवे जो, इक सूं मिल इक हो जावे – जग भूला निजघर –
२ सुरति की ज्योत जब जगती है, आत्म सार–सुरति सूं जग जाती है
अब मोह माया का संग गया, आशा तृष्णा मान जल जाते हैं
भेद भाव का भेद गया, हर जीव हंसा रूप ही दिखता है – जग भूला निजघर
३ सुरति में प्रेम लहर चली, अमृत धारा बह जाती है
हर बोल में अमृत धारा बहे, स्वाति बूंद सूं उत्तम अमृत धारा है
हर प्राणी अमृत पाते ही, प्रेम सागर में वैरागी बन जाता है – जग भूला निजघर
४ सतगुरू धारा निर्मल बहे, वा में मन काया धोई ले
कहत वे नाम जी सुनो भई प्यारो, वा में नहाई वैसा होई ले
जुगन जुगन संत समझावत हारे, कहा मान अब 'वे हूं' का ले – जग भूला
५ मन का त्रिकुटि मध्य वासा है, दसवें द्वार आप विराजत है
तांहि सदगुरू ध्यान में बाधक हैं, आत्म मोक्ष में भ्रम कारक है
शुन्य उपर महां शुन्य प्यारो, सात–सात लोक पसारा है – यही दुखों
६ निरंझन जन्म मरण सूं कर्म बनाता है
देव दानवों का करता – जग संचालक है
वह ही भोग ध्यान में, सिद्धि निधियों का वाहक है – यही दुखों
७ भगवन ही मनुष्य की मनोकामना, सुख दुख हो जाता है
यज्ञ तीर्थ व्रत आप करवा रहा, फल देवनहारा बन जाता है
भूतों की भक्ति मन करवा रहा, मूरत पूजा पाहन सेवा मे ले जाता है – यही दुखों

जग भूला निजघर प्यारे को, सार नाम को पाया ना – २
यही दुखों का कारण है

–0–

भजन – १७ (भाग १)

जग भूला सुरति सवागन को, मूल सब्द को पाया ना – २
यही दुखों का कारण है – २

१ स्वार्थ कारण परिक्रमाऐं करे, आत्म में परमात्म जान ना
निःअक्षर सब्द सूं भक्ति उपझी, सच्चे प्रेम की भाषा जानी ना
प्रेम उपझे विरह से खोजी हो, मिलन के भेद को जाना ना – यही दुखों
२ आशा तृष्णा मान का रूप प्यारो, इन से मन का राज चले
सुख दुख भी मन के अंग प्यारो, इन से मन का बाण चले
जीवन मृत्यु मन के खेल प्यारो, इससे काल का जीवों पर राज चले – यही दुखों
३ निःअक्षर सब्द सूं भक्ति उपझे, सच्चे प्रेम की जोत हर ओर चले
प्रेम उपझे विरह प्रकटे, इन से मिलन का ही बाण चले
सदगुरू सूं मिलन का समय ही यही, जब मोक्ष पद की दात मिले – यही दुखों
४ निर्भय पद को प्राप्त करो, भ्रम कूप की पहचान पाओ
बहुत प्रीति सूं विष्णु ध्यावे, सो जीव विष्णु पुरी जावे
विष्णु ही कर्ता बतलावे, वह जीव कैसे सतलोक जावे – यही दुखों
५ हरि हरि नाम विष्णु का होई, विष्णु विष्णु भाषे सब कोई
सब घट मांहि विष्णु विराजे, वह जीव तीन लोक सूं पार ना जाई – यही दुखों
६ सार सब्द पाते ही प्यारो, अठवन पठवन दृष्टि ना लागे
ढाई बाण सब्द के प्यारो, जादू जंत्र युक्ति ना लागे
काहो से वैर नहीं प्यारो, सब जीव हंसा रूप लागे – यही दुखों का –
७ जीव न मारो हंसा प्यारो, सब के एकै प्राण प्यारो
हत्या दोष न छूटे प्यारो, कोटि पुराण पढ़ी सुनी लो प्यारो
काल का जीव सत्य जाने ना, मैं कोटिन कहुं समझाऊं प्यारो – यही दुखों

जग भूला सुरति सवागन को, मूल सब्द को पाया ना – २
यही दुखों का कारण है – २

——0——

भजन – १८ (भाग १)

साहिब मीरा जी को समर्पित :–

१ ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारो, रोय रोय अखियां राती।
यो संसार सकल जग झूठो, झूठा कुल रा न्यारी राती।। साहिब जी

२ दोड़ कर जोड़या अर्ज करें छूं, सुन लो मेरी बाती।
यो मन मेरो बड़ो हरामी, ज्यों 'मद' मातो हाथी।। साहिब जी

३ सतगुरू हाथ धरो सिर ऊपर, अंकुश दे समझाती।
पल पल पीव का रूप निहारूं, निरख निरख सुख पाती।
साहिब जी – सतगुरू चरण चित राती।।

४ मेरी आरती मेटि गुसांई, आई मिलो मोहि प्यारो।
मीरा व्याकुल अति अकुलाणी, पिया की उमंग अति लागी री।
साहिब जी – विरह बाण उर लागी री।।

५ निस दिन पंथ निहारूं पति को, पलक न पल भरि।
पीव पीव में रटूं रात दिन, दूजी सुध–बुध भागी री।। साहिब जी

६ राम मिलन के काज सखी री, मेरी आरती उर जागी री।
तलफत तलफत कल न परत है, विरह बाण उर लागी री।। साहिब जी

७ म्हारे जनम मरन रा साथी, थांवे नहिं बिसरूँ दिन राती।
थां देखया बिन कलप न, जानत मेरी पड़त है छाती।। साहिब जी

ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारो, रोय रोय अखियां राती।
यो संसार सकल जग झूठो, झूठा कुल रा न्यारी राती।। साहिब जी

–0–

भजन – १९ (भाग २)

साहिब मीरा जी को समर्पित :–

१ जब से तुम बिछड़े मोरे प्रभु जी, कभु ना पायो चैन।
सब्द सुनत मेरी छतिया कांपे, मीठे लागे बैन ।।
साहिब जी – दुखन लागे नैन –

२ रात दिवस काल नहिं परत है, जैसे मीन बिन पानी।
दरस बिन मोहि कछु न सुहावे, तलफ तलफ मर जानी।
साहिब जी – मीरा तो चरणन की चेरी, सुन लीजे सुख दानी।।

३ तुम बिछड़े दुख पाऊँ जी, मेरा मन मांहि मुरझाऊँ।
मैं कोयल ज्युं करलाऊँ जी, बिन दरश मुरझाऊँ।
साहिब जी – जित देखुं तुझे पाऊँ ।।

४ सतगुरू जैसा वैध ना कोये, बूझो वेद पुराण।
मीरा रे प्रभु साहिब प्यारे, अमर लोक में रहना।
साहिब जी – सच्चो देश में जा रहना।।

५ खड़ी खड़ी रे पंथ निहारूं, मरम ना कोई जाना।
सतगुरू ओषध ऐसी दीनी, रूप रूप भई चैना।
साहिब जी – निजघर अमरदेस है मोहे जाना।।

६ दीपक सूं प्रीति लागी पतंग की, वार फेर जिया देह।
मीरां की प्रीति लागी संतों से, सतगुरू चरण चित देह।
साहिब जी – सुरति संग मिटे देह।।

जब से तुम बिछड़े मोरे प्रभु जी, कभु ना पायो चैन
सब्द सुनत मेरी छतिया कांपे, मीठे लागे बैन
साहिब जी – दुखन लागे नैन ––

—0—

भजन – २० (भाग ३)

साहिब मीरा जी को समर्पित :–

१ जब से तुम बिछड़े मोरे साहिब जी, कबहु ना पायो चैन।
'मैं और मेरा' छोड़ बन सुरति, सुरति में सार नाम की धार।। साहिब जी

२ जल से प्रीति करि मछली ने, बिछुरत प्राण त्यागे
मृग की प्रीति लागी गंध से, सनमुख सैल सहे
साहिब जी – स्वांस स्वांस नाम ले

३ भर मारी रे बाण मेरे सतगुरू, बिरह लगाये के नेह
पांव पंगम कानन बहिरा, सूजत कुछ नहीं नैना
साहिब जी – दरस बिना दुखन नैना

४ मोहे हर पल बिरह सतावे जी, कैसे कोई निजघर जावे
ज्युं जल त्यागे मीना जी, दरस बिन पार ना पावे
साहिब जी – छूटे तीन मिले घर जावें

५ श्रद्धा प्रशण उठाती नांहि, ध्यान फूल प्रार्थना सुगंध की धार।
साहिब जी – मौन में सोए, गीतों की धार।। साहिब जी

६ बूंद सिंधु में या सिंधु बूंद में, तूं कुछ भेद ना जान
तुम सतगुरू में या सतगुरू तुम में, तूं कुछ भेद ना जान
साहिब जी – निज की कर पहचान

७ ज्युं नैनन में पुतली प्यारी, त्युं सतपुरूष घट मांहि
मूर्ख मनवा जानत नांहि, बसती में ढूंढत जाहि
साहिब जी – निज को जानत नांहि

जब से तुम बिछड़े मोरे साहिब जी, कबहु ना पायो चैन।
'मैं और मेरा' छोड़ बन सुरति, सुरति में सार नाम की धार।। साहिब जी

—0—

भजन – २१ (भाग ४)

साहिब मीरा जी को समर्पित :–

१ दया करो मोरे सतगुरू स्वामी, चार लोक अंतर्यामी।
सब को धिहाऊँ प्रसाद चरणन, सब संगत हर्ष सुरति माईं।
साहिब जी – हर पल सतगुरू सुरति में समाई।।

२ प्यारे मर मर के पा ले, जीवित मरना रे मीठा।
जीवित मरे बिन पार ना कोए, सतपुरूष का मेला दीठा।
साहिब जी – बिन जीवित मरे किसे है दीठा।।

३ कंचन हीरे बांट आरती चारी, सेवा सतगुरू सुरति में धारी।
संगत सारी चरणन लागी, प्रेम भक्ति स्वांस सुरति में धारी।
साहिब जी – स्वांस सुरति एक करि धारी।।

४ यह तन लेव सतगुरू प्यारा, तब होवे हम काज।
तन मन धन करत निछावर, सुख संपति कुल लाज।
साहिब जी – राखें वे नाम की लाज।।

५ वे नाम जब ध्या सुरति में, अष्टम चक्र दरसन जा पाई ।
दरसन पा आया आनंद, जैसे चाँद चकौर प्रीत है भाई।
साहिब जी – जैसे जल बिन मीन तलफत है भाई।।

६ करूणामय सतगुरू अंतर्यामी, करो दया मोपर मेरे स्वामी।
जे नांहि दरसन पाऊँ हरपल, उसी पल तजुं प्राण मेरे स्वामी।
साहिब जी – सुरति में हर पल अंतर्यामी।।

दया करो मोरे सतगुरू स्वामी, चार लोक अंतर्यामी।
सब को धिहाऊँ प्रसाद चरणन, सब संगत हर्ष सुरति माईं।
साहिब जी – हर पल सतगुरू सुरति में समाई।।

—0—

भजन – २२ (भाग १)

१ झूठी माया सब जग अंधा, सतगुरू फंद काटे निर्द्वंदा।
मैं अज्ञानी पूरा पागल, तुम बिन कौन करे निर्द्वंदा।
साहिब जी – आशा तृष्णा सूं हुआ हुं अंधा।।

२ तीर्थ व्रत आदि सब यम के बंधन, नाम ध्यान भक्ति अंग ले जान ।
निर्गुन सर्गुन ध्यान करावे, सो भी बंधन ले जान।
साहिब जी – सार सब्द की महिमां महान ।।

३ पूर्ण सतगुरू भक्ति बिना, पूर्ण मुक्ति नहीं होत।
सतगुरू भक्ति बिना, सतपुरूष सूं मेल कभी न होत।
साहिब जी – सुरत नाम बिना पार ना होत।।

४ सार सब्द बिन नहीं मुक्ति का, द्वार कोई दूजा नांहि।
निंदा ईर्ष्या छल कपट, छूटे बिन भक्ति नांहि।
साहिब जी – मुक्ति मार्ग अति सांकरा चौड़ा नांहि।।

५ चल हंसा सतलोक प्यारे, छोड़ मोह माया जाल विस्तार।
भयो संसार स्वपन मन का, जैसे नर सोत लेत सपन कई बार।
साहिब जी – तीन लोक सपनों का विस्तार।।

६ सब हंसा सतलोक में, सतपुरूष का दरसन कर करते दण्डवत प्रणाम।
सुरति में हर उपदेश का पालन, सतकार सुरति सूं सब काम।
साहिब जी – सतपुरूष आज्ञा अनुसार सब काम।।

झूठी माया सब जग अंधा, सतगुरू फंद काटे निर्द्वंदा।
मैं अज्ञानी पूरा पागल, तुम बिन कौन करे निर्द्वंदा।
साहिब जी – आशा तृष्णा सूं हुआ हुं अंधा।।

—0—

भजन – २३ (भाग १)

१ मेरी आत्मां मग्न भई, मदमस्त किया सार नाम।
भीजे सीजे कंबली सतगुरू, बरसे अमृतधार सुबो शाम।
साहिब जी – चारों ओर बूंदा बांदी सुबह शाम।।

२ मेरे हाथ ईक हीरा आया, कोई जोहरी करे पहचान।
प्रेम प्यास जगाता हीरा, जिससे जीवित मरने की हो पहचान।
साहिब जी – सत्य सागर में भीजे चुनरिया सार नाम।।

३ प्रेम तो केवल मिलन की धारा, वासना कामना प्रेम में ह्ान।
विरह विराग से प्रेम ऊजाला, मान अपमान करे ह्ान।
साहिब जी – सार सब्द खोले द्वार सतलोक महान।।

४ हर पल मरता बनता ये तन, पँच तत्व का जान।
तूं तो हर पल जीवित रहता, मरता बनता ये तन जान।
साहिब जी – आत्म अजर अमर ले तूं जान।।

५ जन्म मरन झूठे दो किनारे, प्रेम ही सत सेतु तूं जान।
जीवित मरना सार नाम बिन नांहि, आत्म हंसा बने महान।
साहिब जी – सतगुरू दरसन पा पहुंचो निजधाम।।

६ बिन जागे कैसे कोई पावे, प्रेम का बाण महान।
मान अपमान रिश्ते नाते, काल के बाण बिन कमाण।
साहिब जी – सुरति सूं चले ये बाण।।

मेरी आत्मां मग्न भई, मदमस्त किया सार नाम।
भीजे सीजे कंबली सतगुरू, बरसे अमृतधार सुबो शाम।
साहिब जी – चारों ओर बूंदा बांदी सुबह शाम।।

–0–

भजन – २४ (भाग १)

१ सार दात सुरति ज्ञान सूं, ईन्द्रियां बिन होत ध्यान।
सांसा सुरति बाण हो ध्यानी, सहज मार्ग से ध्यान।
साहिब जी – वे नाम की बात मान बनें सब काम।।

२ अस्तित्व विलिप्त नाम रूप गाया, जीव ईक भी ना डरे।
मन गया मान गया, रिश्ते नातों का गया फेर।
साहिब जी – निजघर जाते तनिक ना लागे देर।।

३ विषय किसी भी में समाता, प्रतिष्ठा केवल बोझ।
गुण किसी की प्रशंसा नांहि, योग्यता नांहि बोझ।
साहिब जी – तीन लोक गुण जानो ईक बोझ।।

४ मान सम्मान केवल संकट में डाले, भीतर तोड़े सत्य प्रेम की डौर आन।
महानता अखियन ना देखी, स्वीकृति सुने ना आत्म कान।
साहिब जी – सुमिरन सुरति का बाण महान।।

५ सब संत सतपुरूष की जाति, धर्म से कछु लेन ना देन।
शास्त्र सम्प्रदायः बांध नां पाऐं, जाति पाति से कुछ लेन ना देन।
साहिब जी – सार सब्द सतपुरूष की देन।।

६ अलख निरंझन आत्म नांहि, मन का भाव उड़ा ले जाए।
आँख कान हाथ पाँऊ नांहि, ईन्द्रियां पहुंच ना पाऐं।
साहिब जी – अलख सब नर ले उलझाए ।।

सार दात सुरति ज्ञान सूं, ईन्द्रियां बिन होत ध्यान।
सांसा सुरति बाण हो ध्यानी, सहज मार्ग से ध्यान।
साहिब जी – वे नाम की बात मान बनें सब काम।।

——0——

भजन – २५ (भाग १)

१ बिन पूर्ण सतगुरू सार नाम नांहि, जे बहुरि ना मरना होई।
मन के वश तीन लोक हैं, तीन लोक का राजा सोई।
साहिब जी – वे नाम बिन कार्य सरे ना कोई।।

२ आत्म मन से डीगे ना डोले, जे सार सब्द सुरति नाम।
भौग विलास आशा तृष्णा, ये सब मन के बाण।
साहिब जी – मूल सब्द तोड़े सब निरंझन बाण।।

३ मन बने दासा सच्ची दात जे पासा, निःअक्षर सब्द सच्चा बाण।
घट घट वासा जब सुरत सब्द का, पल में दास बने मन महान।
साहिब जी – वे नाम पाई सतपुरूष से दात महान।।

४ हरि ही मन मन ही निरंझन, कैसे करो विश्वास।
दोनों की एक है जाति, जैसे वे नाम सत्यपुरूष का दास।
साहिब जी – बने काम जब मन से बड़ी दात ही पास।।

५ वे नाम तन मन से तोड़ी, सतपुरूष संग जोड़ी तार।
अब सब जग अपना नहीं कोई दूजा, किस संग जोड़ो तार।
साहिब जी – अब किस को छोड़ो विच मजेदार।।

६ हम कहां चंगे प्यारे सभी हैं, बुरा मत जानो कोये।
सब घट वासा एक सुरति हैं, निरति स्वांसा मिल आत्म होये।
साहिब जी – मन भाव देता आत्म से सब कार्य होये।।

बिन पूर्ण सतगुरू सार नाम नांहि, जे बहुरि ना मरना होई।
मन के वश तीन लोक हैं, तीन लोक का राजा सोई।
साहिब जी – वे नाम बिन कार्य सरे ना कोई।।

–0–

भजन – २६ (भाग १)

१ वे नाम से दात को पाकर, मन माया लीजे जान।
संगति में आई के, मन आत्म की करो पहचान।
साहिब जी – सतपुरूष की महिमां तूं जान।।

२ सब घटि हरि आत्म का वासा, कोई घटु खाली नहीं।
सुरति मन में निरति स्वांस में, दोनों संग आत्म होई।
साहिब जी – बिन सतपुरूष सब्द बात बने ना कोई।।

३ गारि आई ईक प्यारो, फूल समान जान ना धरो ध्यान।
खर निःअक्षर का मेल ना, सुरति में खर अक्षर का क्या काम।
साहिब जी – मन के भाव का सुरति में क्या काम।।

४ अस्तूति निंदा सूं दूर रह, मन की तरंग इन्हें तूं जान।
सुरति से सब एको जानो, निज की होत पहचान।
साहिब जी – तीन लोक में चलते मन के बाण।।

५ दिन चार का खेल प्यारो, मत करो गुमान।
सतगुरू पा कर खाक बनो तुम, मन की छूटे लगाम।
साहिब जी – मन बाज निसान।।

६ निंदक बिन तीन लोक हों कैसे, जहां निंद स्तूति का काम।
सत्य जहां झूठ वहां, अच्छे बुरे का भेद ले जान।
साहिब जी – दो से भिन्न सुरति महान।।

वे नाम से दात को पाकर, मन माया लीजे जान।
संगति में आई के, मन आत्म की करो पहचान।
साहिब जी – सतपुरूष की महिमां तूं जान।।

–0–

भजन – २७ (भाग १)

१ मन गया मान गया, संशय छूटे पालो प्यारा यार।
संग दो का छूट गया अब, सतगुरू संग सुरति तार।
साहिब जी – पल में संग पाया प्यारा यार।।

२ साहिबन बिन मुख बोले कैसे, साधक फिरे लिए प्यास।
सब वेद ना सुरति में धारें, साहिब सुरति के दास।
साहिब जी – सार सब्द से बुझती प्यास।।

३ बिरहन रोवे हर पल हर छिन, सतगुरू सूं मिली ना दात।
सुअवसर जब चलि गया, रोवत मिले ना दात।
साहिब जी – वे नाम से पा लो सार सब्द दात।।

४ दुख का सागर तीन लोक है, सुख का सागर सार नाम।
सतगुरू मेल से सुख सागर पाईए, सुरति सब्द महान।
साहिब जी – सुरत सब्द में साहिबन जान।।

५ जहां डर वहां प्रेम ना, डर तो मन का अंग।
डर सूं सत की दूरी, डर करे प्रेम भंग।
साहिब जी – डर प्रेम भक्ति करे भंग।।

६ दिन चार का खेल प्यारो, मत करो गुमान।
सतगुरू पा कर खाक बनो तुम, मन की छूटे लगाम।
साहिब जी – मन बाज निसान।।

मन गया मान गया, संशय छूटे पालो प्यारा यार।
संग दो का छूट गया अब, सतगुरू संग सुरति तार।
साहिब जी – पल में संग पाया प्यारा यार।।

–0–

भजन – २८ (भाग १)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ निजधाम ही सच्चा धाम हमारा, बिन सतगुरू पहुंच ना पाते हैं।
दुर्लभ मानुष तन ये पाया, जिवित मरना पार करता है।। आते हैं और –

२ जीवन जो सुरति धारा थी, हमने खर अक्षर को दे डाली।
कब खर अक्षर सुरति धार बने, सुरति सार नाम में दे डाली।। आते हैं और –

३ संत की संगत पारस करत है, पारस का पारस तुम क्या जानो।
पल में जीवन सुख सागर हो, अमृत वर्षा हर ओर से आती है।। आते हैं और –

४ सुरति सूं हर कार्य करो, बिन नैनन साहिब दीदार करो।
कभी भीख देवी देवों से मांगूं ना, मांगन से कोई ना पार तरे।। आते हैं और –

५ आज्ञा चक्र में सतगुरू वासा है, सुरत कमल में साहिबन दीदार करो।
गुप्त वस्तु को जब पाया ना, महां सुन्न को कैसे पार करो।। आते हैं और –

६ संग मन रहे ना मान रहे, जब सात्विक भौजन सुरति धारे।
निरंकार ही मन का रूप प्यारो, सतगुरू सूं आत्म धार बने।। आते हैं और –

७ ह्द अनह्द के पार है जो, सहज समाधि सुरति धार बने।
सूर्य चाँद सितारे तहां ना, बिन बादल वर्षा धार बने।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – २६ (भाग २)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ योग जप नेम व्रत पूजा, वहां पंचम पसारा है।
मन रूपी देव निरंझन, तोहे हर पल भरमाया है।। आते हैं और –

२ सत दात वे नाम संग लिये, पाये कोई हंसा प्यारा है।
नाम हमारा अमृत सुरति, हर गालिफ़ जीव हमारा है।। आते हैं और –

३ निःअक्षर नाम बिन निस्तारा ना, मन माया जाल विस्तारा है।
नाम ही नौका जग मांहि, जो चड़े पार उतारा है।। आते हैं और –

४ सतगुरू चीन्हें चरण सुरति लावें, उतरो भव जल पारा हो।
गुप्त नाम सम दूजा सब्द नांहि, वे नाम देत पुकारा हो।। आते हैं और –

५ जो जस देई सो तस पावे, म ुक्ति सब्द की महिमां न्यारी हो।
सतगुरू सब्द सुरति लावे, सार सब्द साहिब मिलावे हो।। आते हैं और –

६ भाई बन्धु कटुम्भ कबीला, ईक्कठ्ा करने में लगे रे।
पांच दिन का खेल यहां, जागे वे नाम संग लागे रे।। आते हैं और –

७ संध्या तप कर्म काण्ड तजें, तीर्थ व्रत पूजा कभी भी नांहि।
गुप्त नाम सुरति धारें, अमृत धार बिन प्यास बुझे नांहि ।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – ३० (भाग ३)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ निजधाम जहां से हंसा आये, बिन सतगुरू जान ना पाते हैं।
काल जाल का वहां काम नांहि, बिन घृति देस वे पाते हैं।। आते हैं और –

२ संसार सागर अधर में डूबा, गुप्त नाम जहाज पार उतारे रे।
श्वांसा दीप के बुझते ही, दीजे तन में पल में वासा हो।। आते हैं और –

३ कर्म फांस कभी भी छूटे ना, सतगुरू सब्द जब साथ नांहि।
वे नाम जहाज जग में आया, नाम जहाज बिन कोई पार नांहि।। आते हैं और –

४ यम गरजे शेर समान जहां, चीर फाड़ बेहाल करे।
सतगुरू कृपा बिन तीन लोक में, बिन नामे खाये बेहाल करे।। आते हैं और –

५ हर घट में साहिब वासा है, सूनी सेज ना कोई रे।
बिन सब्द आत्म सूं मेल नहीं, मन जाये पल में सागर समाये रे।। आते हैं और –

६ गुप्त रूप समाया हर जीव में, सतगुरू सूं बात बन जाई रे।
बरसे अमृतधार बूंद सुहानी, सार नाम से बात बन जाई रे।। आते हैं और –

७ वे नाम अमृत सुरति धार बहे, सतगुरू चरणन ध्यान लगाओ रे।
मिटना ही पाना ईस जग में, सुरति सूं पूर्ण भाग जागें रे।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – ३१ (भाग ४)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ कर्म करें कर्ता ना बने, काम क्रौध भाव चित्त नांहि।
लौभ मोह में जन्म गंवाये रे, संतन संगति बिन कुछ नांहि।। आते हैं और –

२ नर्क द्वार लौभ है भाई, तां ही जीव सदा है भरमाई।
ऐसा जीव सदा दुख पावे है, नर्क द्वार जा के समाई।। आते हैं और –

३ अभिमान करे निज जाने ना, यही भूल तूं अपनी जान ले।
सत संतोष सुरति में धारे, गुप्त सब्द तूं जान ले।। आते हैं और –

४ सतगुरू दीन दयाल मेरे भाई, कर्म कौटि दें सब्द का दान।
सहज भौग ते मन थिर राखें, संतन संग निजधाम।। आते हैं और –

५ ताका आवागमण निशाई, ना कहुं आवे ना कहीं जाई।
जो सुमरे सतगुरू प्रेम लगाई, काल जाल छुट जाई।। आते हैं और –

६ जैसे पुष्प वास है प्यारी, सार नाम ले समाई।
ऐसे ईन्द्री जीव है वासा, मन ईन्द्री संग समाई।। आते हैं और –

७ मूल वृक्ष सतपुरूष है प्यारो, तांहि घर से हंसा सब आई।
तीन लोक काल पसारा है, रचा ब्रह्म विष्णु महेश्वर भाई।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – ३२ (भाग ५)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ ईक पल सुरति में आता है, जब सब कुछ आन समाता है।
इस पल की महिमां न्यारी है, जब पूर्ण खाली हो जाता है।। आते हैं और –

२ खाली में साहिबन वासा है, पल में हम भर जाते है।
ये काम सब सुरति करती है, मै जाती है वे आते हैं।। आते हैं और –

३ भूत भविष्य कुछ है नांहि, सब ये मन की करनी है।
सुरति में रहना आ जावे, मन की करनी खो जाती है।। आते हैं और –

४ जो मन के बाहर रहता है, वोहि इस पल में रहता है।
जिस का अनुभव हम हैं करते, पर भेद ना जान पाते हैं।। आते हैं और –

५ सुरति निरति आत्म अंग जानो, समय काल का लेन ना देन।
हर पल तन मन मिटता बनता, आत्म हर युग ईक समान।। आते हैं और –

६ निज पहचान ही आत्म ज्ञान है, आत्म ज्ञान बिन दुखी परेशान।
मन ही कर्ता कराता है, आत्म भूली निज पहचान।। आते हैं और –

७ सुरति अनुभव के भेद ही, देत निज पहचान रे।
ज्ञान ध्यान से बात बने ना, सार की महिमां जान रे।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – ३३ (भाग ६)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ सार नाम बिन मन छूटे ना, आत्म की ना होत पहचान।
ये दात सतलोक की है, परम पुरूष हैं देत दान।। आते हैं और –

२ मन भक्ति खर अक्षर की, आत्म का लेन ना देन प्यारा।
आत्म हर जीव में सोई पड़ी, सुरति की कर पहचान प्यारे।। आते हैं और –

३ नर बिन हर जीव की, भाषा सुरति जानो प्यारे।
प्रेम भाव से जीवन काटते, दुख सुख में ईक समान प्यारे।। आते हैं और –

४ ज्योति निरंझन सुन्न वास करे, मीन पपील चाल से जानो प्यारे।
जप तप तीर्थ व्रत में ना रहता, ना क्रिया कर्म में जानो प्यारे।। आते हैं और –

५ ना प्राण में ना ही पिण्ड में, नांहि ब्रह्मण्ड आकाश में।
ना त्रिकुटि भंवर गुफ़ा में, ना नाभी के पास में।। आते हैं और –

६ भेदी से ये बात बने, सार सब्द के ध्यान में।
खोजी होये तुरन्त मिले, ईक पल की तालाश में।। आते हैं और –

७ सतगुरू है जाननहारा, सतपुरूष हैं सतगुरू रूप में।
सार सब्द श्वांसा में डालो, पाओ साहिब हर श्वास में।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – ३४ (भाग ७)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ होश के पल को कौन नापे, इस पल में सुरति बहती है।
दूजा पल कभी भी आता ना, सुरति धार तान खो जाती है।। आते हैं और –

२ जो मन के बाहर रहता है, वो साधक सुरति वाला है।
सतगुरू सुरति में जो रहता, वो भी संत प्यारा है।। आते हैं और –

३ भिक्षाटन भी आध्यात्मिक साधना है, मान छुटे विनम्रता पायो।
सभी जीवों को प्रेम डौरी सूं जोड़ो, सभी में उस ईक को पायो।। आते हैं और –

४ राजा से मिले निर्धन से मिले, भिक्षा को भिक्षा ही जान।
सहज सत मार्ग में, सभी समान ले तूं जान।। आते हैं और –

५ निर्धन धनवान, मोक्ष की राह पर ईक समान।
आत्म जाग्रति, मुक्ति पाना अधिकार ईक समान।। आते हैं और –

६ भिक्षा से प्रतिष्ठा का भेद गया, तब मिलता पद निर्वाण।
आत्म अभिमान त्राहित होत, सदगुरू चरण में निर्वाण।। आते हैं और –

७ आत्म मन वश ना डौले, जे पास सार सुरति नाम।
मन माया तरंग मिटे, जे सुरति में सार नाम।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – ३५ (भाग ८)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ कैसी काया कैसी माया, प्राणों का भेद ले जान।
सुरति निरति मेल हो कैसे, कौन पुरूष का ध्यान।। आते हैं और –

२ मन माया है काया, निरति पवन हैं प्राण।
सतगुरू का ध्यान करो, परमपुरूष ले जान।। आते हैं और –

३ कैसी कुण्झी किसका ताला, कौन लगावनहारा।
कौन स्थान सुरति लागे, कौन पार लगावनहारा।। आते हैं और –

४ ईच्छा तृष्णा से मन बना, सहज मार्ग गति लो कैसे।
सार नाम सतपुरूष वासा, सतगुरू ही साहिब मान लो तैसे।। आते हैं और –

५ जन्म रोग मृत्यु का लक्ष्ण जानों, बिन पूर्ण सतगुरू जान लो तुम कैसे।
महिलाओं की सहनशीलता पुरूषों से अधिक, मान लो तुम कैसे।। आते हैं और –

६ मोह का तीर सुरति सूं तोड़ो, जैसे पंखुड़ी गुलाब।
हर वस्तु सुंदरता खोती है, आत्म नहीं पंखुड़ी गुलाब।। आते हैं और –

७ मोह का तीर प्रेम सूं तोड़ो, छोड़ो जग की आस।
जग माया सबै भरमाये, जागे ना पीव मिलन की आस।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – ३६ (भाग ६)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ धन यश कीर्ति से प्यार कैसा, जो पल में फीके हों।
ज्ञान प्रेम सत मुल्यवान जानो, प्रेम आनंद ना फीके हों।। आते हैं और –

२ आज्ञा चक्र में आत्म वासा, सार सब्द से चेतन होये।
सुरत कमल सतगुरू वासा, मूल सब्द सूं चेतन होये।। आते हैं और –

३ निजघर की सुधि कोई ना पावे, जहां से सब हंसा हैं आये।
पूर्ण सतगुरू बात ना बनती, जो सार नाम जहाज संग हैं लाये।। आते हैं और –

४ हर चक्र में देवों का वासा, जो भेद अति है प्यारा।
पूर्ण सतगुरू जे मिले, जानो भेद अति है न्यारा।। आते हैं और –

५ सगुण निर्गुण किसको ध्याऊँ, कौन पार उतारा रे।
निरंकार जग भरमाये, वोहि ऊँ औंकार रे।। आते हैं और –

६ ऋषि मुणि और योगी यति, बरसों बरस ध्याये रे।
राज योग को भौग भौग कर, मृत्यु लोक लौट आये रे।। आते हैं और –

७ सगुण निर्गुण मन की पूजा, मिले निरंकार द्वारा रे।
बिन परमहंस वे नाम शरणी आये, मिले ना मोक्ष द्वारा रे।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – ३७ (भाग १०)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ आत्म मन से डिगे ना डौले, जे पास सार सुरति ना।
मान सम्मान आशा तृष्णा, ये सब मन के हैं बाण।। आते हैं और –

२ बिन सतगुरू गुप्त नाम नांहि, आना जाना छुटे ना कोई।
मन के वश तीन लोक हैं, आपे ही राजा मन होई।। आते हैं और –

३ मन बने दास वे नाम जे पास, गुप्त नाम ही सच्चा बाण।
घट घट वासा वे नाम सब्द का, पल में साधक पाये निर्वाण।। आते हैं और –

४ हरि ही मन वह ही निरंझन, कैसे तरे कोई पार।
दोनों की ईक जाती है, जैसे आत्म सतपुरूष की सुरत डौर।। आते हैं और –

५ वे नाम तन मन से तोड़ी, सतपुरूष सूं जोड़ी तार।
सब जग हंसा नहीं कोई दूजा, किस से तोड़े तार।। आते हैं और –

६ हम कहां चंगे प्यारे सभी हैं, बुरा मत जानो कोये।
सब घट वासा सात सुरति का, निरति मिल सुरति आत्म होये।। आते हैं और –

७ सब घट हरि सार सुरति का वासा, कोई घट खाली नांहि।
सार सुरति ह्रदय निरति श्वांस में, दोनों बिन आत्म नांहि।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – ३८ (भाग ११)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ वे नाम की दात पा कर, मन माया लीजे जान।
सत संगति में आई के, मन आत्म की होत पहचान।। आते हैं और –

२ गारि आई एक प्यारो, खर जान नहीं धरो ध्यान।
खर निःअक्षर का मेल ना, सुरति निःअक्षर का बाण।। आते हैं और –

३ स्तूति निंदा से काम कुछ नांहि, मन के भाव इन्हें तूं जान।
सुरति सूं सबै एको जानो, निज की होत पहचान।। आते हैं और –

४ दिन चार का खेल प्यारो, मत करो गुमान।
सतगुरू पा कर खाक बनो, तो निज को जागा जान।। आते हैं और –

५ निंदक बिन तीन लोक हों कैसे, जहां निंदा स्तूति महान।
सत्य जहां पर झूठ वहां है, अच्छे बुरे की पहचान।। आते हैं और –

६ खोना पाना आदत जीव की, सब इसी में रमे जान।
सतगुरू शरणी सब ये छूटे, सतगुरू शरणी महान।। आते हैं और –

७ मांगना पाना और खो जाना, यही मन माया पहचान।
अधिक थोड़े दोनों से दुखी, सबै मन तरंग जान।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – ३६ (भाग १२)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ मन गया मान गया, जब संग मूल सुरति नाम।
दोनों का संग अब छूटा, जब संग में अमृत नाम।। आते हैं और –

२ साहिब बिन मुख बोलें कैसें, साधक फिरे लिये प्यास।
सब वेदना सुरति में धारें, साहिब सुरति के दास।। आते हैं और –

३ सतगुरू साहिबन मुख हैं, सतगुरू करें साहिबन महिमां बखान।
सतगुरू के जो चरण शरण में आया, उसी ने पाया निवार्ण।। आते हैं और –

४ बिरहन रोवे हर पल हर छिन, सतगुरू सूं मिली ना दात।
अवसर जब बीत गया तो, रोवत मिले ना दात।। आते हैं और –

५ हर जीव फंसा माया में, पूर्ण मुक्ति की सोचे ना बात।
बिन वे नाम दात पाये, कैसे जायें सतलोक दरबार।। आते हैं और –

६ दुख का सागर तीन लोक है, सुख सागर सतनाम।
सतगुरू दात बिन पार ना कोये, सुरत सब्द महान।। आते हैं और –

७ तन मन माया, त्रिलोकि निरंझन जान।
इनको तजे बिन, ना हो निज पहचान।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – ४० (भाग १३)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ जहां डर वहां प्रेम हो कैसे, डर तो मन का अंग।
डर से प्यारे सुरति की दूरी, डर प्रेम का ना संग।। आते हैं और –

२ जैसा भोजन वैसा मनवा, मन बने बलवान।
तीन लोक खर अक्षर के, भोजन इनकी तान।। आते हैं और –

३ सत्त रजस तमस के गुण, भोजन से प्रकटें आन।
तीन लोक तीन ही गुण, मन के अंग इन्हें तूं जान।। आते हैं और –

४ हर नर भूला आत्मिक होना, नहीं करत आत्म भौज पहचान।
गुप्त वे नाम आत्मिक है भौजन, सतगुरू सूं मिलता दान।। आते हैं और –

५ पारस सुरति सतगुरू पासा, मिटे तो पावे दात।
मान तजे बिन बात ना बनती, कोई बिरला पावे दात।। आते हैं और –

६ सतगुरू सब्द सुमिरन से ही, सब दुखों का नाश।
सात द्वीप नौ खण्ड में, गुप्त सब्द पे राखें आस।। आते हैं और –

७ सात कमल हर तन में जानों, अष्टम कमल की महिमां महान।
अष्टम चक्र तक श्वांसा जावे, सुरत कमल स्थान।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – ४१ (भाग १४)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ ईंगला पिंगला सुश्मिना भूजें, सुरति का संग महान।
सुरत कमल में सांचा सतगुरू, सुरति में सब्द महान।। आते हैं और –

२ नाम रूप नैनन हंसा जो पावे, जहां चाहे उड़ जावे।
सतगुरू संग सदा वो पावे, लोक लुकांतर सैल को जावे।। आते हैं और –

३ सात कमल का भेद सब जानें, अष्टम कमल बिरला कोई कोई।
बिन सतगुरू कोई भेद ना पावे, भक्ति द्वार जाये कोई कोई।। आते हैं और –

४ सकल पसारा मेट कर प्यारे, सुरति में सतगुरू ध्यान।
बिन सुरति पूर्ण बात ना बनती, जैता करो ध्यान।। आते हैं और –

५ ना रब में ना तीर्थ दिठया, ना रोज़े कलमे नमाज़े।
बुल्लेशाह नूं मुर्शद मिलया, अंदरू रब लखाया।। आते हैं और –

६ प्राण ध्यान क्रिया से पारा, सहज समाधि लखावे।
द्वार ना रूंधें पवन ना रोकें, अनहद धुन ना उलझावे।। आते हैं और –

७ बिन देखे ध्यान हो कैसे, कैसे फूल खिल पावें।
ध्यान मूलम सतगुरू रूपम, पूजा चरण सुरत लगावे।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – ४२ (भाग १५)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ पुरूष कहो तो पुरूष नांहि, वह पुरूष 'स्त्री–पुरूष' है नांहि।
शब्द कहो तो शब्द वह नांहि, शब्द हुआ दो टकराने के मांहि।। आते हैं और –

२ नाम कहो तो नाम ना ताका, नाम धरा ५२ अक्षर माया का।
वो अनाम निःअक्षर के मांहि, निःअक्षर भेद कोई जानत नांहि।। आते हैं और –

३ सब संतों का वास तहां है, काल अकाल ना पावत पारा।
ताकि भक्ति सतगुरू बिन नांहि, नाम पावे भव छूटे जन्म ना होई।। आते हैं और –

४ आत्म तत्व जाने बिना, ज्ञानी ना जानो कोये।
बिन देखे उस देस को, बात ना जाने कोये।। आते हैं और –

५ तन से नांहि मन से नांहि, सुरति से जाना है।
नां हाथी है ना घोड़ा है, विहंगम चाल सूं जाना है।। आते हैं और –

६ अंकुरी नर जो होये सतगुरू प्यारा, लागे जगत से न्यारा।
मूल नाम पा होये साहिब जी, बृहंगा मत से भव सागर पारा।। आते हैं और –

७ बार बार ना जग आवन होई, दात प्यारी संग जे होई।
काल अकाल तहां दुख नांहि, निःअक्षर दात जे संग होई।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – ४३ (भाग १६)

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

१ निरंकार शब्द माया रूप, ५२ अक्षर जगत पसार।
निःअक्षर है जगत से पारा, चोथे लोक ताका पसार।। आते हैं और –

२ पूजा पाठ ग्रंथ कहानी, सबै जीव मति भरमानी।
भक्ति बनी तृष्णा पूर्ती साधन, पावे वो जो जग छुट जानी।। आते हैं और –

३ अमर सब्द पाई मन वश करे, सब्द सुरति ही पार लगाई।
सहज योग हो पार कराई, भौर ना जग में आई।। आते हैं और –

४ विदेह नाम सोई सुरति जगावे, सब्द बाण सूं पार हो जाई।
मन माया सबै मिट जाई, तीन लोक से पार हो जाई।। आते हैं और –

५ पूर्ण सतगुरू खोजि, अमृत दात से पार।
झूठी देह से पार संत सब्द निज सार।। आते हैं और –

६ सतगुरू स्नेही जो साधक, मन माया सूं पार।
सतगुरू सुरति में बसे, जन्म मरन से पार।। आते हैं और –

७ वे हूं ने सहज अमृत दात को पाकर, साहिबन दर्शन पायो रे।
खून हुआ है जग माया का, तोहि दर्शन पायो रे।। आते हैं और –

आते हैं और खो जाते हैं, निज को पहचान ना पाते हैं।
जो चले गये वह संग तेरे, चार तन का गहरा नाता है।। आते हैं और –

–0–

भजन – ४४ (भाग १)

वे हूं ने आत्म शमा जला कर, मन की जोत बुझा दी रे।
खून हुआ है अरमानों का, तो ही आत्म जागी रे।। वे हूं ने –

१ इक दिन प्यारो सुरति में मैंने, साहिबन दर्शन पाया था।
सतगुरू का रूप धार कर, दास को जगाने आये थे।
सुरति पल में चेतन कर, सच्ची राह पे लाया था।। वे हूं ने –

२ जा मंज़िल को हे मन मेरे, माया साथी साथ है तेरे।
प्यार हुआ था सुरति तुझ संग, याद ये मैने भुला दी है।
खून किया आत्म का मेरी, तो भी तुझे दुआ दी है।। वे हूं ने –

३ लाखों जन्म से मन की आत्म ने, जो तस्वीर बनाई थी।
आज उसे आत्म सुरति से, उसे ही है मिटा दिया।
खून हुआ है आत्म का मेरी, तो भी तुझे दुआ दी है।। वे हूं ने –

४ कोई नहीं अपना इस जग अंदर, केवल भरम ये सारा है।
रिश्ते नाते जानो ये धोखा, झूठा सगल पसारा है।
लाखों जन्मे से आत्म भटकी, मन तरंग ने मारा है। वे हूं ने –

५ सब कुछ झूठा इस जग अंदर, सार नाम दात वे हू संग लाई रे।
मूल दात साहिब से पाकर, जाना खेल ये सारा रे।
लाखों जन्म से निज घर भूला, तो भी तुझे दुआ दी रे।। वे हूं ने –

६ मन हर पल कल में ले जाता, इस पल में रहना भूला रे।
पूर्ण सतगुरू बिन बात ना बनती, वे नाम जहाज संग लाया रे।
सोया पड़ा हर नर जग अंदर, तो भी तुझे दुआ दी रे।। वे हूं ने –

७ कंई युग बीते इस जग अंदर, कर्म धर्म जाल पसारा रे।
प्रेम सुरति का अंग ना जाना, सुरति आत्म धारा रे।
पूर्ण सतगुरू से भेद को पाकर, तो भी तुझे दुआ दी रे।। वे हूं ने –

८ ईच्छा आकांक्षाओं से बना मन प्यारो, सहज मार्ग अति प्यारा रे।
निःअक्षर सब्द सतपुरूष है वासा, साहिब लोक अति प्यारा रे।
आत्म ने तन से निज को बांधा, तो भी तुझे दुआ दी रे।। वे हूं ने –

६ सब्द विदेह साहिबन सतगुरू जी वासा, सुरति सरूपी शिष्य वासा रे।
सुरति सब्द में लीन्हो वासा, प्रेम जोत प्रकट नैनन में रे।
विदेह मुक्ति की डौरी पकड़ी, तो भी तुझे दुआ दी रे।। वे हूं ने –
।
वे हूं ने आत्म शमा जला कर, मन की जोत बुझा दी रे।
खून हुआ है अरमानों का, तो ही आत्म जागी रे।। वे हूं ने –

–0–

भजन – ४५ (भाग २)

वे हूं ने मोह माया का मान जलाकर, सुरति की जोत जगा दी रे।
खून हुआ है मन का प्यारो, तो ही सुरति जागी रे ।। वे हूं ने –

१ कोई कोई मनवा भेद को जाने, हंसा सतलोक वासी रे।
लाखो जन्मों से भूल हुई, आत्म सुरती ना जानी रे।
मन की भूल ना जानी रे, आत्म ने तुझे पुकारा रे।। वे हूं ने –

२ कोई कोई प्यारा भेद को जाने, हम निजधाम सूं आये रे।
आत्म निजरूप को भूली, मन की चाल सूं ना पहुंचे रे।
सोई पड़ी आत्म हर नर की, तांहि तुझे पुकारा रे।। वे हूं ने –

३ बिन सतगुरू पूर्ण जग कुछ नांहि, सत की जोत जगा लो रे।
धर्म जात का भेद मिटा कर, सतगुरू शरणी आ जाओ रे।
विरह प्रेम की जोत जलाकर, सतगुरू जहाज चढ़ आओ रे।। वे हूं ने –

४ कोई नहीं ऐसा आत्म जो बांधे, आत्म निज को बांधा रे।
तन को ही निज रूप है जाना, जानो दुख का कारण रे।
लाखों जन्म काल संग काटे, तो भी तुझे पुकारा रे।। वे हूं ने –

५ झूठे जग के रिश्ते नाते, केवल काल पसारा रे।
हर बंधन ईक धोखा जग में, मन मान जाल पसारा रे।
हर ओर अंधियारा जग में, तो ही तुझे पुकारा रे।। वे हूं ने –

६ काया नाम सबै गुण गावें, विदेह नाम कोई कोई प्यारा रे।
विदेह नाम गावेगा सोई, जिसका पूर्ण सतगुरू प्यारा रे।
हर युग खाया काल सूं धोखा, तो ही तुझे पुकारा रे।। वे हूं ने –

७ साहिब जी सतपुरूष सतलोक तो एक हैं, एक ही सकल पसारा रे।
एक साहिब जी मूल जोत हैं, दूजा ये काल पसारा रे।
मन माया ऐसा भरमाया, तो ही तुझे पुकारा रे।। वे हूं ने –

८ मरते जीते कंई युग बीते, मरन ना जाना कोई रे।
ऐसी मरनी कोई कोई मोआ, बहुरि ना मरना होई रे।
मूल सब्द बिन सतगुरू नांहि, सांची बात ये जानी रे।। वे हूं ने –

९ तन थिर मन थिर सुरति निरति थिर होये, उस पल को कल्प ना पावे रे।
तन से नांहि मन से नांहि, सुरति से सब होई रे।
आत्म खोई हर पल नर की, तोहि तुझे पुकारा रे।। वे हूं ने –

१० सात द्वीप नौं खंड में, सतगुरू फैंकी सुरति डौरी रे।
तां पर हंसा ना चढ़े तो, सतगुरू कहां से दोषी रे।
हर तन में दीपक जरे, लखे कोई कोई नर न्यारा रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने मोह माया का मान जलाकर, सुरति की जोत जगा दी रे।
खून हुआ है मन का प्यारो, तो ही सुरति जागी रे ।। वे हूं ने –

—0—

भजन – ४६ (भाग ३)

वे हूं ने विदेह नाम को पाकर, आत्म की जोत जगा दी रे।
खून हुआ है आशा तृष्णा का, तो ही सुरति जागी रे।। वे हूं ने –

१ आज्ञा चक्र में आत्म का वासा, सतगुरू बात बताई रे।
सुरत कमल सतगुरू का वासा, मूल सब्द सूं बात बन जाई रे।
काम क्रौध ने ऐसा भरमाया, तांहि तुझे पुकारा रे।। वे हूं ने –

२ कैसी काया कैसी माया, प्राण सुरति की धारा रे।
मन मान सब छुट गया, जब सुरति में सब्द धारा रे।
सतगुरू दाता सब्द सुरति का, वो ही पार उतारा रे।। वे हूं ने –
३ सुरति निरति का मेल कराता, मूल सब्द प्यारा रे।
कैसी कुण्झी किस का ताला, सुरति से तुझे पुकारा रे।
सब्द ही कुण्झी सब्द ही ताला, वह ही पार उतारा रे।। वे हूं ने –

४ हर पल भजो सार नाम को, तजो जगत से नेह रे।
सुरति बिन कुछ अपना नांहि, अपनी सगी ना देह रे।
दया धर्म सुरति नांहि, तो ही तुझे पुकारा रे ।। वे हूं ने –

५ संत मिले सुख की धारा बहे, दुष्ट ना जानो कोई रे।
सेवा में रहो संतन की हर पल, जन्म कृतार्थ होय रे।
समुंद्र समाना बूंद में, बिन सार सब्द कैसे होये रे।। वे हूं ने –

६ आपा मेटे साहिबन मिले, पीव में जा समाये रे।
विरह विराग प्रेम जोत जागे, सतगुरू भक्ति पार लगाये रे।
सब्द मांहि साहिब मिलें, नांहि आवे नांहि जाये रे।। वे हूं ने –

७ बिन अनुराग ना पावही, कौटिन कर्म करे जे कोये रे।
ये दुनियां दो पल की प्यारो, मत कर या सूं हेत रे।
सतगुरू चरणन सुरति रहे, पल में पार हो जाये रे।। वे हूं ने –

८ प्रेम भक्ति में जो रचि रहे, मोक्ष मुक्ति फल पाये रे।
सब्द मांहि पूर्ण वासा हो, कहीं आवे नहीं जाये रे।
पलकों की चिक डारि के, साहिब को ले रजाये रे।। वे हूं ने –

९ सतगुरू रूप सुरति बसे, बोल अमृत बैन रे।
तो ही सांचा ऊंचा जानिये, जिनका हर ईक अंग नैन रे।
सतगुरू सुरति दरबार में, बिन नैनन दीदार रे।। वे हूं ने –

१० जा सुरति प्रेम जोत ना जरे, सो सुरति मान की तान रे।
जैसी फूंकनी लोहार की, सांस लेत बिन प्राण रे।
सतगुरू सब्द जब मिले, विष तन अमृत होये रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने विदेह नाम को पाकर, आत्म की जोत जगा दी रे।
खून हुआ है आशा तृष्णा का, तो ही सुरति जागी रे।। वे हूं ने –

–0–

भजन – ४७ (भाग ४)

वे हूं ने विदेह नाम को पाकर, आत्म की जोत जगा दी रे।
खून हुआ है आशा तृष्णा का, तो ही सुरति जागी रे।। वे हूं ने –

१ हर नर निज रूप को भूला, मन की चाल पहचानी ना।
सोई पड़ी आत्म हर नर की, निज की महिमां जानी ना।
कौन जगाये इस आत्म को, तांहि तुझे पुकारा है।। वे हूं ने –

२ बिन पूर्ण सतगुरू कुछ नांहि मिलता, मूल सब्द सूं जोत जगा ले रे।
धर्म जात का भेद मिटा कर, सतगुरू शरणी आ जाओ रे।
विरह विराग की जोत जगा कर, सुरति जहाज चढ़ जाओ रे।। वे हूं ने –

३ कोई नहीं जग में आत्म जो बांधे, आत्म निज को बांधा रे।
तन को ही निज अंग है जाना, यही दुख का मूला रे।
लाखों जन्म संग काल के काटे, तांहि तुझे पुकारा रे।। वे हूं ने –

४ झूठे जग के रिश्ते नाते, यही तो बंधन सारा रे।
हर बंधन इक धोखा जग में, मन मान काल पसारा रे।
हर ओर अंधेरा जग में, तांहि तुझे पुकारा रे।। वे हूं ने –

५ काया नाम सबै गुण गावें, विदेह नाम कोई प्यारा रे।
विदेह नाम गावेगा सोहि, जो सतगुरू का प्यारा रे।
काल ने हर युग में सताया रे, तांहि तुझे पुकारा रे।। वे हूं ने –

६ सतपुरूष सतलोक तो एक हैं, एक ही सकल पसारा रे।
साहिब जी तो मूल जोत हैं, निरंकार का सब पसारा रे।
मन माया सबै भरमाया, तांहि तुझे पुकारा रे।। वे हूं ने –

७ जमते मरते कंई युग बीते, मरन कोई ना जाना रे।
सतगुरू सूं दात ना पाई, आवागमण ना छूटा रे।
हर नर सोया इस जग में, तांहि तुझे पुकारा रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने विदेह नाम को पाकर, आत्म की जोत जगा दी रे।
खून हुआ है आशा तृष्णा का, तो ही सुरति जागी रे।। वे हूं ने –

–0–

भजन – ४८ (भाग ५)

वे हूं ने विदेह नाम को पाकर, आत्म की जोत जगा दी रे।
खून हुआ है आशा तृष्णा का, तो ही सुरति जागी रे।। वे हूं ने –

१ हर पल श्वांस श्वांस में, सब्द सूं जोड़ो डौरी रे।
तां पर हंसा कैसे चड़े, बिन सार नाम डौरी रे।
प्रीत प्रेम ना जाना जग ने, तांहि तुझे पुकारा रे।। वे हूं ने –

२ बार बार यमपुर है जाता, बिन अमृत दात अति दुख पाये रे।
लाखों में सोहि पावे दात को, जापे सतगुरू कृपा होये रे।
तन से नांहि मन से नांहि, श्वांस सुरति नाम संग होई रे।। वे हूं ने –

३ साधो सो सतगुरू मोहे भावे, जिस दर्शन में साहिबन दरशे रे।
पल में मन माया ले जावे, सुरति में दर्शन दे जावे रे।
सब्द सुरति निरति मिल आत्म जागे, मन माया मिट जावे रे।। वे हूं ने –

४ सब्द पाई मन वश करो भाई, सांचा सहज योग यही कहलाई रे।
संतन सब्द निज सार मेरे भाई, मन झूठा झूठी तन देहि रे।
सार सब्द सुख दुख ले जावे, सब्द में सुरति आन समावे रे।। वे हूं ने –

५ सब्द सूं सुरति निरति जोड़ो, मूल सुरति बन जाये रे।
सुरति वैरागी मन माया त्यागी, साहिबन संग जा लागी रे।
विदेह नाम असली हीरा, राम रत्न पाये कोई प्यारा रे।। वे हूं ने –

६ हीरा पायो सुरति जागी मेरे भाई, उसे बार बार मत खोलो रे।
रिंद जाम से नांहि मदवा गिन, सुरति से मदवा पी बिन तोले रे।
हर जीव सोया अपने घट में, मूल सब्द दे जगावे सतगुरू रे।। वे हूं ने –

७ इस घट अंदर अनहद गरजे, सुरति बाण फुहारा रे।
कहत साहिब सुनो मेरे प्यारो, उसी में रहत राम प्यारा रे।
सतपुरूष बिन और नहीं दूजा, युगन युगन का संग हमारा तुम्हारा रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने विदेह नाम को पाकर, आत्म की जोत जगा दी रे।
खून हुआ है आशा तृष्णा का, तो ही सुरति जागी रे।। वे हूं ने –

–0–

भजन – ४६ (भाग ६)

वे हूं ने सहज अमृत दात को पाकर, साहिबन दर्शन पायो रे।
खून हुआ है मन माया का, तो ही दर्शन पायो रे।। वे हूं ने –

१ सहज सहज सब कोई कहत है, सहज चीन्हें कोई कोई प्यारा रे।
जग में बिरला जाने सहज को, सहज होये बिन कोई ना पारा रे।
तन से नांहि मन से नांहि, मूल सब्द सहज बनावे रे।। वे हूं ने –

२ मधुर मुरली बाजत अखंड सदा से, सब्द लोक प्रेम झंनकार रे।
प्रेम हद (महां सुन्न) पार जब भाई, अमर लोक की हद पुनि आवे रे।
लाखों जन्म से पूर्ण संत ना पायो, यही काल पसारा रे।। वे हूं ने –

३ प्यारो सो सतगुरू जग को भावे, जिन दर्शन में साहिब दर्शन रे।
पल में मन माया छुड़ावे, सुरति में दर्श दिखावे रे।
सब्द सुरति निरति मिलावे, आत्म जागे मन मान मिट जावे रे।।

४ सब्द सुरति निरति जोड़ता, आत्म जोत बन मान मिटावे रे।
सुरति वैरागी मन माया त्यागी, काल जाल मिट जावे रे।
विदेह नाम असली हीरा, राम रत्न धन कहलावे रे।।

५ राम रत्न पूर्ण हीरा जानो, जन्म जन्म की मैल मिटावे रे।
हर जीव सोया पड़ा जन्मों से, बिन पूर्ण दात कैसे जागे रे।
वे हूं को मिलकर दात को पालो, विदेह दात साहिबन की लेकर आया रे।।

६ इस घट अंदर अनहद गरजे, सुरति बाण फुहारा रे।
कहत वे नाम जो सुने प्यारो, इसी में साहिबन वासा रे।
सतपुरूष बिन और ना दूजा, जुगन जुगन का संग हमारा रे।।

७ सहज के संग से सहज हो जाओ, विदेह नाम बिन सहज हो कैसे रे।
साहिब सतगुरू सहज, आप सहज जे होये रे।
तीनों सहज जब मिलें, अमृत धार बह जावे रे।।

वे हूं ने सहज अमृत दात को पाकर, साहिबन दर्शन पायो रे।
खून हुआ है मन माया का, तो ही दर्शन पायो रे।। वे हूं ने –

—0—

भजन – ५० (भाग ७)

वे हूं ने सहज अमृत दात को पाकर, साहिबन दर्शन पायो रे।
खून हुआ है मन माया का, तो ही दर्शन पायो रे।। वे हूं ने –

१ औषध मोल सतगुरू ना मांगे रे, भेद जाने कोई साधक प्यारा रे।
सुर नर मुणि जन पीर औलिया, कोढ़ बिन संग ना इनके रे।
सच्चा साधक सर्व रंग रंगेया, ना मिटने वाला रंग चढ़या रे।।

२ पत्ते फल फूल एक से आते, सहज संग सहज लहलहाते रे।
साधक विदेह नाम को पाकर, सहज हो मन से पार हो जाता रे।
मूल सब्द सुरति में प्राण संग, सहज सुरति सूं अमरपुर जावे रे।।

३ सहजे आकर कुटिया अंदर, फल फूल लिए चल दिये रे।
वे हूं भी उनके संग हो लिए, महां सुन्न तक संग निभाया रे।
सहज सुरति सूं वचन सहज से, फिर आने का भेद बताया रे।

४ दूजे दिन सहज हो साहिब जी, सहज ही वचन निभाया रे।
पूर्ण कुटिया जगमगा गई, निजरूप में साहिबन दर्शन पाया रे।
अमृत सब्द की दात को देकर, सहजे संत बनाया रे।।

५ कंई रूप सतगुरू के धार के, वे हूं संग रास रचाई रे।
खिलोने मानिंद वे हूं को फैंका, पल में आन संभाला रे।
प्यार की लीला ऐसी देखी, हर ओर सतगुरू संग पाया रे।।

६ सहज सहज सब कोई कहे, सहज चीन्हें जिन सतगुरू पूर्ण पाया रे।
तांहि सहजे सहज साहिब जी मिलें, सुरति निरति ईक हो आत्म होये रे।
सब्द की चोट पड़ी मन मेरे पे, भेद गया तन मन सारा रे।। वे हूं ने –

७ बार बार मानस तन ना पाई, तन पा के इसे गंवाया रे।
कोई कोई प्यारा दात को पावे, अमृत नाम बिन नहीं पारा रे।
नाम बिन जीवन व्यर्थ गवायो, तांहि तुझे पुकारा रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने सहज अमृत दात को पाकर, साहिबन दर्शन पायो रे।
खून हुआ है मन माया का, तो ही दर्शन पायो रे।।

—0—

भजन – ५१ (भाग ८)

वे हूं ने साहिबन दर्सन पाकर, निज घर जगह बना ली रे।
खून हुआ है काल जाल का, तो ही आत्म जागी रे।। वे हूं ने –

१ सहज आप सतपुरूष हमारे, जहां से हंसा तीन लोक में आये रे।
अमर लोक ही सहज लोक है, वो ही देस हमारा रे।
निज को बच्चा रूप बना लो, अमृत सब्द से बात बन जाये रे।। वे हूं ने –

२ औंकार को मत सहज तुम जानो, वह ही मन पसारा रे।
हमारा उद्दगम औंकार नांहि, सतपुरूष अमर लोक प्यारा रे।
सतपुरूष ही अस्तित्व हमारा, अमर लोक देस प्यारा रे।। वे हूं ने –

३ विदेह नाम स्वांसा सुरति में डालो, सहज रूप पा जाओ रे।
सहजता में रहना स्वभाव हर हंसा का, विदेह नाम से बात बन जाये रे।
आत्म हंसा सतपुरूष की ज्योति, सुरति में रहना सहज बनाये रे।। वे हूं ने –

४ नांहि निज स्वभाव में बहती, अपने उद्दगम से जुड़ी सहज कहलाये रे।
सार सब्द उद्दगम से जोड़ो, सहज संग मिलाये रे।
सहज आत्म सहज स्वभाव हमारा, नदी बन पार हो जाओ रे।। वे हूं ने –

५ बिन सार नाम नहर सम बहते, खेतों में ही खो जाये रे।
नहर नदी से मिल जाये तो, साहिब का अंश कहलाये रे।
कोई कोई प्यारा नदी से मिलता, बने साहिब का प्यारा रे।। वे हूं ने –

६ बिन सतगुरू का संग किये, जीव नहर सम मिट जाये रे।
मन मान नहर समान प्यारो, सार नाम हंसा घर ले जाये रे।
जिसने साहिबन दात को पायो, साहिबन में जा समाये रे।। वे हूं ने –

७ सोच विचार से दूर रह, सुरति में रहना निज सार रे।
मन से चलना छोड़ प्यारे, सहज भाव में रहना सीख रे।

सतपुरूष ही हमरा उद्दगम प्यारो, औंकार तो मन का रूप रे।। वे हूं ने –

८ सार नाम से भटकी आत्मां जागी, बाण समान मन को छेदे रे।
मन मान की हद महां सुन्न है, सतलोक की हद उस पार रे।
सतगुरू प्यारा मन वस करे, सहज योगी कहलाये रे।। वे हूं ने –

६ सुरति जागी मन माया त्यागी, मूल नाम में सुरति समाई रे।
कहें संत सुनो हंसा प्यारो, विदेह नाम ही पार कराये रे।
हर घट अंदर सहज सुरति समाई, उसी में आप समायो रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने साहिबन दर्सन पाकर, निज घर जगह बना ली रे।
खून हुआ है काल जाल का, तो ही आत्म जागी रे।। वे हूं ने –

–0–

भजन – ५२ (भाग ६)

वे हूं ने निज को सहज बना कर, सहज संग जोत जला ली रे।
खून हुआ है मन माया का, तो ही सहज को पाया रे।। वे हूं ने –

१ बिन सतगुरू आत्म है सोई, बिन जागे पार ना कोई रे।
भक्ति भेद जे जानना प्यारे, पल पल सरको सतगुरू ओर रे।
सार सब्द ले सत्संग आकर, पहुंचो सच्चे घर निजधाम रे।। वे हूं ने –

२ मोक्ष पद पाना जे प्यारे, बाहर नैना क्युं खोले रे।
सहज अवस्था पा लो प्यारो, सहज संग जोत जगा लो रे।
सहज को पाकर सहज कहालाओ, उसी से पार हो जाओ रे।। वे हूं ने –

३ तेरा साहिब मूल नाम में, क्युं डूंढें चहुं ओर रे।
बिन सब्दे जग भूला फिरे प्यारो, जन्में मरें बारम्बार रे।
मोक्ष पद पाने के लिए, भीतर के पट खोल रे।। वे हूं ने –

४ निःअक्षर सब्द पाई मन वश करें, सहज योग कहलाये रे।
सतगुरू सब्द निज सार है, मत मोह कर झूठी देही रे।

निज को हर नर भूला फिरे, दुख सुख लियो उलझाई रे।। वे हूं ने –

५ साहिबन अंश हंसा अविनासी, चेतन अमल सहज सुख रासी रे।
मन माया वश भयो हंसा प्यारा, सार सुरति भेद ना जाने रे।
साहिबन सत्त तीन लोक मिथ्या, जीव तीन लोक औंकार बांधा रे।। वे हूं ने –

६ हंसा सुरति तेरा स्वभाव है, अपने स्वभाव में रहना सीख रे।
मन विचार से मत चलो प्यारो, यही औंकार के बाण रे।
विदेह नाम जब सुरति में तेरी, औंकार जाल छुट जाये रे।। वे हूं ने –

७ कर्मयोग भक्ति ज्ञान योग, सहज योग सुरति बाण रे।
आठों पहर सुरति में जीना, सब सधें ईक साथ रे।
सार सब्द स्वांस सुरति संग, सुरत कमल में साहिबन दीदार रे।। वे हूं ने –

८ कर्म डंढियां छोड़ सहज मार्ग पा, मूल नाम बिन दूरी रे।
सब्द सतगुरू सब्दे चेला, मूल सब्द सतपुरूष का बाण रे।
कोई कोई पहुंचा निजघर अपने, सतपुरूष का अमृत बाण रे।। वे हूं ने –

६ वे हूं मार्ग साहिब कबीर का मार्ग, सहज बन सहज पा जाये रे।
औंकार का मार्ग बंधन मन का, जन्म मरन की धारा रे।
पूर्ण सतगुरू सार सब्द में, पल में होता पार उतारा रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने निज को सहज बना कर, सहज संग जोत जला ली रे।
खून हुआ है मन माया का, तो ही सहज को पाया रे।। वे हूं ने –

–0–

भजन – ५३ (भाग १०)

वे हूं ने मन माया त्याग कर, आत्म जोत जगा ली रे।
खून हुआ है नहर का मेरी, तो ही नदी बन पाई रे।।

१ जो सुख मिलता सार नाम में, वह नहीं किसी और नाम में रे।
सार नाम सतपुरूष सुरति नाद है, औंकार का अनहृद नाद ना रे।
जा के पासा दात सब्द की, स्वांस स्वांस गुण गा पार हो जाये रे।। वे हूं ने –

२ सार नाम सब्द विदेह नाम है, जानो इसे सुरति दात रे।
चौथे राम का भेद बतावे, जो पावे सतपुरूष पा जावे रे।
जन्म मरन का भेद मिट जावे, मोक्ष पद पा जावे रे।। वे हूं ने –

३ ईन्द्रियां जागन के पार चला जो, पंख दे उड़ा नाम के बाण रे।
मीन पपील विहंगम चाल पा, सुरति स्वांस संग आत्म उस पार रे।
ईन्द्री शुद्धता चेतन हो सुरति, पल छिन मोक्ष पा जावे रे।। वे हूं ने –

४ सतगुरू आप ही करता, पर तुम हो नांहि रे।
सतगुरू दर्शन से अस्तित्व रूप, अंग अंग में स्पर्श उसी का रे।
आत्म पूर्ण चेतन हो कर, सतगुरू में आन समाये रे।। वे हूं ने –

५ जाति पाति सतगुरू की नांहि, नांहि ही किसी से वैर रे।
मनुष्य को निज रूप हैं देते, करत ना लागी बार रे।
सुख में सत को भूल जग बैठा, दुख में ना सुने फरियाद रे।। वे हूं ने –

६ नर जग का सोया पड़ा है, उठे ना भजे सतगुरू दात रे।
आशा तृष्णा संग में तेरे, इन्हीं के संग तन तज जाये रे।
आगे तन तूं सामने पावे, उसी में वासा पाये रे।। वे हूं ने –

७ हरि रूठे तो कुछ दुख नांहि, सतगुरू रूठे नहीं पार रे।

हीरा जन्म अनमोल प्यारे, पल पल बीता सब्द बिन जाये रे।
तरवर ज्युं पाति झाड़े, बहुरि ना डाल पर आये रे।। वे हूं ने –

८ जहां आया तहां ही आपदा, जहां संशय अविशवास तहां रोगा रे।
स्वांस सुरति नाम बिन चलता, चारो ओर से घेरे मीत रे।
स्वांस स्वांस सुमिरन करो, सतगुरू खड़े लिये जोत रे।। वे हूं ने –

९ जात पात जंजीर तुम जानो, क्या राजा रंक फ़कीर रे।
सुरत संभाल ऐ ग़ाफ़िला, निज की महिमां जान रे।
सतगुरू का संग तूं कर ले, अमृत दात पल में उतारे पार रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने मन माया त्याग कर, आत्म जोत जगा ली रे।
खून हुआ है नहर का मेरी, तो ही नदी बन पाई रे।।

–0–

भजन – ५४ (भाग ११)

वे हूं ने साहिबन दर्श को पाकर, सतपुरूष से सुरति पाई रे।
आत्म जागी माया त्यागी, निजघर की राह संग पाई रे।।

१ सतगुरू ते सब होत प्यारे, नर से बात कुछ नांहि रे।
मूर्ख राई से पर्वत करे, पर्वत को राई समान करे।
साधक बन घर पुराना ना तजे, सतगुरू संग निजघर पाई रे।। वे हूं ने –
२ गर्भ योगेश्वर सतगुरू बिना, करि हरि की सेव रे।
खाली हाथ रहे इस जग में, बैकुण्ठ से किया बाहर शुकदेव रे।
सतगुरू का संब ईक चाहिये, छूटे काल जाल का फेर रे।। वे हूं ने –

३ कच्चे भांडे से जो प्यारो, कुम्हार का अति नेह रे।
भीतर से पूर्ण रक्षा करे, बाहर से देवे चोट रे।
जागनहारा पल में जागता, सतगुरू चरणन की धूल रे।। वे हूं ने –

४ आज्ञा चक्र अनहृद बाजे, नांहि अनहृद झंकार में रे।
ना मंदिर में ना मस्जिद में, ना काबा कैलाश रे।

यहां वहां फिरे ढूंढता, साहिबन तो तेरे पास में रे।। वे हूं ने –

५ मैं ना रहता विच हृदय में, नां में नाभी पास में रे।
आज्ञा चक्र के अंदर नांहि, नां त्रिकुटि के पास में रे।
स्वांस स्वांस में वासा मेरा, जे सार नाम संग दात रे।। वे हूं ने –

६ सुमिरन में सुरति यूं धारो, ज्युं घाघर पनिहारी रे।
हीले डोले सुरति में सखी, हर पल साहिबन साथ रे ।
आगे पीछे साहिब खड़े, जो मांगे सो देते रे।। वे हूं ने –

७ जागन में सोवन कर प्यारे, सोवन में सुरति लौ लाये रे।
सुरति डौर लागी रहे, तार टूट नहीं पाये रे।
सुरति स्नेही सतगुरू प्यारे, वही अंत करे साथ रे।। वे हूं ने –

८ सतगुरू गाठी ना बांधे भाई, तन समाता सो लेय रे।
आगे पीछे साहिबन जोत खड़ी, जब सुरति तब देय रे।
सुरति से पाना पा चले, सब सूं छोड़ा संग साथ रे।। वे हूं ने –

१० तारी लागी तीन लोक से, पहुंचा निजघर साथ रे।
१६ सूर्य की ज्योति थी संग में, विहंगम चाल की बात रे।
आगे आगे साहिब जी प्यारे, साथ साथ वे नाम रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने साहिबन दर्श को पाकर, सतपुरूष से सुरति पाई रे।
आत्म जागी माया त्यागी, निजघर की राह संग पाई रे।।

–0–

भजन – ५५ (भाग १२)

वे हूं ने अपनी सुरति जगा कर, मान की आग बुझा दी रे।
खून हुआ आषा तृष्णा का, मूल सुरति अब जागी रे।।

१ क्या भरोसा इस देह का प्यारो, पल पल बिन सत जात रे।
स्वांस स्वांस सिमरन करो प्यारो, ओर यत्न कुछ नांहि रे।

सुरत संभाल हे प्यारे हंसा, अपना मूल पहचान रे।। वे हूं ने –

२ वे हूं रोवे देख जगत को, मेरा दर्द ना जाने कोई रे।
मेरा वैरी जग में ईक ना, किस को जाने और रे।
सतगुरू वचन जल रूप प्यारे, बरसे सुरति धारा रे।। वे हूं ने –

३ सुरति का पर्दा खुलता नांहि, बिन विदेह नाम की दात रे।
सुरति स्नेही साहिबा, दे दीदार अंत का यार रे।
मीठा क्या अंगार में, जाहि चकौर रहे चबाये रे।। वे हूं ने –

४ क्षीर रूप सार नाम जानिये, छुरी रूप मन धार रे।
सुमिरन सुरति जगाये कर, मन से कुछ ना बोलो रे।
सतगुरू दर्शन किये, धन्य घड़ी पावे सत्संगा रे।। वे हूं ने –

५ कहन सुनन से न्यारा प्यारो, बेग़म देश हंसों का प्यारा रे।
ईन्द्री पसार मन तरंग प्यारे, सात सुरति भरमावे हर पल रे।
सतगुरू सुरति सार नाम में, निज घर करावे वासा रे।। वे हूं ने –

६ आत्म के लिए सब प्यारे लगते, अपने लिये ले जान रे।
आत्म देख उसी को जान, उसी को देख पहचान रे।
आनंद अटल गिरावट नांहि, छूटे काम क्रौध मद्य् मोह रे।। वे हूं ने –

७ आनंद आत्मां आनंद परमात्मां, आत्म में ही परमात्म रे।
जब परमात्म को आत्म जाने, जीव सच्चा आनंद पा जाये रे।
आत्म साहिब में खो जाती, वो स्थिती वर्णन से बाहरा रे।। वे हूं ने –

८ पूर्ण संत संग पूर्ण आनंद, भरा प्याला पीवत रे।
जो आवे संतन सत्संग में, आनंद का प्याला पीवत रे।
आत्म आनंदमयी चेतन सुखरासी, है अमल अनाश्रित रे।। वे हूं ने –

९ ईन्द्री पसारा रोक ले प्यारे, फिर सब कुछ तेरे पास रे।
सुरति संभाल चले पुनः घर को, कोई साथी संग नांहि रे।
बिन सब्द कोई नांहि पावे, कैता करो उपाये रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने अपनी सुरति जगा कर, मान की आग बुझा दी रे।
खून हुआ आषा तृष्णा का, मूल सुरति अब जागी रे।।

—0—

भजन – ५६ (भाग १३)

वे हूं ने अपनी सुरति जगा कर, मान की आग बुझा दी रे।
खून हुआ आषा तृष्णा का, मूल सुरति अब जागी रे।।

१ शिष्य कपड़ा सतगुरू धौबी करा, साबुन जानो सतपुरूष आप रे।
सुरति सिला पर धौवता, निकसे रंग अति प्यारा रे।
निज के भ्रम अवगुण गये, सुरति ने दिया निखार रे।। वे हूं ने –

२ देहि मोहि विदेह मेरे प्यारो, साहिबन सुरति के रूप रे।
हर लोक में रमी रहे, निखरे राग हो रूप रे।
काम क्रौध लोभ मोह गयो, सब छोड़ सुरति से जोड़ रे।। वे हूं ने –

३ सार नाम सत जग झूठा प्यारो, सुरत सब्द पहचान रे।
चतुराई जे नांहि छुटसी, सुरत सब्द का संग कहां रे।
सुरति स्नेही ढूंढ ले, मिटे लगी मन पीड़ रे।। वे हूं ने –

४ सुरति समानी निरति में, निरति बही निराधार रे।
ईन्द्री अंग को छोड़ कर, सुरति संग उर्दग़ामी रे।
वायु रूप दस स्थानों से, दसवां द्वार देती खोल रे।। वे हूं ने –

५ जाग्रत बुद्धि प्रवाह से काम, स्वपन सहज और साक्षी रे।
सुशुप्ति चेतन नाभी में प्यारे, मूल कुछ याद ना रहता रे।
खोजत फिरूं भेद सुरति का, कोई ना भरता हामी रे।। वे हूं ने –

६ ध्यान मूलम सतगुरू रूपम, पूजा मूलम सतगुरू पादकम रे।
मंत्र मूलम सार नाम है, मोक्ष मूलम कृपा सतगुरू रे।
वे नाम जी कहें सतगुरू कृपा बिन, काम सिद्ध नांहि होवे रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने अपनी सुरति जगा कर, मान की आग बुझा दी रे।
खून हुआ आषा तृष्णा का, मूल सुरति अब जागी रे।।

—0—

भजन – ५७ (भाग १४)

वे हूं ने सत सुरति को पाकर, सहज सुरति जोत जगा ली रे।
खून हुआ है मन माया का, तो ही अमी रस चाखी रे।। वे हूं ने –

१ मन माया में सुरति फंसी रे, ता ते सब्द ना पाई रे।
सुरति स्वांस सब्द में बांधो, आठों पहर संग पाई रे।
सुरति शांत रख संतोष करती, बुद्धि निर्णय ज्ञान सुरति कराती रे।। वे हूं ने –

२ लाख कौस जो संत बसे, सुरति में सतगुरू पारस सुरति रे।
सब्द तुरि अस्वार है, पल में आवे पल में जावे रे।
मन बुद्धि चित्त समेटि के अपने, सतपुरूष को देख रे।। वे हूं ने –

३ अक्षय पुरूष की सुरति में, सब हंसा करें बसेरा रे।
सुरति संसार लोभ में भटकी, निरति वायु में समाई रे।
सवा हाथ सीस उपर स्वांसा वायु, सुरति मन बुद्धि चित्त सूं न्यारी रे।। वे हूं ने –

४ सुरति के मांहि रचयो संसारा, सुरति तांहि उतारे भव पार रे।
सुरत सब्द साहिब उपझाई, सुरति निरति से देह दुख आनंद रे।
सुरति संभाल रे हंसा प्यारे, दुख द्वंद सब मिट जाई रे।। वे हूं ने –

५ सुरति निरति संभाल हंसा प्यारे, तब साहिबन दर्सन पाये रे।
सुरति निरति जब एको भाई, तब निज को देखा जाई रे।
सुरति जागी भयो प्रकाशा, मोक्ष पद मिल जाई रे।। वे हूं ने –

६ सात सुरति सब देवी देव में, सुरति बिन कहीं आवे ना जावे रे।
सो अब तुम को दूं बताई, सात सुरति सब देव लखाई रे।
विहंग सुरति से रचन सृष्टि् की, आद्यशक्ति पाई त्रिलोक विस्तारा रे।। वे हूं ने –

७ तुम बिन कोई ना तारनहारा, हम निगुण सब तेरे सहारे रे।
हम से तुमरे बहुत प्यारे, तुम सम हमरा कोई नांहि रे।

हम सब भवजल मांहि प्यार, कहीं बह ना जाये बिन पुकारा रे।। वे हूं ने –

८ सब्द स्वांस सुरति में राखियो, सो पहुंचे निजघर प्यारा रे।
कहें साहिब जी तहां देखिये, बैठे हंसा संग सतपुरूष प्यारा रे।
जीवन सफल बना लो प्यारो, जन्म मरन की छुटि धारा रे।। वे हूं ने –

६ बिन सुरति नांहि मिले ठिकाना, सतगुरू दात बिन नांहि ठिकाना रे।
जड़वत नर अंधि सुरति प्यारो, अपनी मूल सुरति आपे बिसराई रे।
अब का भूला नहीं ठिकाना, जुगन जुगन आवे जावे रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने सत सुरति को पाकर, सहज सुरति जोत जगा ली रे।
खून हुआ है मन माया का, तो ही अमी रस चाखी रे।। वे हूं ने –

–0–

भजन – ५८ (भाग १५)

वे हूं ने सत सुरति को पाकर, सहज सुरति जोत जगा ली रे।
खून हुआ है मन माया का, तो ही अमी रस चाखी रे।। वे हूं ने –

१ अमर लोक से होकर आए, विदेह नाम लिए संग साथ रे।
पल पल समझाते हर नर को, चलो संग साहिबन दरबार रे।
पल पल देता पुकार प्यारी, जागो चलो निजघर संग साथ रे।। वे हूं ने –

२ कौटिन नाम संसार में प्यारो, मुक्ति डौर ना साथ रे।
मूल नाम जो गुप्त है प्यारो, पूर्ण सतगुरू संग साथ रे।
बिरला संतन कोई आता जग में, गांठ बांध चल साथ रे।। वे हूं ने –

३ नाम दात से कुष्ट रोगी भला, हर अंग से गिरे जो अंग रे।
कंचन तेरी देह थी प्यारे, बिन नामे किस काम रे।
सतगुरू नाम सुरति स्वांस में, पहुंचे निजघर अमरपुर धाम रे।। वे हूं ने –

४ तेरे हाथ हम सब की डौरी, मन कठौर अभाव भाव नांहि रे।
करूं कपट पाप अनेकों, नांहि निरखी छवि तोरि रे।

वे हूं की बात नांहि माने, विनय करूं बारम्बार कर जोरि रे।। वे हूं ने –

५ जीव के संग मन माया रहाई, अज्ञानी सब ना जाने रे।
स्वांस सुरति बिन डौर सब्द की, कैसे निजघर जावे रे।
प्यारो अमरपुर देस हमारा, सुरत सागर की धारा रे।। वे हूं ने –

६ कहता वे नाम कहे वे नाम, ये संसार खावे और सोवे रे।
संत कोई आवे जग अरू रोवे, काल का जीव ना माने रे।
तीन लोक से भिन्न हमारा, अमरलोक साहिबन न्यारा रे।। वे हूं ने –

७ जहां जाऐ इस लोक ना आवे, हंसा देस प्यारा रे।
अंधि सुरति बिन सब्दे जानो, निजघर कैसे पहचानो रे।
मूल सब्द डौरी दृढ पकड़ो, जीवत तन छोड़ निजघर पाओ रे।। वे हूं ने –

८ हम भव में डूब रहे हैं, बिन साहिबन सुरति ना पार रे।
आकर पकरो बांहि हमारी, सुरत सब्द दे पार लगाओ रे।
बिन नाम नांहि ठौर ठिकाना, सुरति सूं पकड़ो नामा रे।। वे हूं ने –

६ सब्द बिन सुरति मन पासा, कहो कहां को जाऐ रे।
सब्द बिन नांहि भेद निजघर का, फिरि फिरि जग में आओ रे।
सत्त सब्द प्रकाश राह दिखलावे, सुरति को प्रकाशमय कर पार उतारे।। वे हूं ने –

वे हूं ने सत सुरति को पाकर, सहज सुरति जोत जगा ली रे।
खून हुआ है मन माया का, तो ही अमी रस चाखी रे।। वे हूं ने –

–0–

भजन – ५६ (भाग १६)

वे हूं ने सुरति नाम को पाकर, सतगुरू महिमां जानी रे।
खून हुआ है काल जाल का, तभी तो निजघर पाया रे।। वे हूं ने –

१ सुमिरत नाम विदेह प्यारो, अंदर होत उजियारा रे।
सतगुरू पूर्ण से दात को पाओ, सुमिर सुमिर उतरो भव पारा रे।

गुरूमुख सतगुरू चिन्वत रे, जैसे भुजंग मणि सुरति राखे रे।। वे हूं ने –

२ साधक सतगुरू आज्ञा में चले, करे सतगुरू बारम्बारा प्रणामा रे।
सार नाम रस पीजे प्यारो, वस्तु अमोलक सतगुरू दीनी रे।
भक्ति योग लय योग में आओ, सहज हो सहज संग जुड़ जाओ रे।। वे हूं ने –

३ दीन दुखी जग कोई नांहि, सब अंदर मोती लाल रे।
स्वांस सुरति जोड़न नहीं जानते, निज को कहते कंगाल रे।
सार नाम की दात बिन, स्वांसा सुरति की जुड़े ना तार रे।। वे हूं ने –

४ वस्तु कहीं जोड़े कहीं, किस विधि जुड़े तार रे।
लख यत्न करो जुड़ ना पाये, बिन सतगुरू की दात रे।
ये जोड़ नहीं प्रवचनन जोडयां, सतगुरू सब्द सूं जुड़ती तार रे।। वे हूं ने –

५ तज कुसंग सतसंग बैठ नित, सतगुरू से सार रस पा लो रे।
साहिबन दात को पाये के, साहिबन चर्चा कर लीजै रे।
अनहद की मीठी वाणी से आगे, साहिबन दर्सन पा लीजै रे।। वे हूं ने –

६ काम क्रौध मद्य् लोभ संग, मोह बंधन कैसे जाऐ रे।
सार नाम की दात स्वांस में, दृष्टा होके सुरति सूं देख रे।
पल छिन संग है छट्टा, सहज से सहज पा ले रे।। वे हूं ने –

७ जाग प्यारे मौज मस्ती नांहि चंगी, उझड़े चमन को तूं देख रे।
मुक्त हो जा मृत्यु से, तूं सार नाम का पान कर ले रे।
क्या पता कब आये भुलावा, कब ढह जाऐ माटि का घर रे।। वे हूं ने –

८ इस फ़ना के रस्ते में प्यारे, जीवन ईक पड़ाव ले जान रे।
केवल मूर्ख ही करते प्यार हैं, कूच में हुक्म की देरी रे।
कौन जाने उड़ती हुई ख़ाक का भाव, निज को पहचान निज भाव रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने सुरति नाम को पाकर, सतगुरू महिमां जानी रे।
खून हुआ है काल जाल का, तभी तो निजघर पाया रे।। वे हूं ने –

–0–

भजन – ६० (भाग १७)

वे हूं ने निज की 'मै' मिटा कर, चेतन सुरति पा ली रे।
खून हुआ है सुरति निरति का, अधर में मिल ईक हो जाई रे।।

१ सुरति डौरी सतगुरू संग जोड़ो, जैसे ऊँट सुरति कतार रे।
सुरति डौरी पूंछ के मांहि, पीछे कतार चली आई रे।
सतगुरू सुरति मूल ठिकाना, चेतन सुरति को धार रे।। वे हूं ने –

२ यही भांति साधक घर वासी, और भांति औंकार की धार रे।
सतगुरू सुरति संग निज सुरति बांधों, पल में भव सागर पार रे।
सुरति दृढ़ चेतन सुरति संग, बिन उपाये हंस बन जाओ रे।। वे हूं ने –

३ बिन सार नाम सुरति ईक ना, सार नाम महिमां ना जग जाने रे।
बिन सुरति ईक किये मेरे भाई, सार सुरति बिन औंकार भरमावे रे।
बिन सतगुरू नहीं ज्ञान विवेका, सुरति संगम बिन नहीं पारा रे।। वे हूं ने –

४ सुरति संगम बिन नहीं ठिकाना, चेतन सुरति बिन नहीं भरमाना रे।
बिन मूल नाम की दात के, रहे पड़ा चौरासी धारा रे।
बिन नामे नर भया झड़ताई, निज घर की सुद्धि बिसराई रे।। वे हूं ने –

५ मन मान से भूला निज घर को, जुगन जुगन औंकार खेल खेला रे।
सात सुरति मन पवन को, घेर सुरति मूल सब्द से भाई रे।
पल में फेर उल्टा चले, घर अधर विच डालो ध्याना रे।। वे हूं ने –

६ पल में संत निर्भय हुआ, जीवित मरने के भेद को पाया रे।
चेतन होती जब सुशिमन नाड़ी, स्वांसा ऊर्दमुखी हो जाती रे।
चाँद चकौर सा ध्यान प्यारो, उल्टा जाप बनाता रे।। वे हूं ने –

७ धरती और आकाश बीच में, सब्द सुरति पवन एक रे।
उल्टा जाप हो गया प्यारो, हर पल सतगुरू संग साथ रे।
ध्यान रूपी डंडे से प्यारो, सुरति निरति पवन ईक रे।। वे हूं ने –

८ आत्म प्राणों में प्रीत पुरानी, यमराज प्राणों का राजा रे।
प्राणों को पकड़ ले चला प्यारो, आत्म पीछे पीछे संग साथ रे।
कोई ना आत्म जग बांधने वाला, प्राणों संग निज को बांधा रे।। वे हूं ने –

९ पवन पलट शुन्य में घर करो, जब स्वांस स्वांस में नाम रे।
हर स्वांस खाली जात है प्यारो, तीन लोक कर्म मौल रे।
कहता हूं कहा मानो प्यारो, स्वांस स्वांस की महिमां महान रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने निज की 'मै' मिटा कर, चेतन सुरति पा ली रे।
खून हुआ है सुरति निरति का, अधर में मिल ईक हो जाई रे।।

–0–

भजन – ६१ (भाग १८)

वे हूं ने पारस सुरति पाकर, सात सुरति ईक डौरी बना ली रे।
खून हुआ है मन मान का, तो ही आत्म जागी रे।।

१ प्राण बेग़ाना तीन लोक मेरे प्यारो, जब प्राण संग मन तरंग रे।
निकसे प्राण छोड़ा डेरा, घर के लोग दुखी प्यारो रे।
कुल की रीत सदा भटकावे, पूर्ण सतगुरू दात से भागे रे।। वे हूं ने –

२ मन माया सभी भटकावे, पारस नाम सब्द से दूरी रे।
पुरानी मान्यताऐं छोड़े नांहि, जो बंधन के कारण रे।
बांस बिजाई छोड़त नांहि, नांहि चँदन गुण पायो रे।। वे हूं ने –

३ सतगुरू सब्द बिन खोज ना कोई, कर्म भ्रम से दूरी रे।
वे हूं पुकार पुकार कर कहते, अंदर खोजो मेरे भाई रे।
जब लग कुल की रीत ना छूटे, अंदर के फूटे नैन रे।। वे हूं ने –

४ वे हूं पारस सुरति व्योपारी, ले लो सुरति न्यारी रे।
पारस पाया सतपुरूष धनी से, उन से बड़ा कोन व्योपारी रे।
मूल ना टूटे नफ़ा ही नफ़ा है, कोई ना लूटनहारा रे।। वे हूं ने –

५ पारस सुरति पुरूष की लूटो प्यारो, वे नाम की सुरति भारी रे।
लख चौरासी जून औंकार से, मिली राह न्यारी रे।
वे हूं हैं कहते सुनो मेरे प्यारो, जानी किसने जीती बाजी हारी रे।। वे हूं ने –

६ पारस सुरति नाम बिन भाई, सभी पड़े काल के फंद रे।
हीरा जन्म नर ना बारम्बारा, सतगुरू सूं जान मेरे भाई रे।
सत्य भक्ति सुरति करे वासा, संसार की छोड़ो आसा रे।। वे हूं ने –

७ सुरति का गारा सार सब्द की ईंटे, मिला गहरी नींव दे डारी रे।
सतलोक का दासा वे हूं दुखिया, धीरज रूपी छत ऊंची बनायो रे।
ध्या सतकर्म सुरति बने, प्रेम भक्ति संतन सेवा रे।। वे हूं ने –

८ मूल सब्द सांसा में डाल प्यारे, स्वांस स्वांस में सुरति नाम रे।
पारस सुरति दात को पाकर, मन तरंग बह जाये रे।
भ्रम चक्र में तीन लोक हैं, नर लखे ना सब्द मोक्ष द्वारा रे।। वे हूं ने –

६ सार नाम सुरति और निरति, पारस सुरति करती सब एक रे।
निरति आन सुरति मिली, पारस सब्द में एक रे।
पल दो पल में सुश्मिना खुले, पारस सुरति का खेल सारा रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने पारस सुरति पाकर, सात सुरति ईक डौरी बना ली रे।
खून हुआ है मन मान का, तो ही आत्म जागी रे।।

–0–

भजन – ६२ (भाग १६)

वे हूं ने मानसरोवर नहा कर, सुरति चेतन बना ली रे।
अंदर की चक्की ऐसी चली, आत्म चेतन हो गई रे।।

१ कहे वे नाम सुनो मेरे प्यारो, सब्द लखे सो तरेया रे।
सब्द ध्यान में सब लोक दरसे, सतगुरू अंग संग पावे रे।

सुख दुख कुछ याद ना आवे, सुरति सब्द ईक हो जावे रे।। वे हूं ने –

२ सुरति वैरागी मन माया त्यागी, सब्द में सातों सुरति समाई रे।
कहें वे हूं जी सुनो मेरे प्यारो, जुगन जुगन से यही रीत रे।
सब्द गाहे सतगुरू में सुरति, स्वांसा सुरति ईक बन जाये रे।। वे हूं ने –

३ जिस घट अंदर नाम समाया, सात सुरति की डौरी रे।
ईस घट अंदर चाँद सितारे, इसी में साहिबन प्यारे रे।
ईस घट अंदर सतगुरू वासा, इसी में उठत सुरति फुहारा रे।। वे हूं ने –

४ सोवत ही अपने मंदिर में, सुरति आन जगाये रे।
हंसा पायो मान सरोवर, ताल तलैया क्युं जाये रे।
मेरा साहिब हर स्वांसा में, सुरति से नाता जोड़ा रे।। वे हूं ने –

५ स्वांस सुरति बाजत अखण्ड सदा, तहां प्रेम झंकार रे।
प्रेम हद तजो सुरति संग भाई, सतलोक की हद पुनिः आई।
मूल नाम जग भूला फिरे, मरि मरि जन्में बारम्बारा रे।। वे हूं ने –

६ पारस सुरति 'बुल्ट प्रूफ़' पहनावा आत्म, मन माया की गोली ना लागे रे।
शुद्ध धर्म पहनावा आत्म का, सत अहिंसा की डौरी प्यारी रे।
ग्रह नक्षत्र जादू टोना, केवल भ्रम के उत्पाती रे।। वे हूं ने –

७ अक्का नाम सुरति संग तेरे, सबहि विघ्न सदा टारी रे।
कौटिन तीर्थ भ्रम भ्रम आवे, सो फल सतगुरू चरणन पाओ रे।
ऊंचा वही जिस सब्द है जाना, बिन नाम सब नीच ब्ख़ाना रे।। वे हूं ने –

८ सुख में सिमरन ईक पल ना भूलें, दुख में हार ना मानूं रे।
कोई कार्य ऐसा ना करो, सतगुरू भक्ति दुषित होये रे।
सतगुरू आज्ञा निरखत रहियो, जैसे मणि भुजंग रे।। वे हूं ने –

६ सब्द जो सेवे सो साधक होई, बहु विधि पारस सुरति पावे रे।
ख़ाक हो जा सतगुरू चरणों में, पल में मंज़िल मिल जाई रे।
सतगुरू प्रीती ले आवे सत्संग, सतगुरू आज्ञा पार लगाई रे।। वे हूं ने –

१० नाम सत सतगुरू सत ही, आप सत जे होये रे।
तीन सत जब एक हों प्यारे, साहिब से मिलना होई रे।
सतगुरू सेव सुरति में जाई के, सुरति प्रकाशित हो जाये रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने मान सरोवर नहा कर, सुरति चेतन बना ली रे।
अंदर की चक्की ऐसी चली, आत्म चेतन हो गई रे।।

—0—

भजन – ६३ (भाग २०)

वे हूं ने साहिबन दर्श पा कर, अमरपुर की महिमां गाई रे।
खून हुआ लाखों जन्मों का, तो ही महिमां गाई रे ।।

१ साधक काम सतगुरू से प्यारे, झूठे जग से लेन ना देन रे।
दुर्गति भागे पातक नाषे, तन सुरति से सतगुरू सेव रे।
ध्यानवंत अनेकों जग में, गुरूवंत प्यारा कोई एक रे।। वे हूं ने –

२ सतगुरू वचनन सब मान लो प्यारो, बिन सत्य असत्य सुरति धारे रे।
कच्ची सरसों पेल मत प्यारे, मत कर इसका नाष रे।
भक्ति करे कोई प्यारा साधक, बिन सतगुरू पावे ना भेद रे।। वे हूं ने –

३ माला लक्कड़ पूजा पत्थर, तीर्थ रिती पुरानी रे।
मन से रावे मन से गावे, अंदर के पट खोल रे।
शंकाओं का निवारण अंधकार नष्ट, एकाग्र सुरति लाये सत्संग रे।। वे हूं ने –

४ लाखों जन्म के बंधन काटे, नाम सुरति स्वांस ईक संग रे।
सतलोक खाली पड़ा, साहिब बैठे विच सत्संग रे।
सतगुरू के दर्शन करो, जन्म मरन छुट जाई रे।। वे हूं ने –

५ सतगुरू दृष्टि् वाणी स्पर्श सूं, मन की टूटे कमान रे।
सतगुरू दर्शन किये, मोक्ष मुक्ति फल दान रे।

अब भया सतगुरू का प्यारा, अब पक्का और पक्का रे।। वे हूं ने –

६ कोई कोई पहुंचा अमर लोक में, मन माया का खेला रे।
आप निर्मल निष्चल सुरति, मन माया छूटे बात बन जाई रे।
निर्गुणी गुण गाकर सतगुरू संग, मूल नाम पार करावे रे।। वे हूं ने –

७ सतगुरू संग दास बन रहिये, तांहि निजघर वासा रे।
जे नर सतगुरू शरणी आवे, सकल दौष जरि जावे रे।
शरणागत में सब गुण आवे, ज्ञान भक्ति आन समावे रे।। वे हूं ने –

८ सतगुरू गूंगे और बांवरे, चरणों में रहिये बन दासा रे।
जे सतगुरू भेजें मानसरोवर, निजधाम की रखियो आस रे।
सतगुरू बात मानना जीवन, सुरति चरणन वासा रे।। वे हूं ने –

६ सकल मुणि जन संतन सेवा चाहें, सतगुरू सेवा सूं बनते काज रे।
सतगुरू सेवा बिन प्रेम वहीना, विरह वैराग कहां से आये रे।
सतगुरू सेव बिन कौ जग अपना, जो औंकार से आन छुड़ाये रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने साहिबन दर्श पा कर, अमरपुर की महिमां गाई रे।
खून हुआ लाखों जन्मों का, तो ही महिमां गाई रे ।।

–0–

भजन – ६४ (भाग २१)

वे हूं ने साहिबन दात को पाकर, सच्ची दात जग लाई रे।
कोई ईक संत साहिब को भावे, माला माल कर जाई रे।।

१ कथनी थोथी जान मेरे भाई, करनी सुरति उत्तम जान रे।
उत्तम संग उत्तम बनो प्यारे, पल में उतरो भव जल पार रे।
विरह बाण जिनके उर लागे, उनकी महिमां महान रे।। वे हूं ने –

२ पात झड़ता यूं कहे प्यारो, सुन तरवर मेरी बात रे।
अब के बिछड़े कैसे मिल पावें, पवन दूर उड़ा ले जाये रे।
पारस सुरति अनमोल ख़जाना, मिट गया आवागमण रे।। वे हूं ने –

३ काला मुख तन मान का प्यारो, आदर सत्कार उपझावे आग रे।
मन मान छोड़ी के प्यारो, पालो दात अमृत नाम रे।
मन मान बड़ाई ईर्षा, सार नाम से ही तजि जाई रे।। वे हूं ने –

४ निज बड़ाई जग मान को नांहि, निज ही तो मन मान रे।
हीरा निज ना जानता, कैसे जाने निज को रे।
रहे दास बारम्बार बंदगी, सतगुरू चरणन की धूलि रे।। वे हूं ने –

५ मान गया माया गयी प्यारो, संशय विकार तन साथ रे।
हंसा अविनाषी कभी ना मरता, तो कैसे मरे सार नाम रे।
सतपुरूष आवे ना जावे, तो हंसा क्युं कर धारे शरीर रे।। वे हूं ने –

६ क्षण भंगुर संसार ये सारा, जैसे फूल सुमेर रे।
चार दिन के जीवन पर प्यारो, झूठे चड़े रंग रूप रे।
अभिमान के आते ही प्यारो, खोने का डर संग साथ रे।। वे हूं ने –

७ कर्ता निज को नहीं जान प्यारे, कर्ता केवल संत रे।
घड़ी मुहूर्त चक्कर छोड़ प्यारे, सतगुरू सब्द संग साथ रे।
कर्ता ईक केवल संत जानिये, तूं छोड़ डौरी उस हाथ रे।। वे हूं ने –

८ जो फल जाई बहुरि ना आवे, सतगुरू करे सब काज रे।
तीन लोक हथ कुछ है नांहि, हर नर फिरे बेहाल रे।
हर पल की महिमां जान प्यारे, सतगुरू हाथ सुरति बाण रे।। वे हूं ने –

६ सुरति संभाल सार नाम से, पल में मिले मोक्ष दान रे।
आत्म में साहिबन दरशे, यह सब पूर्ण सतगुरू हाथ रे।
गाफ़िल और गंवार है नर, सोया पांव पसार रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने साहिबन दात को पाकर, सच्ची दात जग लाई रे।
कोई ईक संत साहिब को भावे, माला माल कर जाई रे।।

–0–

भजन – ६५ (भाग २२)

वे हूं ने साहिबन दात को पाकर, आत्म की जोत जगाई रे।
खून हुआ है पांच शब्द का, औंकार का खेल महान रे।।

१ संगी सोहि कीजिये प्यारो, जो अजर अमर जग होई रे।
वह ना मरे नांहि बिछड़े, आप अमर हो जाये रे।
अमरपुर से अमर दात संग, सब को अमर बनाये रे।। वे हूं ने –

२ कोऊ मार्ग ना कठिन ना चलना, जीवित मर के पाये रे।
जीवित मर के पाना साहिब का, जीवित पार हो जाये रे।
अमर हो कर अमरपुर जाये, साहिबन के दर्शन पाये रे।। वे हूं ने –

३ स्वपन में रह सब देखिया, जागे तो कुछ नांहि रे।
तीन लोक सब सपना प्यारो, औंकार ने खेल रचाया रे।
मान त्यागो सुरति धारो, पल में बात बन जाये रे।। वे हूं ने –

४ झूठे तन के कारण प्यारो, कियो बहुत विकार रे।
झूठे कुटुम्भ परिवार प्यारो, धन संपत्ति पुत्र रे।
सत्य समझ कर प्यारो जानो, पाप की गठरि भारी रे।। वे हूं ने –

५ मैं गया तब ईक रहा प्यारो, मैं आया तब दो रे।
मै का पर्दा जब मिटा, ज्युं का त्युं फ़िर होया रे।
मन गया मान गया, सुरति की ईक ही धारा रे।। वे हूं ने –

६ पीड़ा विरह जब उपझे, सुरति सूं करो पुकार रे।
सतगुरू रूप साहिबन मिलें, युग बीते बिन पुकार रे।
सांचा सतगुरू आन मिलाये, पल में कियो दीदार रे।। वे हूं ने –

७ सार नाम सुरति वासा, सुरति में अमृत बैन रे।
प्रेम प्यारा ताहि को जानो, जिन के सुरति नैन रे।

सुरति फ़कीरी जे हो रहे, साहिब तिन के दास रे।। वे हूं ने –
८ देहि कब थी अपनी प्यारो, सतगुरू से जानी बात रे।
अब ही से तजो मान प्यारो, नहीं तो आखिर तजे ये तोहे रे।
औंकार पल में खेल रचायो, फ़िर से उसी के हाथ रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने साहिबन दात को पाकर, आत्म की जोत जगाई रे।
खून हुआ है पांच शब्द का, औंकार का खेल महान रे।।

–0–

भजन – ६६ (भाग २३)

वे हूं ने सुरति चुनरिया ओढ़ कर, निज को एक बनाया रे।
खून हुआ है सात सुरति का, सार नाम से ईक बनाया रे ।।

१ अजगर जग में रहता प्यारो, बिना किये कुछ काज रे।
पंछी पंख हिला उड़ता प्यारो, बिन किये कुछ काज रे।
वे हूं नाम कहें उस नर को प्यारो, पा लो अमृत नाम रे।। वे हूं ने –

२ सार नाम के नाम का प्यारो, जा घट नहीं लव लेष रे।
पानी तहां ना पीजिये, अक्का नाम से जो दूर रे।
अक्का नाम के भजन बिन, पड़ा काल के हाथ रे।। वे हूं ने –

३ जिन सतगुरू से सतपुरूष जानेया, वे ही सांचे सपूत रे।
सोवत जागत सुरति संग प्यारो, सुरति में साहिबन वास रे।
सतपुरूष जीव ना लखायो, धूल पड़ी कैसी नैनन रे।। वे हूं ने –

४ दासा सात सुरति बसे, सार सब्द संग साथ रे।
चेतन सुरति अमृत पाये बिना, कैसे मिटे आत्म प्यास रे।
अब साधक ऐसा होये रे, जैसे पांव तले की घास रे।। वे हूं ने –

५ पूर्ण सतगुरू सिर पर खड़े, सुरति संग हर दम पास रे।
कुछ मांग ना उठे सुरति से, ईक ही संग साथ रे।

सतगुरू साहिब तो एक हैं, दो जानो तो भूल रे।। वे हूं ने –

६ जब लग आशा मन मान की, तब लग दास ना कोई रे।
कर्म करे बिन कर्ता बने, साहिब बन कोई ओर रे।
मल निर्मल सूं रहित वे, भजन बिन ना कर्ता रे।। वे हूं ने –

७ अन्न बिना जहां तप करूं, नीर बिन तरि जाये रे।
धरति बिन जहां पग़ धरूं, गगन नहीं जहां जाई रे।
तीन लोक से परे, अमरलोक भेद बताऊं रे।। वे हूं ने –

८ पारस सुरति का कुछ नहीं घटा, घटा जो देवनहारा रे।
पल पल गंवायो अपने, अंधे गंवार नर पशु समान रे।
कृत्रिम को कर्ता कहत है, नास्तिक पशु नर सोया रे।। वे हूं ने –

६ सतगुरू भक्ति सो बरस, ईक दिन पूजे औंकार आनी रे।
सो अपराधी हंस आत्मां, जा पड़े चौरासी खानी रे।
हीर खोया हाथ सूं, टूटा साहिबन डौरी संग साथ रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने सुरति चुनरिया ओढ़ कर, निज को एक बनाया रे।
खून हुआ है सात सुरति का, सार नाम से ईक बनाया रे ।।

–0–

भजन – ६७ (भाग २४)

वे हूं ने मन माया त्याग कर, पारस सुरति पा ली रे।
खून हुआ है कल और कल का, तो ही इस पल में निज को पाया रे।।

१ कौटि नाम संसार में, मुक्ति के नांहि आधार रे।
विदेह नाम जो मुक्त करे, कोई बिरला पावे दात रे।
बिन सतगुरू बात बनती नांहि, अकह नाम बिन नांहि कोई पार रे।। वे हूं ने –

२ विदेह नाम कहा पढ़ा लिखा ना जाये, नाम बिन काल निरंझन खाये रे।
गण गंधर्व ऋषि मुणि और देवा, सब करें काल की सेव रे।
जो रक्षत उसे चीन्हत नांहि, भक्षक का ध्यान लगाये रे।। वे हूं ने –

३ निर्गुण सगुण में नर रीझ रहा, सतलोक का भेद ना पाये रे।
तीन लोक में जो रम रहा, काल निरंझन गुण गाये रे।
पुरूषे पुरूषे जो रचा, जानो विरला संसार रे।। वे हूं ने –

४ नर चाहता सीधे भगवन ध्यान, भक्ति से शक्ति लेने की बात रे।
जिससे जान ना पहचान, कल्पना से परे उसे जान रे।
शब्दातीत अक्षरातीत वाणी से पारा, ध्यान गुण शक्तियां जान असंभव प्यारे।। वे हूं ने –

५ वासुदेव श्री कृष्ण रूप में, अर्जुन को देते ज्ञान रे।
जो पित्रों की भक्ति करे, पित्रलोक पाये स्थान रे।
जो जिसकी भक्ति करे, उसी योनि में जाये रे।। वे हूं ने –

६ सतगुरू परमपुरूष एक तूं जान, इनमें कुछ भेद ना मान रे।
भेद करे मूर्ख कहलाये, परमपुरूष का सतगुरू ही भेस रे।
परमपुरूष में समाये सतगुरू, पारस सुरति कहलाता रे।। वे हूं ने –

७ बिन परिश्रम सतगुरू बदलता, सतगुरू में अदभुद सुरति प्रवाह रे।
सतगुरू अपनी सुरति के खेल से, आत्म शक्ति का करते संचार रे।
नाम दान देते संयम सुरति सूं, शिष्य अंदर अदभुद सुरति प्रवाह रे।। वे हूं ने –

८ सुरति जगाना नाम दान है, अंदर के स्त्रोत लेता जान रे।
सुरति स्थिर कर सतगुरू में दे समा, पल में सुरति ले जाग रे।
सतगुरू दर्शन से सुरति चेतन, सतगुरू ध्यान से उन्हीं में जा समाये रे।। वे हूं ने –

६ जिसका ध्यान उसी में सुरति, पल छिन आवे जावे रे।
बिन ख़बर के संग खड़ा वह, अति आनंद दे जावे रे।
सुरति की आंख से देख ले, अति सूक्ष्म ध्यान सूं जान रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने मन माया त्याग कर, पारस सुरति पा ली रे।
खून हुआ है कल और कल का, तो ही इस पल में निज को पाया रे।।

–0–

भजन – ६८ (भाग २५)

वे हूं ने सतलोक को पाकर, यह मुर्दा देश पहचाना रे।
खून हुआ लाखों जन्मों का, तो ही दर्शन पाया रे।।

१ जग मुर्दा ज़िंदा सार नामा, सतगुरू ले चले निजधामा रे।
ज़िंदा मुर्दा जग सेवे औंकारा, सत्तलोक सब हंसों का प्यारा रे।
पाप पुण्य मान तहां ना, सत्तलोक सत्त समाना रे।। वे हूं ने –

२ कोई जग जीते कोई जग हारे, सत्तगुरू काज सवारे रे।
संत कहाये जो सोधे आपा, तांहि पुण्य ना पापा रे।
झूठ असत्य से पार है होना, अमृत सब्द पार हो जाना रे।। वे हूं ने –

३ सत्य असत्य ज्ञान भाषा में नांहि, जग छूटे सत्त आन समाई रे।
सत्य आत्म असत्य जगत है, आनंद आन समाई रे।
ख़र अक्षर से बात बने ना, जीवित मरे बात बन जाई रे।। वे हूं ने –

४ पूर्ण संत इस भेद को जाने, उन बिन कोन पहचाने रे।
सत्त सत्तपुरूष असत्य औंकार, भेद देत संत प्यारा रे।
सत्य असत्य संत असन्त, कोन करे पहचान रे।। वे हूं ने –

५ ख़ाक हुआ तो क्या भया, उड़ी उड़ी लागे अंग रे।
साधक ऐसा होई रे, पानी का सा रंग रे।
असत्य जाये सत्य होई रे, आत्म वंत होई जाई रे।। वे हूं ने –

६ निर्मल भया तो क्या भया, निर्मल चाहे ठौर रे।
मल निर्मल रहित जो, सत्य आनंद जाने सोई रे।
जाने संत असन्त के भेद को, सतपुरूष में समाया होई रे।। वे हूं ने –

७ सत्त वोहि जो हंसा हुआ, साहिब संग करता वास रे।
अन्न नहीं जहां तप करे, नीर नहीं तहां नहावे रे।
धरा नहीं जहां पग धरे, गगन नहीं तहां पर फेलावे रे।। वे हूं ने –

८ सत्त आप सतगुरू भक्ति करे, साहिब नाम में रहे समाये रे।
सो तो हंसा आत्म प्यारी, चौरासी खानी से पार हो जाये रे।
पंछी उड़ानी निजधाम की, पिण्ड रहा परदेस रे।। वे हूं ने –

६ सब हंसों से मेला होई, जानों निज का देस रे।
श्वेत रंग का देस वह, सत्त स्वरूप निजधाम रे।
झूठ असत्य का वासा तहां ना, वह तो आनंदमई देश रे।। वे हूं ने –

१० रूठा साधक कौन मनावे, जिसकी टूटी सुरति सूं डौर रे।
आदि नाम का संग गया, सतगुरू सूं कौसों दूर रे।
काल लोक का अंग बना, फिर क्युं कर पावे मोक्ष रे।। वे हूं ने –

११ काल से छूटा काल घर आवे, यही काल पहचान रे।
अमृत दात को इक पल छोड़े, कौटिन जन्म संग साथ रे।
सतलोक से आ गिरा, अब कौन करावे पार रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने सतलोक को पाकर, यह मुर्दा देश पहचाना रे।
खून हुआ लाखों जन्मों का, तो ही दर्शन पाया रे।।

—0—

भजन – ६६ (भाग २६)

वे हूं ने मन को स्थिर किया है, संग में माया छूटी रे।
खून हुआ है कल और कल का, संग साहिब का पाया रे।।

१ मन माया संग चित्त गया, बुद्धि का संग छूटा रे।
आत्म तेरी जाग गई है, मूल सुरति हाथ सब काम रे।
अब कल और कल गया, इस पल के हाथ लगम सब काम रे।। वे हूं ने –

२ अमर लोक को दूर मत जानो, सुरति सूं पास ले आओ रे।
चित्त की बात मत तुम जानो, यही तो प्यारा धोखा रे।
मन गया माया गई, प्रेम शुद्ध तुम पाओ रे।। वे हूं ने –

३ प्रेम सुगंध हर ओर है फैली, चित्त को जो नर भूला रे।
ईक संग प्रेम कैसे हो जग में, ईक तो अंदर रहता रे।
हर एक से प्रेम जब जागे, एक से प्रेम हो जाता रे।। वे हूं ने –

४ जो जागा सो सब का प्यारा, वैरी संग एक ना रहता रे।
जो आवे संग में सतगुरू के, वह ही तो सब से प्यारा रे।
पारस सा वे काम हैं करते, लोहे को कंचन कर जाते रे।। वे हूं ने –

५ पांच तत्व देव दास बन रहते, हर पल दर्शन पावें रे।
अपने को बड़भागी मानते, हर ओर खुशबू ले जाते रे।
सच्चा साहिब – सच्चा सतगुरू, सब को पार लगाता रे।। वे हूं ने –

६ सच्चे रह कर सच्च हैं देते, मैत्री भाव भेद दे जाते रे।
आशा तृष्णा संग नहीं अब, आप में आप का भेद दे जाते रे।
अपना प्यारा नहीं कोई जग में, सार दात दे पार ले जाते रे। वे हूं ने –

७ जो आवे दात ले जावे, पल में निज घर जावे रे।
खुशबू प्रेम और मैत्री भाव की, अंग संग उन के पावे रे।
संग में उनके साहिब हैं रहते, जागो बात बन जावे रे। वे हूं ने –

८ कईयों का दुख अति है भारी, उनके गुण देख भाग जावे रे।
चुप्पी ऐकांत भक्ति चेतन सुरति, शांत भाव देख ना पावें रे।
सत्त सुरति आनंद प्यारो, अंदर की आंख जगाते रे।। वे हूं ने –

६ अंग संग उनके साहिब प्यारे, देख देख हर्षाते रे।
देवी देव हैं दर्शन पाते, ईक पल भी भूल ना पाते रे।
नूरी चेहरा ऐसा प्यारा, साहिब जी इसमें रहते रे।। वे हूं ने –

वे हूं ने मन को स्थिर किया है, संग में माया छूटी रे।
खून हुआ है कल और कल का, संग साहिब का पाया रे।।

–0–

भजन ७०

सतपुरूष ने सात सुरति सूं, सगल पसारा सुरति की धारा रे।
खून होता हर पल मन का, तो ही सतगुरू आते रे।।

१ आत्म तन में सात रूप से, सुरति का खेल खेले रे।
प्रथम सुरति आनंद है प्यारो, ये अमि सुरति कहलाती रे।
आनंद का सुरति सूं अनुभव करती, सब कार्य आत्म से होते रे।। सतपुरूष ने –

२ दूजी सुरति मूल सुरति है, हर कार्य में ध्यान बन जाये रे।
नींद में भी मूल सुरति, हर पल ये रहती साथ रे।
मन मिला माया मिली, मूल रूप ना संग साथ रे।। सतपुरूष ने –

३ तीजी चमक सुरति है मेरे भाई, हर अंग चेतन हो जाये रे।
पूरा तन क्रियाशील बन कर, मूल सुरति की जोत जगाये रे।
रोम रोम में तन चेतन कर, मन से पार कराये रे।। सतपुरूष ने –

४ चोथी सुरति आत्म अंग है, शून्य सुरति कहलाये रे।
शांत चुप्पी ही अच्छे लगते, ऐकांत में रहना सुरति को भाये रे।
सतगुरू दर्शन सत्संग जाना, सुरति की प्यास भुजाये रे।। सतपुरूष ने –

५ पंचवी सुरति निष्चय कहलाये, शुभ अशुभ का भेद बताये रे।
उचित अनुचित अच्छा बुरा, सुरति सूं पल पल जान पाये रे।
सत पर चलने का ज्ञान ये देती, मन से आन बचाये रे।। सतपुरूष ने –

६ ठांव ठांव रस चाखे छठि सुरति, स्वाद का अनुभव कराये रे।
मन का संग हर सुरति संग, करे काम में भंगा रे।
बुद्धि चित्त को चेतन करती, ये सब आत्म खेला रे।। सतपुरूष ने –

७ सप्तम सुरति हृदय के मांहि, भोजन रस हर अंग तक ले जाये रे।
हर सुरति अंग को साफ़ करे, हर गंद को बाहर निकाले रे।
ये सब कार्य आत्म के जानो, पारस सुरति बिन अधूरा काम रे।। सतपुरूष ने –

८ आत्म बिन अखां सब कुछ देखे, बिन टांगें चले हर ओर रे।
आत्म का मूंह है नांहि, बोल भाषा चहुं ओर रे।
बिन मुख सब रस है चखती, मूल सुरति में हर बात याद रे।। सतपुरूष ने –

६ धर्मराय जब लेखा मांगता, मूल सुरति लेखा देते रे।
धर्मराय न्याय करे जब, चित्रगुप्त सज़ा दे सुनाये रे।
किस पाप की क्या सज़ा, संग वेद व्यास भी देते साथ रे।। सतपुरूष ने –

१० आत्म वतन सर्व भुतेशू, परमपुरूष कण ले जान रे।
मूल सुरति सभी जीवों में, छोटा इसे मत जान रे।
हित अनहित पशु पक्षी जानत, सुरति से हर जन एक रे।। सतपुरूष ने –

सतपुरूष ने सात सुरति सूं, सगल पसारा सुरति की धारा रे।
खून होता हर पल मन का, तो ही सतगुरू आते रे।।

–0–

भजन ७१

वे नाम ने सुरति निरति ईक कर, चेतन सुरति पा ली रे।
सुरति निरति हंसा बन जाती, सुरत कमल का खेल रे।।

१ आत्म सहज अनाम अरूपा, सुरति निरति सूं आत्म रूप रे।
सुरति सब्द स्वांसा इक कर, सुरत कमल में हंसा रूप रे।
सकल पसारा मेटि कर, तीन के संगम से आत्म रूप रे।। वे नाम ने –

२ सब्द सुरति स्वांसा इक डौरी, अजर अमर करि जाये रे।
हंसा बन सब्द सुमिर मेरे प्यारे, व्यर्थ स्वांस ना खोये रे।
ना जाने किस स्वांस में प्यारे, साहिब से मिलना होये रे।। वे नाम ने –

३ मन मान तजे बिन ना आत्म हंसा, निज घर में कैसे वासा रे।
सुरति लहर से औंकार जग उलझाया, बिन जागो कैसे पार रे।
सात सुरति दस ईन्द्री बस पड़ी है, करें सब तन के काज रे।। वे नाम ने –

४ सुरति रूप आत्म जीव सारे, मन अनुसार करते काज रे।
नर सुरति फंसी संसार में, तां ते निजघर दूर रे।
ध्यान आदर्श रूप आत्म का, तन मन के करता काज रे।। वे नाम ने –

५ सब घट मेरे साहिबन वासा, कैसे खाली कोई घट होये रे।
वह घट अति प्यारा जानिये, जा घट परघट होये रे।
सब का साहिब सब घट व्यापे, जाने कोई कोई प्यारा रे।। वे नाम ने –

६ साधक सतगुरू और साहिब जी, सुरति में जानो एक रे।
तीनों त्रिधारा जानिये, सरस्वती बने तो एक रे।
बिन सुमिरन बात बने ना, सतगुरू सुमिरे सो पार रे।। वे नाम ने –

७ सतगुरू बड़े साहिब सूं जानो, मत करो बहुत विचार रे।
साहिब सुमिरे कुछ मिले, सदगुरू सुमिरे सो पार रे।
साहिब सुरति निरति देनी, सतगुरू सूं बनती बात रे।। वे नाम ने –

८ सदगुरू पाया साहिब जानिया, तां सूं मोक्ष की बात रे।
वे हूं सदगुरू ना जानिया, तो साहिब ना आवें हाथ रे।
तन धन सुरति से सेव कर, पल में साहिब साथ रे।। वे नाम ने –

६ सतगुरू का समाना शिष्य में, चेतन सुरति प्राण रे।
सब्द सुरति निरति एक हों, एक रूप दो देह रे।
कच्ची सरसों पक गई प्यारो, खड़ो भयो अब तेल रे।। वे नाम ने –

वे नाम ने सुरति निरति ईक कर, चेतन सुरति पा ली रे।
सुरति निरति हंसा बन जाती, सुरत कमल का खेल रे।।

–0–

भजन ७२

सार सब्द बिन नांहि निस्तारा, कबहु ना पावे निजघर प्यारा रे।
सो जागे जो सतगुरू शरणी, विदेह दात बिन होत ना पारा रे। सार सब्द बिन –

१ श्वेत रंग का चोथा लोक, जहां पताल आकाश ना धरा रे।
सूरज चांद तारा तहां ना, हर छिन रहे उजियारा रे।
निरंकार की बात तहां ना, हर ओर साहिब पसारा रे।। सार सब्द बिन –

२ देस विदेस में गूंझता औंकारा, मन में डोल रहा नर प्यारा रे।
आत्म साक्षात्कार सार नाम, सुरत सब्द से अमर लोक बाण महान रे।
कितने जन्म तेरे बीते, ईरख का पहला कदम उठाना तेरा रे।। सार सब्द बिन –

३ अमृत सब्द रस जिन जिन पियो, कबहु जाये ना सुरति खुमारा रे।
जीवत मरना जान लिया रे, नाम खुमारी सुरति जागी रे।
सगुन निर्गुन में ना अटकें, सार नाम बाण से पारा रे।। सार सब्द बिन –

४ दास समझ साहिब जी दर्सन दीने, पाप दमन संकट हर लीने रे।
साहिब मिले साधक बड़भागी, जानो प्यारे हंसा हमारा रे।
साहिबन दर्सन कौटि गुण उपझें, हर ओर रूप साहिबन प्यारा रे।। सार सब्द बिन –

५ संतों का उपदेश सत कर जानों, पुरूषार्थ परमार्थ सुमंगल फल दे जावे रे।
रोम रोम विष बसत भुजंग, कैसे खुलें पट अंदर के रे।
खुदी को मेट सत्संग में आवें, सार सब्द विष अमृत कर जावे रे।। सार सब्द बिन –

६ सार नाम सुरति में कोई, आठ पहर संग सतगुरू पाई रे।
भगत सुरति में करे सत्कारा, हर पल सुरति में नमस्कारा रे।
बन बालक निज मूर्ख बतलाई, निर्बल जान करे पुकारा रे।। सार सब्द बिन –

७ काल जाल सब जगत पसारा, किस विधि हो निस्तारा रे।
बिन भेषज नहीं रोग का नाषा, बिन विदेह नाम ना छूटे काल पसारा रे।
बिन पूर्ण सतगुरू को पाये, नहीं होत कबहु निस्तारा रे।। सार सब्द बिन –

८ मुकर बिन बिम्ब लखे ना कोई, पूर्ण सतगुरू बिन मोक्ष ना होई रे।
ज्ञान से कर्म कर्म से भक्ति, भक्ति से भौग भौग प्रेम भक्ति रे।
सतगुरू मिल सुरत सब्द से, पल में पावें मुक्ति रे।। सार सब्द बिन –

६ मनन वासना सम हो जाई, निःअक्षर दात जे पाई रे।
मन माया अंधे किये नर, कुछ नहीं लगा हाथ प्यारे रे।
शीष काट कर राखें सतगुरू चरणन, पार उतरेगा सोई सूरा रे।। सार सब्द बिन –

सार सब्द बिन नांहि निस्तारा, कबहु ना पावे निजघर प्यारा रे।
सो जागे जो सतगुरू शरणी, विदेह दात बिन होत ना पारा रे। वे हूं ने –

–0–

भजन – ७३ (भाग १)

गीता का भेद सभी जग को, बतला दिया बंसुरी वाले ने।
त्रिलोकि बनाने वाले ने, और बना कर मिटाने वाले ने।।

१ जो सतगुरू शरणी पाते हैं, वो साहिब को पा जाते हैं।
सोये जागे की बात नहीं, निज को जानते ही पा जाते हैं।
सतगुरू ही पार लगाता है, जब मान अपमान खो जाता है।। गीता का भेद –

२ अर्जुन निज मान ना त्याग सका, और भगवन को ना पहचान सका।
अंदर की प्रीत ना जाग सकी, सखा को भगवन ना मान सकी।
भगवन सभी के संगी साथी हैं, जग उनकी महिमां ना जान सके।। गीता का भेद –

३ जग मालिक होके दीन बने, दीन दुखियों का उद्धार करें।
जो भी उन संग प्रीत करे, दुख हर के मालामाल करें।
जो भी उनकी भक्ति करे, महांसुन्न में जा के निवास करे।। गीता का भेद –

४ वो प्रेम की बंसुरी बजाते हैं, मन की जोत जगाते हैं।
गोपियों संग रास रसाते हैं, जो बजे उसी के हो जाते हैं।
जग मालिक हो गायें चराते हैं, और प्रेम का पाठ पढ़ाते हैं।। गीता का भेद –

५ अर्जुन को भेद समझाते हैं, चार मुक़्ति की राह बताते हैं।
चौथे लोक का भेद भी देते हैं, भव पार का भेद भी देते हैं।
सच्ची प्रीती अंदर की सुरति है, मन से परे का भेद बताते हैं।। गीता का भेद –

६ चारों वेद के विधाता हैं, वेद वाणी में ही रमते हैं।
वे सुन्न में डेरा रखते है, पंच तत्व में वासा करते हैं।
जागे को राह दिखलाते हैं, भक्तों संग रास रचाते हैं।। गीता का भेद –

७ जीव के हर स्वांस में प्राण बसें, सतपुरूष भी उसमें वास करें।
हर हृदय में आत्म सुरति है, निरति संग मिल आत्म रूप धरे।
सार सब्द संग मिलने से, सुरत कमल में साहिबन दीदार करें।। गीता का भेद –

गीता का भेद सभी जग को, बतला दिया बंसुरी वाले ने।
त्रिलोकि बनाने वाले ने, और बना कर मिटाने वाले ने।।

—0—

भजन – ७४ (भाग २)

गीता का भेद सभी जग को, बतला दिया बंसुरी वाले ने।
त्रिलोकि बनाने वाले ने, और बना कर मिटाने वाले ने।।

८ जग वाले जब सोये होते हैं, संत सतपुरूष के दर्शन पाते हैं।
इनमें पारस सुरति बहती है, आत्म को हंसा कर जाती है।
जो सतगुरू में ध्यान लगाते हैं, पूर्ण मोक्ष पद पा जाते हैं।। गीता का भेद –

९ साहिबन ने सब को मालामाल किया, मनवा ने ईस ओर ना ध्यान दिया।
तन मन का बंधन ना जाना, आत्म बिन रसरी बांध लिया।
मनुष्य रहा साहिबन से पीठ किये, सन्मुख हो उनसे ना प्रेम किया।। गीता का भेद –

१० मानव जीवन अंधेरी रात है, सुरति जोत जगन की देरी है।
सुरति जोत के जगने पर, मोक्ष पद पाने की फेरी है।
ये त्रिलोकि तो केवल सपना है, कंचन माटि समान ईक डेरी है।। गीता का भेद –

११ पूर्ण सतगुरू सुरति बिन, कैसे कोई भव सागर पार करे।
कौटिन जन्म भी जे ध्यान धरे, बिन पारस नाम ना कोई तरे।
पारस नाम मन मान सूं पार करे, जब सतगुरू में साधक ध्यान धरे।। गीता का भेद –

१२ मीरा भी रोई चिल्लाई थी, पर बात ना बन पाई थी।
रविदास जी सतगुरू पाये थे, निजघर में वासा पाया था।
साहिबन सतगुरू को राखे आगे हैं, संतो ने पद ये पाया है।। गीता का भेद –

१३ साहिबन सतगुरू रूप में प्रकटे हैं, जीवों को मोक्ष दिलाते हैं।
सार सब्द की महिमां गाते हैं, सुरति में साहिब दे जाते हैं।
सोये जीवों के भाग जगाते हैं, अमरपुर धाम ले जाते हैं।। गीता का भेद –

१४ ये भेद वे नाम जी देते हैं, अंधे बहरों के देख देख वे रोते हैं।
बिन पारस सुरति कब कोई पार हुआ, ये भेद वे नाम जी देते हैं।
जो सतगुरू पूर्ण पाते हैं, पल छिन में मोक्ष पा जाते हैं।। गीता का भेद –

गीता का भेद सभी जग को, बतला दिया बंसुरी वाले ने।
त्रिलोकि बनाने वाले ने, और बना कर मिटाने वाले ने।।

–0–

भजन ७५ (भाग १)

पायो जी मैने, पारस नाम धन पायो – २
सार नाम साहिबन सूं पायो, निजघर फेरा पायो।

१ दात अमोलक साहिब जी दीनी, पल में आन जगायो। पायो जी मैने –

२ साहिबन सब्द सुरति निरति स्वांसा संग, त्रिलोकि पार करायो। पायो जी मैने –

३ हर पल सुरति स्वांस सब्द संग, सतगुरू महिमां गायो। पायो जी मैने –

४ अमृत नाम की सुरंति देकर, मन माया से आन छुड़ायो। पायो जी मैने –

५ प्रेम भाव सुरति सूं जागा, अंग संग साहिबन पायो। पायो जी मैने –

६ जन्म मरन के भेद को जाना, निज में निज को पायो। पायो जी मैने –

७ आठ अट्ा की अट्ारी मज़ारा, देखा साहिबन प्यारा। पायो जी मैने –

८ सब्द सुरति सूं दास आन जगायो, जीवत मरना सिखायो। पायो जी मैने –

९ सार सब्द और सुरत नाम सूं, दास को अपना बनायो। पायो जी मैने –

१० निज स्वभाव में जीवत मरना, उद्गम से आन मिलायो। पायो जी मैने –

पायो जी मैने, पारस नाम धन पायो – २
सार नाम साहिबन सूं पायो, निजघर फेरा पायो।

—0—

भजन ७६ (भाग २)

पायो जी मैने, पारस नाम धन पायो – २
सार नाम साहिबन सूं पायो, निजघर फेरा पायो।

११ जीवन नैया ढूब रही थी, उन्हींने पार लगायो। पायो जी मैने –

१२ हर पल आप के दर्शन पाऊँ, सुरति से निजघर पायो। पायो जी मैने –

१३ पारस सुरति की महिमां न्यारी, छे तन तजि निजघर पायो। पायो जी मैने –

१४ प्रेम प्याला जिन जिन पिया, सतगुरू संग सहायो। पायो जी मैने –

१५ प्रेम रोग की औषधि प्रेम है, जिन पिया तिन पायो। पायो जी मैने –

१६ तीजे तन से प्रेम प्रकटे, छे तन पार लगायो। पायो जी मैने –

१७ प्रेमी प्रेसी जब ईक हो गये, साहिबन आन समायो। पायो जी मैने –

१८ मीरां प्रेम में हुई दिवानी, मूल में जा समायो। पायो जी मैने –

१९ प्रेम भरोसा जिस में आया, पूर्ण मोक्ष पद को पायो। पायो जी मैने –

२० मीरां जब निज को भूली, उदगम में जा समायो। पायो जी मैने –
२१ मीरां जब निज को बिसरी, हंसा रूप निज पायो। पायो जी मैने –

पायो जी मैने, पारस नाम धन पायो – २
सार नाम साहिबन सूं पायो, निजघर फेरा पायो।

–0–

भजन – ७७ (भाग १)

बड़े साहिब जी संत प्यारे, बस तेरा ही है सहारा।
नैया का मेरे सतगुरू, बस तूं ही है किनारा।।

१ नर करता है भूलें हर दम, देता है मान सहारा।
अमर दात को ना पाता, सतगुरू सूं भेद सारा।
बिन पारस दात के प्यारे, नहीं दास का गुज़ारा।। बस तूं ही –

२ साहिबन कृपा करि है जिन पर, साधक अति है प्यारा।
उनके चरण कमलों से, बहती है सुरति धारा।
उनके हाथ सौंप दो मन को, सुरति का ले लो सहारा।। बस तूं ही –

३ वे नाम जो हैं कहते, साहिबन से आ रहा है।
कर्म धर्म से कुछ ना मिलता, चरण कमलों से बह रहा है।
सच्ची जो दात देते, बस तेरा ही है सहारा।। बस तूं ही –

४ चरणों में तेरे हर दम, सब्द स्वांसा ध्यान हमारा।
करो कबूल पुकार हमारी, बड़ी मेहरबानी तेरी।
बिना तेरी सुरति दाता, कैसे जागेगा नर प्यारा।। बस तूं ही –

५ जब से है जाना तुझको, तेरा प्यार मिल रहा है।
चरणों में शीष झुका कर, तेरा दास हो गया हूं।
तीन लोक में मन है राजा, नर इसी में बहता प्यारा।। बस तूं ही –

६ सतगुरू वियोग सहना, मछली बिन पानी से कम नहीं है।
सुरति में हर पल रहना, मरने से कम नहीं है।
प्रेम रोग औषधि पी कर, जाने नाते जग झूठे सारे।। बस तूं ही –

७ पारस सुरति की महिमां जानो, अमर जोत बन आये।
प्रेम प्याला मीरां से पिया, जब निजघर फेरा पायो।
बिन संग साहिब के प्यारो, नहीं दास का ग़ुज़ारा।। बस तूं ही –

बड़े साहिब जी संत प्यारे, बस तेरा ही है सहारा।
नैया का मेरे सतगुरू, बस तूं ही है किनारा।।

–0–

भजन – ७८ (भाग २)

बड़े साहिब जी संत प्यारे, बस तेरा ही है सहारा।
नैया का मेरे सतगुरू, बस तूं ही है किनारा।।

१ बड़े साहिब का प्यार जो पाया, सहज को पा गया हूं।
चरणों में सुरति देकर, सब कुछ ही खो गया हूं।
आठों पहर सुरति 'वे हूं' की, मन मान की छूटी धारा।। बस तूं ही –

२ साहिब जी ने आन जगाया, सुरति जहाज में दे बिठाया।
सुरति में रहना मुझको आया, पारस सब्द सूं पार लगाया।
सुरति में रहकर महिमां गाकर, आशा तृष्णा से किया किनारा।। बस तूं ही –

३ स्वाति बूंद सूं जग गया पपीहा, उसे निष्ठावान बनाया।
पतंगा प्रेमी बन कर आया, मन की ज्योति जलाया।
मन मान दियो बहाये, मूल सब्द ही मोक्ष द्वारा।। बस तूं ही –

४ करते हैं भूलें हर दम, मन से ये मान वाले।
मूल नाम ही है जगाता, दुख दर्द सहने वालो।
मूल नाम साहिबन सूं आया, बस इसका ले लो सहारा।। बस तूं ही –

५ पूर्ण से पूर्ण होता, सतगुरू का काम सारा।
मन माया में सुरति रमना, आशा तृष्णा का खेल है सारा।
सतगुरू कृपा सूं बात बनती, श्रद्धा का काम है सारा।। बस तूं ही –

६ अंदर बाहर से ईक होना है, सहज से सहज प्यारो।
श्रद्धा विश्वास केवल लाते, आंखों से अश्विन प्यारो।
सच्ची प्यास जो जगाये, बस तेरा ही है द्वारा।। बस तूं ही –

७ कर्म वचन से सुरति आगे, प्रेम भाव सुरति प्यारे।
सुरति का काम है सारा, भव पार करा दे प्यारे।
स्वांस स्वांस में सुरति तेरी, सुरति निरति सूं पार हो प्यारे।। बस तूं ही –

बड़े साहिब जी संत प्यारे, बस तेरा ही है सहारा।
नैया का मेरे सतगुरू, बस तूं ही है किनारा।।

—0—

भजन – ७६ (भाग १)

अपना वतन

१ 'तेरे अंदर' लाल रत्न हैं।
२ 'खो बैठा तूं' अपना वतन है।
३ 'पूछ संत से' कहां अपना वतन है।
४ 'तीन लोक' में कहीं ना अपना वतन है।
५ 'तीन लोक' केवल काल वतन है।
६ यह 'मन माया' का खेल वतन है।
७ यह 'सोयों का' केवल वतन है।
८ 'आने जाने' का बंधन वतन है।
६ 'मरने जीने' का खेल वतन है।
१० 'दुख सुख' का खेल वतन है।
११ 'मेरे तेरे' का भेद वतन है।
१२ 'ऊँच नीच' का भेद वतन है।
१३ 'कर्म काण्ड' का भेद वतन है।
१४ 'जात पात' का भेद वतन है।
१५ 'आँसू लाने' का भेद वतन है।
१६ 'आज है और कल नहीं' का भेद वतन है।
१७ 'मन की तरंग' का भेद वतन है।
१८ 'निज की ना पहचान' का भेद वतन है।
१६ 'क्या खाओ और क्या ना खाओ' का भेद वतन है।
२० 'माटि में मिल जाने' का भेद वतन है।
२१ 'उड़ती माटि' का भेद वतन है।
२२ 'सार सुरति का ना पाना' भेद वतन है।
२३ 'सतगुरू की ना पहचान' का भेद वतन है।
२४ 'पूर्ण मोक्ष ना पाना' भेद वतन है।

'तेरे अंदर' लाल रत्न हैं।
'खो बैठा तूं' अपना वतन है।

भजन – ८० (भाग २)

अपना वतन

'तेरे अंदर' लाल रत्न हैं।
'खो बैठा तूं' अपना वतन है।

२५ 'सत्त का जीवन में ना पाना' भेद वतन है।
२६ 'निज बिन कुछ ना दिखाई दे' का भेद वतन है।
२७ 'झूठ का कारोबार' भेद वतन है।
२८ 'झूठी पूजा' भेद वतन है।
२६ 'झूठ की उन्नति भेद वतन है।
३० 'तीन लोक हैं' का भेद वतन है।
३१ 'निज को ऊँचा जानना' भेद वतन है।
३२ 'बिन लाभ के काम ना आना' भेद वतन है।
३३ 'झूठे आँसूं बहाना' भेद वतन है।
३४ 'झूठ को सच्च कर देना' भेद वतन है।
३५ 'प्यारो ये कैसा' भेद वतन है।
३६ आओ 'बैठ के सोचो ये कैसा' भेद वतन है।
३७ 'मीठे सपने लेना' भेद वतन है।
३८ 'धोखा देना और पाना' भेद वतन है।
३६ 'लूट कसूट' का भेद वतन है।
४० 'सर्दी गर्मी' का भेद वतन है।
४१ 'जागना और सोना' भेद वतन है।
४२ 'मैं जग में क्युं आया' का भेद वतन है।
४३ 'कहां से आया कहां है जाना' का भेद वतन है।
४४ 'आत्म का निज घर कहां' भेद वतन है।
४५ 'जो नहीं आता और नहीं जाता' का भेद वतन है।

'तेरे अंदर' लाल रत्न हैं।
'खो बैठा तूं' अपना वतन है।

–0–

साहिब जी महिमां

भजन ८१ – (भाग १)

तेरे तेरे तेरे साहिबा, हम सब तेरे होए आं ।
असी तेरे तेरे तेरे, असी तेरे साहिबा तेरे।
असी तेरे तेरे तेरे ,साहिबा तेरे होए आं ।

१ अमर जोत का दिया जला कर, हम सब तेरे होए आं।
कोई नहीं आत्म बांधने वाला, आत्म निज को बांधा है।
तेरे तेरे तेरे साहिबा, हम सब तेरे होए आं। असी तेरे –२

२ अमर लोक सूं हंसा सब आए, अमर लोक के वासी हैं।
कभी ना मरने वाले हंसा, सतपुरूष के प्यारे हैं।
तीन लोक में खेलने आए, जहां मन ही राजा है। असी तेरे–२

३ हम सब सतपुरूष के अंश प्यारे, उनकी आंख के तारे हैं ।
वे पल पल पुकार हैं देते, माया कारण सुन नहीं पाते हैं।
हम ही कचरा नहीं जलाते, निज का मान ही कारण है। असी तेरे – २

४ मोह माया का बंधन धोखा, आशा तृष्णा ने घेरा है।
यह सब कर्मों का बंधन, आत्म ने निज को बांधा है।
तज दे कल और कल में जाना, टूटे मान का बंधन रे। असी तेरे – २

५ तूं तो आत्म जोत अमर है, सत्त प्रेम अजर अमर है।
विरह विराग की डौर ना थामी , पग पग कर्मों का बंधन है।
छूटा संग साहिब का प्यारा, निज की भूल ना जानी रे। असी तेरे–२

६ वे नाम निज की पहचान कराई, आत्म प्रेम प्यास जगाई ।
अमृत सब्द की दात को पाकर, सत्त की जोत जगाई है।
सत्त ही प्रेम भक्ति का अंग है,प्रेम जागे तो सतगुरू संग है। असी तेरे–२

७ क्यूं आया कहां से आया, सब सतगुरू सूं जाना है।
हम सब निज घर के हंसा प्यारे, बेगमपुर ठिकाना है।
सत्त सब्द को पाकर प्यारे, हंसा रूप को पाना है। असी तेरे – २

८ पूर्ण मोक्ष का अमृत पाकर, निज को पहचाना है।
सुरति में सत्त सब्द को ध्या कर, मन का मान मिटाना है।
तेरे नूर रूप को पाकर साहिबा, हम सब तेरे होए हैं। असी तेरे– २

६ चांद चकौर सी प्रीत हमारी, पल को भी ना टूटे ताड़ी ।
खाली कर दिया आत्म मन सूं, हंसा रूप को धारा है।
तूं ही अंदर–तूं ही बाहिरा, किया तूने ठिकाना है। असी तेरे – २

१० प्रेम गली अति सांकरी प्यारो, मन मान का प्रवेश तहां नांहि।
आशा तृष्णा का संग छूटा, लागी सतगुरू सूं ताड़ी है।
सच्चे सतगुरू सूं नाता जोड़ा, चरणों में अमृत साग़र है। असी तेरे – २

११ इस पल में रहना सीखा, सुरति सूं अमृत पाया है।
निःअक्षर सब्द में साहिबन वासा, दूजा मन आन समाया है।
सुरति में हर पल जाकर, सत्त का दीप जलाया है। असी तेरे – २

१२ बहु बंधन में जीव को बांध्या, काल का खेल ये सारा है।
कहें वे नाम किस को जगाऊं, पंच तत्व सूं मन ने घेरा है।
ऐसा इक जीव ना पाया, जिसे केवल सच को पाना है। असी तेरे – २

१३ सतगुरू को दण्डवत करके, कौटि कौटि करो प्रणामा है।
कीट ना जाने बृहंगा को, सतगुरू करे आप समाना है।
जोत में जोत मिल जावे, सच्ची प्रीत में वासा है। असी तेरे – २

१४ तेरे चरणों की धूली पाकर, हम सब तेरे होए हैं ।
आशा तृष्णा को झाडू देकर, हम सब तेरे होए हैं।
तेरी जोत में जोत मिला कर साहिब जी, तेरे प्रेम में खोए हैं। असी तेरे – २

तेरे तेरे तेरे साहिबा, हम सब तेरे होए आं ।
असी तेरे तेरे तेरे, असी तेरे साहिबा तेरे।
असी तेरे तेरे तेरे ,साहिबा तेरे होए आं ।।

–0–

साहिब जी महिमां

भजन ८२ – (भाग २)

तेरे तेरे तेरे साहिबा, हम सब तेरे होए आं ।
असी तेरे तेरे तेरे, असी तेरे साहिबा तेरे।
असी तेरे तेरे तेरे ,साहिबा तेरे होए आं ।

१ अमर जोत का दिया जला कर, हम सब तेरे होए आं।
कोई नहीं आत्म बांधने वाला, आत्म निज को बांधा है।
असी तेरे तेरे तेरे ,साहिबा तेरे होए आं। असी तेरे – २

१ तेरे प्यार को पाकर साहिबा, हम सब तेरे होए आं।
विरह की आग़ में मान जलाकर, हम सब तेरे होए आं।
बिन तेरे कोई ना अपना, इस भेद को जाना है। असी तेरे – २

२ मोह का मान सब्द सूं जला कर, हम सब प्रेमी होए आं।
सतगुरू रूप में तुझको पाकर, सतगुरू प्रेमी होए आं।
अमृत सब्द सूं मान जलाकर, हम सब हंसा होए आं। असी तेरे – २

३ सतगुरू चरणी में सर रख के, हम सब तेरे होए आं।
निःअक्षर दात सूं भक्ति उपझी, प्रेम की जोत जलाई है।
प्रेम उपझे सुरति जागी, सत्त में सत्त में समाया है। असी तेरे – २

४ कोई कोई प्यारा भेद को जाने, अमर लोक ठिकाना है।
सत्त सब्द का सिमरन करके, सुरति सूं निज को जाना है।
मोह मान जलाकर, हम सब साहिबा तेरे होए आं। असी तेरे – २

५ तेरे चरणा दी धूली पाकर, हम सब तेरे होए आं।
आशा तृष्णा को झाडू देकर, हम सब तेरे होए आं।
तेरे नूर रूप को पाकर, हम सब हंसा होए आं। असी तेरे – २

६ प्रेम को शुद्ध बनाकर, हम सब सुरति सूं जागे हैं।
मान माया का भेद मिटा कर, सतगुरू जी तेरे होए आं।
विरह प्रेम की जोत जलाकर, हम सब तेरे होए आं। असी तेरे – २

७ बिन ईक कुछ और जग नांहि, सच्चे प्रेम को जाना है।
बिन तेरे जीव जागे ना, सच्चे भेद को जाना है।
हर ईक में साहिब को जानो, सत्त की जोत जलाना है। असी तेरे – २

तेरे तेरे तेरे साहिबा, हम सब तेरे होए आं ।
असी तेरे तेरे तेरे, असी तेरे साहिबा तेरे।
असी तेरे तेरे तेरे ,साहिबा तेरे होए आं ।

–0–

सहज भक्ति त्रिस्वा

सत्त सुरति संदेश – भजन ८३ (भाग १)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

१ मन की तरंग जान लो, तो हो गया भजन – २

२ मन माया संग छोड़ दो, तो हो गया भजन – २

३ आये कहां से और जाना कहां जान लो, तो हो गया भजन – २

४ निज का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २

५ निज घर का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २

६ कल और कल में जाना छुट गया, तो हो गया भजन – २

७ कल और आज मिट गया, तो हो गया भजन – २

८ इस पल में रहना आ गया, तो हो गया भजन – २

९ सार सब्द में साहिबन वास जान लो, तो हो गया भजन – २

१० सतगुरू सूं सब्द को पा लिया, तो हो गया भजन – २

११ सुरति निरति का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २

१२ मेरे तेरे का भेद मिट गया, तो हो गया भजन – २

१३ विचारों का जाल छोड़ दो, तो हो गया भजन – २

१४ विचारों के प्रति जाग गये, तो हो गया भजन – २

१५ विचारों के तल पे आ गये, तो हो गया भजन – २

१६ रिश्ते नातों का भेद मिट गया, तो हो गया भजन – २

१७ नहर बनने का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २

१८ नहर छोड़ दरिया बनने का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २

१९ दुनियां बनना और मिटना जान लो, तो हो गया भजन – २

२० साहिब प्यारा एक हमारा जान लो, तो हो गया भजन – २

२१ जीने मरने का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २

२२ जग में आने का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २

२३ सत्त की ओर चल पड़े, तो हो गया भजन – २

२४ सच्चे पिता को जान लिया, तो हो गया भजन – २

२५ आत्म बंधन का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा

सत्त सुरति संदेश – भजन ८४ (भाग २)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

२६ तृष्णाओं के प्रति जाग गया, तो हो गया भजन – २

२७ कर्मों के प्रति जाग गया, तो हो गया भजन – २

२८ उत्तेजना के प्रति जाग गया, तो हो गया भजन – २

२९ भावों को शुद्ध कर लिया, तो हो गया भजन – २

३० कष्ट सुख का प्रतीक मान लो, तो हो गया भजन – २

३१ सुख दुख में सम जब हो गये, तो हो गया भजन – २

३२ सब को साहिबन अंश जान लो, तो हो गया भजन – २

३३ अंतर–जगत के प्रति जाग गया, तो हो गया भजन – २

३४ विचारों से खाली हो गया, तो हो गया भजन – २

३५ समग्र जाग्रता आ गई, तो हो गया भजन – २

३६ सतगुरू के प्रति श्रद्धा जग गई, तो हो गया भजन – २

३७ कर्म करते सहज रहो, तो हो गया भजन – २

३८ कर्मण खेल जान लो, तो हो गया भजन – २

३९ सुरति सिमरन बना रहे, तो हो गया भजन – २

४० अभी इस क्षण में जीना आ गया, तो हो गया भजन – २

४१ सब ओर से तुझे देख रहा जान लो, तो हो गया भजन – २

४२ कल और कल में जाना छोड़ दो, तो हो गया भजन – २

४३ चारों ओर साहिब विस्तार जान लो, तो हो गया भजन – २

४४ चारों ओर आत्म विस्तार जान लो, तो हो गया भजन – २

४५ अशांति के प्रति जग गया, तो हो गया भजन – २

४६ शांत सहज सम हो गया, तो हो गया भजन – २

४७ विषयों में रहना छोड़ दो, तो हो गया भजन – २

४८ साहिब के प्रति जाग्रता आ गई, तो हो गया भजन – २

४९ निज के प्रति जाग्रता आ गई, तो हो गया भजन – २

५० काम मन का उद्‌ग़म है जान लो, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा

सत्त सुरति संदेश – भजन ८५ (भाग ३)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

५१ 'मै और मेरी' मिट गई, तो हो गया भजन – २

५२ रिश्ते नातों को भेद मिट गया, तो हो गया भजन – २

५३ सहज अवस्था को पा लिया, तो हो गया भजन – २

५४ सुरति से ध्यान में जाना आ गया, तो हो गया भजन – २

५५ निज स्वभाव में जीना आ गया, तो हो गया भजन – २

५६ 'मै' और 'मेरी' का भ्रम मिट गया, तो हो गया भजन – २

५७ मोह माया को जान लो, तो हो गया भजन – २

५८ लोभ लार को छोड़ दो, तो हो गया भजन – २

५९ भेद भाव मिट गया, तो हो गया भजन – २

६० दुख सुख का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २

६१ झुकना जब आ गया, तो हो गया भजन – २

६२ अंदर से मान मिट गया, तो हो गया भजन – २

६३ सभी को ईक जान लो, तो हो गया भजन – २

६४ दुख सुख ईक सम जान लो, तो हो गया भजन – २

६५ सपने लेना तज दिया, तो हो गया भजन – २

६६ जग को सपना जान लो, तो हो गया भजन – २

६७ काम क्रोध मद् लोभ का ज्ञान हो गया, तो हो गया भजन – २

६८ ईष्या द्वैष जब मिट गया, तो हो गया भजन – २

६९ सत्त झूठ में भेद मिट गया, तो हो गया भजन – २

७० आत्म की जोत जग गई, तो हो गया भजन – २

७१ तज कुसंग सत्संग पा लिया, तो हो गया भजन – २

७२ सार नाम है राम रत्न जान लो, तो हो गया भजन – २

७३ आषा तृष्णा से मुक्त हो गये, तो हो गया भजन – २

७४ जीने का राज़ जान लो, तो हो गया भजन – २

७५ सृष्टि् का राज़ जान लो, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा

सत्त सुरति संदेश – भजन ८६ (भाग ४)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

७६ तेरा साहिब स्वांस में जान लो, तो हो गया भजन – २

७७ तेरा साहिब हर घट अंदर जान लो, तो हो गया भजन – २

७८ स्वांसा का उपर चलना पा लिया, तो हो गया भजन – २

७६ बाहर से भीतर चल पड़ो, तो हो गया भजन – २

८० मौत का डर खो गया, तो हो गया भजन – २

८१ अंदर से खाली हो गये, तो हो गया भजन – २

८२ अंदर जाने का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २

८३ अंदर बाहर ईक हो गये, तो हो गया भजन – २

८४ सुन्न को भीतर धार लो, तो हो गया भजन – २

८५ कंचन माटि ईक समान दिखे, तो हो गया भजन – २

८६ सुरति में सब्द रम गया, तो हो गया भजन – २

८७ हर पल सुरति में रहो, तो हो गया भजन – २

८८ बिन सतगुरू कोई पार नांहि जान लो, तो हो गया भजन – २

८६ सतपुरूष का पता मिल गया, तो हो गया भजन – २

६० सतगुरू को सब सौंप दो, तो हो गया भजन – २

६१ सतगुरू पे भरोसा आ गया, तो हो गया भजन – २

६२ अंदर में साहिब बसा लिये, तो हो गया भजन – २

६३ सतपुरूष का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २

६४ सुरति में सत्त को धार लो, तो हो गया भजन – २

६५ गुरू सूं पारस सुरति मिल गई, तो हो गया भजन – २

६६ सुरति ने मन मिटा दिया, तो हो गया भजन – २

६७ अश्विन धारा बहना ना रूके, तो हो गया भजन – २

६८ तुरियातीत अवस्था पा गया, तो हो गया भजन – २

६६ तुरियातीत में रमना आ गया, तो हो गया भजन – २

१०० जीते जी मरना आ गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सत्त सुरति संदेश – भजन ८७ (भाग ५)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

१०१ उल्टा जाप करना आ गया, तो हो गया भजन – २

१०२ सर्गुण निर्गुण साहिब भेद जान लिया, तो हो गया भजन – २

१०३ अष्टम चक्र में गुरू पा लिया, तो हो गया भजन – २

१०४ सतगुरू को जग में पा लिया, तो हो गया भजन – २

१०५ सतगुरू छवि जो नैनन बसे, तो हो गया भजन – २

१०६ सतगुरू पे सब लुटा दिया, तो हो गया भजन – २

१०७ प्रेम वैराग अंदर जग गया, तो हो गया भजन – २

१०८ कामना रोग है जान लो, तो हो गया भजन – २

१०९ मीरा ने सब लुटा दिया, तो हो गया भजन – २

११० जग का भाव तज दिया, तो हो गया भजन – २

१११ अंदर से तार जुड़ गई, तो हो गया भजन – २

११२ जोत से जोत जग गई, तो हो गया भजन – २

११३ मुझ में 'मै' खो गई, तो हो गया भजन – २

११४ वैराग़ की धारा जग गई, तो हो गया भजन – २

११५ प्रेम प्रीत में जब खो गई, तो हो गया भजन – २

११६ बच्चे समान पुकार करना आ गया, तो हो गया भजन – २

११७ पुकार में विरह आ गई, तो हो गया भजन – २

११८ कुछ भी बुरा ना दिखे, तो हो गया भजन – २

११९ सतगुरू सब्द बाण खा लिया, तो हो गया भजन – २

१२० जा सहजै में साहिबन मिले, तो हो गया भजन – २

१२१ जब साधक सहज कहावे, तो हो गया भजन – २

१२२ भीतर से सहजता प्रकटे, तो हो गया भजन – २

१२३ मस्ती का पता मिल गया, तो हो गया भजन – २

१२४ मरने का डर मिट गया, तो हो गया भजन – २

१२५ भक़्ति मे निडर हो गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सत्त सुरति संदेश – भजन ८८ (भाग ६)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

१२६ आज का अभी कर लो, तो हो गया भजन – २

१२७ विरह पुकार करनी जान लो, तो हो गया भजन – २

१२८ तूं बस तूं अंदर बस गई, तो हो गया भजन – २

१२६ बच्चों के आगे झुकना आ गया, तो हो गया भजन – २

१३० सतगुरू महिमां गाना आ गया, तो हो गया भजन – २

१३१ निज तन को भूल जाओ, तो हो गया भजन – २

१३२ जग में ईक सम रहना आ गया, तो हो गया भजन – २

१३३ मीन पपील विहंगम का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २

१३४ सब्द और शब्द का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २

१३५ जग कर्मों का खेल जान लो, तो हो गया भजन – २

१३६ कांटों में रहना आ गया, तो हो गया भजन – २

१३७ बिन स्वांसा जीना आ गया, तो हो गया भजन – २

१३८ रातों में हसना आ गया, तो हो गया भजन – २

१३६ प्रेम विरह में रोना आ गया, तो हो गया भजन – २

१४० स्वांसा में साहिब नाम रम गया, तो हो गया भजन – २

१४१ रैन दिन स्वांसा आरती को जान लो, तो हो गया भजन – २

१४२ सब्द सुरति स्वांस समाऐ, तो हो गया भजन – २

१४३ बस्ती और मरघट का भेद पा लो, तो हो गया भजन – २

१४४ सतगुरू में श्रद्धा जग गई, तो हो गया भजन – २

१४५ पूर्ण समर्पण जब हो गया, तो हो गया भजन – २

१४६ ज्ञान ध्यान प्रेम जब ईक हों, तो हो गया भजन – २

१४७ सहजता का बीज सतपुरूष जान लो, तो हो गया भजन – २

१४८ सहज सरतला मूलतः साहिब जान लो, तो हो गया भजन – २

१४६ सुमिरन योग लय योग जान लो, तो हो गया भजन – २

१५० दौ भाग सहज योग जान लो, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा

सत्त सुरति संदेश – भजन ८६ (भाग ७)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

१५१ हर पल को आखिरी जान लो, तो हो गया भजन – २

१५२ अनहद की मीठी धुण पार कर लो, तो हो गया भजन – २

१५३ अनहद ढोल जान लो, तो हो गया भजन – २

१५४ आत्म पर मन का ताला खुले, तो हो गया भजन – २

१५५ औंकार ताला आत्म जान ले, तो हो गया भजन – २

१५६ औंकार ताले की चाभी सतगुरू सूं पा लो, तो हो गया भजन – २

१५७ सार सब्द से औंकार ताला खुले, तो हो गया भजन – २

१५८ औंकार नहीं सतपुरूष उद्गम तुम्हारा जान लो, तो हो गया भजन – २

१५६ विचारों में विचरणा छोड़ दो, तो हो गया भजन – २

१६० निज बिन कुछ ना दिखाई दे, तो भी ना हो सके भजन – २

१६१ कामनाओं का रस जान लो, तो हो गया भजन – २

१६२ जीत हार का विचार ना रहा, तो हो गया भजन – २

१६३ सोच विचार संशय मूल जान लो, तो हो गया भजन – २

१६४ कामना अधूरी रहे, तो भी ना हो सके भजन – २

१६५ कामना पूरी हो गई, तो भी ना हो सके भजन – २

१६६ लोभ लालसा ना मिटी, तो भी ना हो सके भजन – २

१६७ संवेदना जब तक ना जगे, तो भी ना हो सके भजन – २

१६८ अर्जुन की युद्ध में जीत हुई, तो भी ना हो सके भजन – २

१६६ अर्जुन की आस पूरी ना हुई, तो भी ना हो सके भजन – २

१७० सिकंदर की आस पूरी हो गई, तो भी ना हो सके भजन – २

१७१ पोरस की आस मर गई, तो भी ना हो सके भजन – २

१७२ सिकंदर की हो गई जीत, तो भी ना हो सके भजन – २

१७३ पोरस की हो गई हार, तो भी ना हो सके भजन – २

१७४ ईच्छाऐं जो पूरी ना हुई, तो भी ना हो सके भजन – २

१७५ ईच्छाओं की बाधा पर क्रौध आया, तो भी ना हो सके भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा

सत्त सुरति संदेश – भजन ६० (भाग ८)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

१७६ हार से मन बुझ गया, तो भी ना हो सके भजन – २
१७७ हार से द्वैष बढ़ गया, तो भी ना हो सके भजन – २
१७८ जीत से मान जग गया, तो भी ना हो सके भजन – २
१७६ मान से मति मर गई, तो भी ना हो सके भजन – २
१८० हार जीत जो ना मिटी, तो भी ना हो सके भजन – २
१८१ कशमकश ना जो मिटी, तो भी ना हो सके भजन – २
१८२ मन माया जो ना मिटी, तो भी ना हो सके भजन – २
१८३ स्वार्थ सिद्धि ना मिटी, तो भी ना हो सके भजन – २
१८४ तन तज निज को जान लो, तो हो गया भजन – २
१८५ जब सब प्रेमी दिखें, तो हो गया भजन – २
१८६ स्वभाव में जीना आ गया, तो हो गया भजन – २
१८७ काम क्रौध से मुक्त हो गये, तो हो गया भजन – २
१८८ तेरी मेरी खो गई, तो हो गया भजन – २
१८६ मुख और मन तन अंग जान लो, तो हो गया भजन – २
१६० देव भक्ति सूं स्वर्ग मिले ये जान लो, तो हो गया भजन – २
१६१ निरंकार भक्ति सूं सुन्न लोक मिले ये जान लो, तो हो गया भजन – २
१६२ जग भक्ति सूं मन तरंग ना मिटे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
१६३ स्वर्ग सुन्न अल्प मुक्ति जान लो, तो हो गया भजन – २
१६४ मुक्ति सूं आवागमन ना मिटे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
१६५ मुख मन भक्ति सूं मोक्ष ना मिले ये जान लो, तो हो गया भजन – २
१६६ पूर्ण सतगुरू शरणी ही मोक्ष मिले ये जान लो, तो हो गया भजन – २
१६७ तन दुखों का मूल जान लो, तो हो गया भजन – २
१६८ तूं तन मन नांहि ये जान लो, तो हो गया भजन – २
१६६ हर पल में उसको देख लो, तो हो गया भजन – २
२०० प्रेम पुकार करना सीख लो, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा

सत्त सुरति संदेश – भजन ६१ (भाग ६)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

२०१ अपनी शक्ति का प्रयोग आ गया, तो हो गया भजन – २

२०२ बुद्धि का प्रयोग आ गया, तो हो गया भजन – २

२०३ हर हाल में जीना आ गया, तो हो गया भजन – २

२०४ प्राणों का संग छूट गया, तो हो गया भजन – २

२०५ कुछ भी बुरा जग ना दिखे, तो हो गया भजन – २

२०६ ईक बिन कुछ ना दिखे, तो हो गया भजन – २

२०७ साहिब ईक प्यारा जान लो, तो हो गया भजन – २

२०८ कुछ करना शेष ना रहा, तो हो गया भजन – २

२०९ प्रेम लगन लग गई, तो हो गया भजन – २

२१० मूल नाम का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २

२११ तज कुसंग सतनाम भजा, तो हो गया भजन – २

२१२ ईन्द्रियों का बंधन जान लो, तो हो गया भजन – २

२१३ कामनाओं का रस जान लो, तो हो गया भजन – २

२१४ मृत्यु का भय मिट गया, तो हो गया भजन – २

२१५ निष्काम समाधि लग गई, तो हो गया भजन – २

२१६ तन माटि समान जान लो, तो हो गया भजन – २

२१७ ईस तन का ख़ाक होना जान लो, तो हो गया भजन – २

२१८ दोनों का संग खो गया, तो हो गया भजन – २

२१९ सतगुरू चरणों में खोना आ गया, तो हो गया भजन – २

२२० साहिबन सब मूल जान लो, तो हो गया भजन – २

२२१ कीचड़ में खिलना आ गयो, तो हो गया भजन – २

२२२ सब ओर प्रेम छा गयो, तो हो गया भजन – २

२२३ अंदर प्रेम जोत जग गई, तो हो गया भजन – २

२२४ श्रद्धा भक्ति से प्रेम प्रकटे, तो हो गया भजन – २

२२५ हरि से आगे साहिबन नाम पा लो, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सत्त सुरति संदेश – भजन ६२ (भाग १०)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २
२२६ आत्म कर्मण रहित जान लो, तो हो गया भजन – २
२२७ आत्म को मन से छुड़ा लिया, तो हो गया भजन – २
२२८ आत्म रूप जब हो गये, तो हो गया भजन – २
२२६ पूर्ण आत्मिक होना आ गया, तो हो गया भजन – २
२३० सतगुरू शरणी मूल सब्द मिले जान लो, तो हो गया भजन – २
२३१ सुरत सब्द में जब समा गये, तो हो गया भजन – २
२३२ 'मै' का मान तज दिया, तो हो गया भजन – २
२३३ सुरत सब्द में सतगुरू वास जान लो, तो हो गया भजन – २
२३४ सतगुरू में साहिबन वास जान लो, तो हो गया भजन – २
२३५ सुरत कमल में जाना आ गया, तो हो गया भजन – २
२३६ सब्द सुरति खुमारी जान लो, तो हो गया भजन – २
२३७ ईंगला पिंगला का राज़ पा लिया, तो हो गया भजन – २
२३८ सुश्मिन खोलने का राज़ जान लो, तो हो गया भजन – २
२३६ सुश्मिन सम करना आ गया, तो हो गया भजन – २
२४० स्वांसा को सम कर दिया, तो हो गया भजन – २
२४१ स्वांसा में सब्द बस गया, तो हो गया भजन – २
२४२ सुरति निरति स्वांसा में लीन जान लो, तो हो गया भजन – २
२४३ सुरति निरति मिल आत्म किया, तो हो गया भजन – २
२४४ सुरत कमल में गुरू पा लिया, तो हो गया भजन – २
२४५ सुरत कमल में सतगुरू संग पा लिया, तो हो गया भजन – २
२४६ सुरति से गुरू के हो गये, तो हो गया भजन – २
२४७ पारस सुरति का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २
२४८ स्वांसा में सिमरन करना आ गया, तो हो गया भजन – २
२४६ निरति को स्वांसा में डालना आ गया, तो हो गया भजन – २
२५० निरति ही चेतन प्राण है ये जान लो, तो हो गया भजन – २
आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सत्त सुरति संदेश – भजन ६३ (भाग ११)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २
२५१ निरति ही जीवन मूल है ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२५२ योगी यति भी विदेह दात पा ले, तो हो गया भजन – २
२५३ स्वांसा संग सब्द सिमरन करना आ गया, तो हो गया भजन – २
२५४ सब्द ही निरति सुरति मेल करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२५५ निरति सुरति के मेल से आत्म बने ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२५६ मूल सब्द ही आत्मिक करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२५७ बिन आत्मिक हुऐ कोई ना तरे ये जाल लो, तो हो गया भजन – २
२५८ निरति ही सत्त सुरति चेतन ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२५९ सातों सुरति मिल मूल सुरति बने ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२६० मूल सुरति ही भव पार करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२६१ मूल सुरति ही सुरत कमल ले चले ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२६२ मूल सुरति ही सतगुरू दरस करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२६३ मूल सुरति ही आत्म हंसा करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२६४ मूल सुरति सतगुरू संग सतलोक जाये ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२६५ सतगुरू कृपा सूं मूल सुरति बने ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२६६ बिन सतगुरू मेहर कोई ना तरे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२६७ सतगुरू कृपा से ही साधक तरे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२६८ सतगुरू ही तारणहार हैं ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२६९ सतगुरू ही मन माया से मुक्त करें ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२७० बिन सतगुरू माया तजि ना जाये ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२७१ सतगुरू दरस ही सहज करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२७२ बिन सतगुरू जीव कबहु ना तरे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२७३ सतगुरू भक्ति सहज मार्ग है ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२७४ जग तज सतगुरू सुरति चित्त लाई, तो हो गया भजन – २
२७५ सतगुरू सुरति मोक्ष पथ ले जाई, तो हो गया भजन – २
आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सत्त सुरति संदेश – भजन ६४ (भाग १२)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

२७६ सतगुरू भक्ति सूं आत्म हंसा बने ये जान लो, तो हो गया भजन – २
२७७ सतगुरू संग साधक निजघर अमरपुर जाई, तो हो गया भजन – २
२७८ सुरति ही स्मृति जान लो, तो हो गया भजन – २
२७६ निज को भूल जाओ, तो हो गया भजन – २
२८० मृत्यु से मुक्त होने का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
२८१ उड़ती हुई माटि को जान लो, तो हो गया भजन – २
२८२ तन का ख़ाक में मिलना जान लो, तो हो गया भजन – २
२८३ अंदर में पौचा लगाना आ गया, तो हो गया भजन – २
२८४ अंदर निर्मल हो गया, तो हो गया भजन – २
२८५ सतगुरू सतपुरूष जान लो, तो हो गया भजन – २
२८६ जो साहिब हैं वोहि 'मैं' हूं जान लो, तो हो गया भजन – २
२८७ बूंद में सिंधु समा गया, तो हो गया भजन – २
२८८ सतगुरू में ईक मिक हो गये, तो हो गया भजन – २
२८६ साहिबन नाम चौथा राम जान लो, तो हो गया भजन – २
२६० सतगुरू दयाल तो साहिब दयाल जान लो, तो हो गया भजन – २
२६१ तीनों मिल त्रिधारा बने, तो हो गया भजन – २
२६२ झील समान शांत हो गये, तो हो गया भजन – २
२६३ रूप खो जाये अरूप प्रकटाऐ, तो हो गया भजन – २
२६४ सतगुरू जाये साहिबन प्रकटाऐ, तो हो गया भजन – २
२६५ सतगुरू का जाना और साहिबन आना हो, तो हो गया भजन – २
२६६ साहिबन रूप सभी को जान लो, तो हो गया भजन – २
२६७ निर्लम्भ राम को जान लो, तो हो गया भजन – २
२६८ छेः तन से पार होना आ गया, तो हो गया भजन – २
२६६ जब हंस रूप पा लिया, तो हो गया भजन – २
३०० हर हंसा संग ७१ पीढ़ी तरे जान लो, तो हो गया भजन – २
३०१ सत में सत समा गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

—0—

भजन ९५ (भाग १)

साहिब जी महिमां

तेरे तेरे तेरे साहिबा, हम सब तेरे होए आं ।
असी तेरे तेरे तेरे, असी तेरे साहिबा तेरे।
असी तेरे तेरे तेरे ,साहिबा तेरे होए आं ।

१ अमर जोत का दिया जला कर, हम सब तेरे होए आं।
कोई नहीं आत्म बांधने वाला, आत्म निज को बांधा है।
तेरे तेरे तेरे साहिबा, हम सब तेरे होए आं।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

२ अमर लोक सूं हंसा सब आए, अमर लोक के वासी हैं।
कभी ना मरने वाले हंसा, सतपुरूष के प्यारे हैं।
तीन लोक में खेलने आए, जहां मन ही राजा है।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

३ हम सब सतपुरूष के अंश प्यारे, उनकी आंख के तारे हैं ।
वे पल पल पुकार हैं देते, माया कारण सुन नहीं पाते हैं।
हम ही कचरा नहीं जलाते, निज का मान ही कारण है।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

४ मोह माया का बंधन धोखा, आशा तृष्णा ने घेरा है।
यह सब कर्मों का बंधन, आत्म ने निज को बांधा है।
तज दे कल और कल में जाना, टूटे मान का बंधन रे ।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

५ तूं तो आत्म जोत अमर है, सत्त प्रेम अजर अमर है।
विरह विराग की डौर ना थामी , पग पग कर्मो का बंधन है।
छूटा संग साहिब का प्यारा, निज की भूल ना जानी रे।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

६ वे नाम निज की पहचान कराई, आत्म प्रेम प्यास जगाई ।
अमृत सब्द की दात को पाकर, सत्त की जोत जगाई है।
सत्त ही प्रेम भक्ति का अंग है,प्रेम जागे तो सतगुरू संग है।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

७ क्यूं आया कहां से आया, सब सतगुरू सूं जाना है।
हम सब निज घर के हंसा प्यारे, बेगमपुर ठिकाना है।
सत्त सब्द को पाकर प्यारे, हंसा रूप को पाना है।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

८ पूर्ण मोक्ष का अमृत पाकर, निज को पहचाना है।
सुरति में सत्त सब्द को ध्या कर, मन का मान मिटाना है।
तेरे नूर रूप को पाकर साहिबा, हम सब तेरे होए हैं।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

६ चांद चकौर सी प्रीत हमारी, पल को भी ना टूटे ताड़ी ।
खाली कर दिया आत्म मन सूं, हंसा रूप को धारा है।
तूं ही अंदर–तूं ही बाहिरा, किया तूने ठिकाना है।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

१० प्रेम गली अति सांकरी प्यारो, मन मान का प्रवेश तहां नांहि।
आशा तृष्णा का संग छूटा, लागी सतगुरू सूं ताड़ी है।
सच्चे सतगुरू सूं नाता जोड़ा, चरणों में अमृत सागर है।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

११ इस पल में रहना सीखा, सुरति सूं अमृत पाया है।
निःअक्षर सब्द में साहिबन वासा, दूजा मन आन समाया है।
सुरति में हर पल जाकर, सत्त का दीप जलाया है।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

१२ बहु बंधन में जीव को बांध्या, काल का खेल ये सारा है।
कहें वे नाम किस को जगाऊं, पंच तत्व सूं मन ने घेरा है।
ऐसा इक जीव ना पाया, जिसे केवल सच को पाना है।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

१३ सतगुरू को दण्डवत करके, कौटि कौटि करो प्रणामा है।
कीट ना जाने बृहंगा को, सतगुरू करे आप समाना है।
जोत में जोत मिल जावे, सच्ची प्रीत में वासा है।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

१४ तेरे चरणों की धूली पाकर, हम सब तेरे होए हैं ।
आशा तृष्णा को झाड़ू देकर, हम सब तेरे होए हैं।
तेरी जोत में जोत मिला कर साहिब जी, तेरे प्रेम में खोए हैं।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

तेरे तेरे तेरे साहिबा, हम सब तेरे होए आं ।
असी तेरे तेरे तेरे, असी तेरे साहिबा तेरे।
असी तेरे तेरे तेरे ,साहिबा तेरे होए आं ।।

–0–

भजन ६६ (भजन २)

साहिब जी महिमां

तेरे तेरे तेरे साहिबा, हम सब तेरे होए आं ।
असी तेरे तेरे तेरे, असी तेरे साहिबा तेरे।
असी तेरे तेरे तेरे ,साहिबा तेरे होए आं – २

१ तेरे प्यार को पाकर साहिबा, हम सब तेरे होए आं।
विरह की आग़ में मान जलाकर, हम सब तेरे होए आं।
बिन तेरे कोई ना अपना, इस भेद को जाना है।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

२ मोह का मान सब्द सूं जला कर, हम सब प्रेमी होए आं।
सतगुरू रूप में तुझको पाकर, सतगुरू प्रेमी होए आं।
अमृत सब्द सूं मान जलाकर, हम सब हंसा होए आं।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

३ सतगुरू चरणी में सर रख के, हम सब तेरे होए आं।
निःअक्षर दात सूं भक्ति उपझी, प्रेम की जोत जलाई है।
प्रेम उपझे सुरति जागी, सत्त में सत्त में समाया है।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

४ कोई कोई प्यारा भेद को जाने, अमर लोक ठिकाना है।
सत्त सब्द का सिमरन करके, सुरति सूं निज को जाना है।
मोह मान जलाकर, हम सब साहिबा तेरे होए आं।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

५ तेरे चरणा दी धूली पाकर, हम सब तेरे होए आं।
आशा तृष्णा को झाड़ू देकर, हम सब तेरे होए आं।
तेरे नूर रूप को पाकर, हम सब हंसा होए आं।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

६ प्रेम को शुद्ध बनाकर, हम सब सुरति सूं जागे हैं।
मान माया का भेद मिटा कर, सतगुरू जी तेरे होए आं।
विरह प्रेम की जोत जलाकर, हम सब तेरे होए आं।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

७ बिन ईक कुछ और जग नांहि, सच्चे प्रेम को जाना है।
बिन तेरे जीव जागे ना, सच्चे भेद को जाना है।
हर ईक में साहिब को जानो, सत्त की जोत जलाना है।
असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे साहिबा तेरे – २

तेरे तेरे तेरे साहिबा, हम सब तेरे होए आं ।
असी तेरे तेरे तेरे, असी तेरे साहिबा तेरे।
असी तेरे तेरे तेरे ,साहिबा तेरे होए आं – 2

–0–

भजन ६७ (भाग १)

निरालम्भ राम (चौथे राम/सतपुरूष) महिमां

जय राम जय राम जय राम जी, जय राम जय राम जय राम जी
सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी, सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी

1 तीन लोक से प्यारे राम, निरालम्भ राम जी – 2 – जय राम –
2 चौथे लोक के प्यारे राम, न्यारे राम जी – 2 – जय राम –
3 सत्तलोक के प्यारे राम, न्यारे राम जी – 2 – जय राम –
4 तीन लोक से आगे रहते, अमरपुर में जी – 2 – जय राम –
5 अमर लोक हंसों का प्यारा, न्यारा लोक रे – 2 – जय राम –
6 सत्त लोक के वासी सारे, पड़े काल वस जी – 2 – जय राम –
7 हर दम गाओ प्यारा नाम, प्यारा नाम जी – 2 – जय राम –
8 तेरे अन्दर हर दम रहते, प्यारे राम जी – 2 – जय राम –
9 स्वांस स्वांस में वासा राम जी, यह तुम जानो रे – 2 – जय राम –
10 तुम भी बोलो मैं भी बोलूं, सारे बोलो रे – 2 – जय राम –
11 बिन सत्तगुरू ना जानो राम जी, ना पाओ राम रे–2 – जय राम –
12 सत्तगुरू भक्ति कर लो प्यारे, पा लो राम रे – 2 – जय राम –
13 पाओ राम गाओ राम, सुनो राम रे – 2 – जय राम –
14 अँग–सँग तेरे राम हैं रहते, जानो राम रे – 2 – जय राम –
15 रोम रोम साहिब ज्योत सरूपी, ऐसे राम रे – 2 – जय राम –
16 बिन मोल बिन तोले मिलते, सब कोई जाने रे – 2 – जय राम –

जय राम जय राम जय राम जी, जय राम जय राम जय राम जी
सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी, सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी

–0–

भजन ९८ (भाग २)

निरालम्भ राम (चौथे राम/सतपुरूष) महिमां

जय राम जय राम जय राम जी, जय राम जय राम जय राम जी
सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी, सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी

17 हँसा साहिब का अंश प्यारे, पाओ राम रे – 2 – जय राम –
18 मन की आँख सूं देख ना पाओ, सुरति में आँख रे – 2 – जय राम –
19 सुरति सूं निरति जब मिलती, मूल सुरति बनती रे – 2 – जय राम –
20 मैं भी बोलूं तुम भी बोलो, सारे बोलो रे – 2 – जय राम –
21 आशा–तृष्णा को तज डालो, पल में पा लो रे – 2 – जय राम –
22 हर कर्म फूल समान बनाओ, पल में पाओ रे – 2 – जय राम –
23 प्रेम को जानो प्रेम ही पाओ, प्रीत ही बांटो रे – 2 – जय राम –
24 सत्तपुरूष हैं प्रीत की ज्योति, यह तुम जानो रे – 2 – जय राम –
25 सार सब्द की दात को पा लो, उसी में राम रे – 2 – जय राम –
26 अंतिम क्षण में याद राम जब, हँसा हो जाओ रे – 2 – जय राम –
27 आशा–तृष्णा खो जाएं जब, राम समाते रे – 2 – जय राम
–
28 मन माया का संग गया तो, राम रह जाते रे – 2 – जय राम –
29 उपर राम नीचे राम, निरलम्भ राम जी – 2 – जय राम
–
30 मन कारण सुरति नहीं जगती, बिन सुरति नहीं राम – 2 – जय राम –
31 सुरति निरति स्वांस में डालो, संग में सार नाम – 2 – जय राम –
32 बिन सुरति आत्म नहीं जगती, बिन आत्म नहीं राम – 2 – जय राम –
33 आठों पहर सुरति में रहना, संग में प्यारा नाम – 2 – जय राम –
29 राम भक्ति बिन नहीं निस्तारा, यह तुम जानो रे – 2 – जय राम –
30 सतगुरू भक्ति बिन नहीं पारा, यह तुम जानो रे – 2 – जय राम –

जय राम जय राम जय राम जी, जय राम जय राम जय राम जी
सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी, सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी

—0—

संत–वाणी

मानव की अंतिम या़त्रा का भेद

अंत काल जब जीव का आवे
यथा कर्म वह देही पावे

1 गुद्धा द्वार से जीव निकासा
नर्क योनि में पावे वासा
2 नाभी–द्वार से जीव जब जाए
जलचर–योनि में वासा पाए
3 मुख–द्वार से जीव जब जाए
अन्न–खानी में प्रकटाए
4 श्वांसा–द्वार से जीव जब जाए
अण्डज–खानी में प्रकटाए
5 नेत्र–द्वार से जीव जब जाए
मक्खी–मच्छर आदि तन को पाए
6 श्रवण–द्वार से जीव जब जाए
प्रेत योनि में तुरन्त वासा पाए
7 दशम–द्वार से जीव जब जाए
स्वर्ग–लौक में वासा पाए
राजा हो के जग में आए
8 ग्यारवें–द्वार से जीव जब जाता
परम–पुरूष के लौक समाता
बहुरी ना ईस भव–सागर आता
फिर नांहि गर्भ में समाता ।।

''कहे कबीर सुनो भई साधो :–
ग्यारवें–द्वार का भेद सुरत–सब्द में रहता
बिन पूर्ण–संत कोई भेद ना पाता
पूर्ण–संत जो साहिब को पाता
वही सार–सब्द का भेद है पाता
सार–सब्द सत्तपुरूष का वासा''

—0—

आरती

निरलम्भ राम जी की

जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी – २
निरलम्भ राम निरलम्भ राम निरलम्भ राम जी – जय राम जय राम जय राम जी

१ चौथे लोक के प्यारे राम, न्यारे राम जी – २ जय राम
२ सांचा नाम सांचा नाम, तेरो नाम जी – २ जय राम
३ तुझ में राम मुझ में राम, सब में राम जी – २ जय राम
४ तेरो नाम तेरो नाम, प्यारा नाम जी – २ जय राम
५ उपर राम नीचे राम, निरलम्भ राम जी – २ जय राम
६ मेरे राम तेरे राम, सब के राम जी – २ जय राम
७ गाओ राम सुनो राम, चौथे राम जी – २ जय राम
८ मन कारण सुरति नहीं जगती, बिन सुरति नहीं राम – २ जय राम
६ निजधाम के प्यारे राम, न्यारे राम जी – २ जय राम
१० सुरति निरति स्वांस में डालो, संग में सार नाम – २ जय राम
११ सतगुरू सूं भेद को जानो, स्वांस स्वांस में नाम – २ जय राम
१२ बिन सुरति आत्म नहीं जगती, बिन आत्म नहीं राम – २ जय राम
१३ आठों पहर सुरति में रहना, संग में प्यारा नाम – २ जय राम

जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी – २

–0–